आर.एन.आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-21/2012-14
मुद्रण तिथि दिनांक 5 से 8 दिसम्बर, 2014
वर्ष : 72 ★ अंक : 12 ★ मूल्य : 10 रु.
डाक प्रेषण तिथि 10 दिसम्बर, 2014 ★ पौष, 2071

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

रात्रिभोजन-विरति अंक (2)

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
जयपुर

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'॥

संसार की समस्त सम्पदा और भोग
के साधन भी मनुष्य की इच्छा
पूरी नहीं कर सकते हैं।

- आचार्य हस्ती

आवश्यकता जीवन को चलाने
के लिए जरूरी है, पर इच्छा जीवन
को बिगाड़ने वाली है,
इच्छाओं पर नियंत्रण आवश्यक है।

- आचार्य हीरा

जिनका जीवन बोलता है,
उनको बोलने की उतनी जरूरत भी नहीं है।

- उपाध्याय मान

With Best Compliments :
Rajeev Nita Daga Foundation Houston

Jai Guru Hasti

Jai Guru Heera

Jai Guru Maan

।। जैनं जयति शासनम् ।।

दान से पुण्य होता है, पर संयम से कर्मों की निर्जरा होती है।
दान हृदय की सरलता है, पर संयम हृदय की शुद्धता है ।।

DP Exports is leading Indian firm specializing in import, export and manufacture of diamonds and jewellery. We offer a wide range of rough diamonds, along with a specialization in the field of manufacturing polished diamonds and jewellery.

timeless jewels
unmatched quality
flawless craftsmanship

Dharamchand Paraschand Exports

1301, Panchratna, Opera House, Mumbai - 400 004. India.
t: +91 22 2363 0320 / +91 22 4018 5000
f: +91 22 2363 1982 email : dpe90@hotmail.com

।। महावीराया नमः ।।

जय गुरु हीरा | जय गुरु हस्ती | जय गुरु मान

जिस दिन श्रद्धा जग जायेगी, अनमोल-दुर्लभ परम अंग रूप मानव जीवन को समर्पण करते देर नहीं लगेगी। श्रद्धा है तो प्राण अर्पण भारी नहीं लगेगा।

-आचार्य श्री हीरा

With Best Compliments From :

S. .D. GEMS & SURBHI DIAMONDS

Prakash Chand Daga

Virendra Kumar Daga (Sonu Daga)

FC51, Bharal-Diamond Bourse, Bandra Kurla Complex,
Bandra (E), MUMBAI-400051 (MAH.)
Ph. : (O) 022-23684091, 23666799 (R) 022-28724429
Fax : 022-40042015 Mobile : 098200-30872
E-mail : sdgems@hotmail.com

Jai Guru Heera | *Jai Guru Hasti* | *Jai Guru Maan*

व्यसनी से उसी प्रकार बचना चाहिये, जिस प्रकार छूत के रोगी से बचा जाता है।

- आचार्य श्री हीरा

With Best Compliments from :

Basant Jain & Associates, Chartered Accountants
BKJ & Associates, Chartered Accountants
BKJ Consulting Private Limited
Megha Properties Private Limited
Ambition Properties Private Limited

601, Dalamal Chambers, New Marine Lines, Mumbai-400020

बसंत के. जैन

अध्यक्ष : श्री जैन रत्न युवक परिषद, मुम्बई
ट्रस्टी : गजेन्द्र निधि ट्रस्ट

Tel. : (O) 22018793, 22018794 (R) 28810702

जिनवाणी *हिन्दी-मासिक*

卐 **संरक्षक**
अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन-2636763

卐 **संस्थापक**
श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 **प्रकाशक**
विनयचन्द डागा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997, फैक्स-0141-2570753

卐 **प्रधान सम्पादक**
प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन
सामायिक-स्वाध्याय भवन, प्लॉट नं. 2,
नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज.)
फोन : 0291-2626279
E-mail : jinvani@yahoo.co.in
E-mail : editorjinvani@gmail.com
Website: www.jinvani.net

卐 **सह-सम्पादक**
नौरतन मेहता, जोधपुर
डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

卐 **भारत सरकार द्वारा प्रदत्त**
रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.-RJ/JPC/M-21/2012-14
ISSN 2249-2011

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

तो नाणदंसणसमग्गो,
हिय निस्सेसाए सव्वजीवाणं।
तेसिं विमोक्खणट्ठाए,
भासई मुणिवरो विगयमोहो।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, 8.3

फिर पूर्णज्ञान-दर्शन से युत,
सब जीवों के श्रेयस्कामी।
उनके विमोक्षार्थ मुनि वीतमोह ने,
धर्म कहा आत्मारामी।।

दिसम्बर, 2014
वीर निर्वाण संवत्, 2541
पौष, 2071

वर्ष 72 अंक 12

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 250 रु.
आजीवन देश में : 1000 रु.
आजीवन विदेश में : 12500 रु.
स्तम्भ सदस्यता : 21000/-
संरक्षक सदस्यता : 11000/-
साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/-
एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क/साभार नकद राशि 'जिनवाणी' बैंक खाता संख्या SBBJ 51026632986
IFSC No. SBBJ 0010843 में जमा कराकर जमापर्ची (काउन्टर-प्रति) अथवा ड्राफ्ट भेजने का पता
'जिनवाणी', दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.)
फोन नं.0141-2575997, 2571163, फैक्स : 0141-2570753, E-mail:sgpmandal@yahoo.in

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-2562929

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

रात्रिभोजन-विरति अंक (2)

विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	जैनदर्शन की व्यापकता	-डॉ. धर्मचन्द जैन	7
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-संकलित	11
	धर्म-शिक्षा	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	12
प्रवचन-	व्यसन-मुक्त हो युवा-पीढ़ी	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	13
	युवकों का संघ बने आदर्श संघ	-महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.	17
संगोष्ठी-आलेख-	योगशास्त्र के आलोक में रात्रिभोजन-विरति	-डॉ. धर्मचन्द जैन	20
	रात्रिभोजन-त्याग का आर्थिक-सामाजिक पक्ष	-डॉ. दिलीप धींग	31
	रात्रिभोजन-त्याग में प्रायोगिक समस्याएँ और समाधान	-डॉ. श्वेता जैन	42
	रात्रिभोजन-विरति के विविध सन्दर्भ	-डॉ. पवनकुमार जैन	49
	रात्रिभोजन-त्याग में युवाओं की समस्याएँ	-श्री पदमचन्द गाँधी	60
बाल-स्तम्भ -	बैटिंग करो धुँआधार... रनों की बौछार	-श्री राकेश कोचर	76
चिन्तन-	स्वाध्यायियों की गुणवत्ता का प्रश्न	-श्री राजेन्द्र कुम्भट	72
कविता/गीत-	सत्य की साधना	-डॉ. रमेश 'मयंक'	41
	मान गुरुवर प्यारा है	-श्री धर्मचन्द जैन	59
	वीर प्रभु की अंतिम वाणी (5)	-मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा.	67
पाठक-प्रतिक्रिया-	रात्रिभोजन-विरति अंक पर साधक प्रतिक्रिया	-सुश्री मीना बोहरा	48
	विद्वत्प्रतिक्रिया	-डॉ. कमलचन्द सोगानी	121
प्रेरक-प्रसंग-	रात्रि में दूध नहीं पीया पण्डित नेहरू ने	-श्री देवेन्द्रनाथ मोदी	66
साहित्य-समीक्षा-	नूतन साहित्य	-डॉ. श्वेता जैन	80
युवक परिषद्-	आओ स्वाध्याय करें प्रतियोगिता	-संकलित	81
दीक्षा-कार्ड-	गंगापुरसिटी एवं हुबली में आयोज्य दीक्षा-महोत्सव	-संकलित	84
स्वाध्याय संघ-	पर्युषण रिपोर्ट-2014 का शेषांश	-संकलित	86
परिणाम-	स्वास्थ्य आलेख- अक्टूबर-2014	-संकलित	92
समाचार विविधा-	समाचार-संकलन	-संकलित	93
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार	-संकलित	122

सम्पादकीय

जैन दर्शन की व्यापकता

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

जैन धर्म आत्मवादी धर्म है, इसमें आत्मा के अस्तित्व को स्वीकार किया गया है। यहाँ एक आत्मा की अवधारणा नहीं है, अपितु अनन्त या अनेक आत्माएँ स्वीकार की गई हैं। आत्मा कहो या जीव, दोनों का जैन दर्शन में एक ही तात्पर्य है। आचारांग सूत्र के प्रथम अध्ययन में कहा गया है- **"से आयावादी, लोगावादी, कम्मावादी, किरियावादी।"** अर्थात् जो आत्मा को स्वीकार करता है, वह लोक को भी स्वीकार करता है, क्योंकि आत्मा अपने कृत कर्मों का फल-भोग लोक में ही करती है। लोक के अस्तित्व को अस्वीकार करने पर जीव के जन्म-मरण एवं पुनर्जन्म की स्थिति सम्भव नहीं है। आत्मा और लोक- इन दोनों को स्वीकार करने के साथ कर्म को भी स्वीकार करना होगा, क्योंकि अपने-अपने कर्मों के अनुसार ही जीवों को सुख-दुःख की एवं जन्म-मरण की प्राप्ति होती है। कर्म का होना शुभ-अशुभ क्रिया पर निर्भर करता है। इसलिए जो कर्मवादी है, उसे क्रिया को स्वीकार करने के कारण क्रियावाद को भी मानना होगा। जैनदर्शन इन सभी के समन्वित रूप को स्वीकार करता है, किन्तु किसी के ऐकान्तिक स्वरूप को नहीं। अतः जैनदर्शन आत्मवादी भी है, लोकवादी भी है, कर्मवादी भी है, क्रियावादी भी है। यह जैन दर्शन का एक वैशिष्ट्य है कि इसमें जीव और अजीव दोनों प्रकार के द्रव्यों को स्वीकार किया गया है। यही नहीं, इसमें लोक को भी स्वीकार किया गया है तो अलोक को भी। अलोक की अवधारणा किसी अन्य भारतीय दर्शन में दिखाई नहीं देती। जैनदर्शन में धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, पुद्गलास्तिकाय, जीवास्तिकाय और कालद्रव्य- इन षड्द्रव्यों से युक्त को लोक कहा गया है। अलोक में मात्र आकाश अर्थात् रिक्त स्थान होता है। अन्य धर्मास्तिकाय आदि द्रव्य वहाँ उपलब्ध नहीं होते हैं।

जैनदर्शन में तत्त्वमीमांसा का बड़ा व्यावहारिक एवं सूक्ष्म विवेचन हुआ है। यह दर्शन व्यवहार-सत्य एवं परमार्थ-सत्य दोनों का समावेश करके चलता है। सम्पूर्ण विश्व में जितने भी पदार्थ उपलब्ध हैं वे या तो सजीव हैं या निर्जीव। जैनदर्शन इन पदार्थों को जीव और अजीव इन दो विभागों में रखता है। जीव का लक्षण चैतन्य है, जो ज्ञान-दर्शनमय होता है। इसलिए ज्ञान एवं दर्शन को भी जीव का लक्षण कहा जाता है। उत्तराध्ययन सूत्र में कुछ विस्तार से ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप एवं वीर्य को भी जीव का लक्षण कहा गया है। किन्तु सिद्धों की अपेक्षा से चारित्र एवं तप का समावेश करने की आवश्यकता नहीं है। संक्षेप में कहें तो उपयोग जीव का लक्षण है, जो ज्ञानोपयोग एवं दर्शनोपयोग के भेद से दो प्रकार का स्वीकार किया गया है। जीव

का यह लक्षण संसारी एवं सिद्ध दोनों प्रकार के जीवों में घटित होता है। इस लक्षण के अनुसार पृथ्वीकायिक, अप्कायिक, तेजस्कायिक, वायुकायिक, वनस्पतिकायिक एवं छोटे से लेकर बड़े सभी त्रस प्राणियों में ज्ञान एवं दर्शन गुण की सत्ता है। इन गुणों से जो रहित होता है, वह अजीव है। अजीव के जो धर्मास्तिकाय आदि पाँच प्रकार कहे गए हैं, उनमें धर्मास्तिकाय एवं अधर्मास्तिकाय ये दो ऐसे विशिष्ट द्रव्य हैं जिनका कथन किसी अन्य दर्शन में सम्प्राप्त नहीं होता है। ये दोनों द्रव्य सम्पूर्ण लोक में व्याप्त हैं तथा क्रमशः जीव तथा पुद्गल की गति एवं स्थिति में उदासीन रूप से निमित्त कारण होते हैं। जैनदर्शन में पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु एवं आकाश- इनकी पाँच भूतों के रूप में अवधारणा नहीं है। इनमें से प्रथम चार सजीव होने पर पृथ्वीकायिक, अप्कायिक, तेजस्कायिक एवं वायुकायिक जीवों के रूप में मान्य हैं तथा निर्जीव होने पर इन्हें पुद्गल के रूप में अजीव की श्रेणि में रखा जाता है। आकाश एवं काल द्रव्य न्याय-वैशेषिक, सांख्य-योग, मीमांसा आदि दर्शनों की भाँति जैन दर्शन में भी स्वीकृत हैं। किन्तु अन्य दर्शनों में शब्द को आकाश का गुण माना गया है, जबकि जैन दर्शन शब्द को पुद्गल द्रव्य मानता है तथा आकाश का गुण अन्य द्रव्यों को स्थान देना स्वीकार करता है। आकाश अनन्त है। वह व्यवहार की दृष्टि से लोकाकाश एवं अलोकाकाश के रूप में पहचाना जाता है। काल निश्चय एवं व्यवहार की दृष्टि से दो प्रकार का है। निश्चय काल कालाणुओं के रूप में समस्त लोक में व्याप्त है जबकि व्यवहार काल, जिसे अद्धाकाल भी कहा गया है, वह मनुष्य लोक के अढ़ाई द्वीप पर्यन्त स्वीकार किया गया है।

जैनदर्शन में बन्धन एवं मुक्ति की प्रक्रिया का वैज्ञानिक विवेचन हुआ है। संसारी जीव, ज्ञानावरण, दर्शनावरण आदि अष्टविध कर्मों से बन्धा हुआ है। इन समस्त कर्मों का क्षय होना ही मोक्ष है। इन कर्मों से मुक्ति के लिए आवश्यक है कि नये कर्मों का बन्ध नियन्त्रित हो तथा पूर्वबद्ध कर्मों का क्षय हो, इसके लिए जैन दर्शन में क्रमशः संवर एवं निर्जरा तत्त्वों का प्रतिपादन किया गया है। कर्मों का आगमन या आस्रव हमारे शुभ-अशुभ भावों के अनुसार होता रहता है तथा क्रोधादि कषायों की उपस्थिति में वे कर्म-पुद्गल आत्मप्रदेशों के साथ एक क्षेत्रावगाढ में स्थित कार्मण शरीर में बन्ध को प्राप्त होते रहते हैं। शुभ भावों का होना 'पुण्य' एवं अशुभ भावों का होना 'पाप' है। यह शुभता एवं अशुभता आपेक्षिक होती है। आत्मा की शुद्ध ज्ञान दशा को प्राप्त करने के लिए अशुभ को त्यागकर शुभ से शुद्ध की ओर बढ़ना होता है। अर्थात् पाप या सावद्य प्रवृत्ति का त्यागकर पुण्य या शुभ प्रवृत्ति की ओर बढ़ते हुए स्वभाव में आने रूप धर्म का आचरण करने से ही मुक्ति की ओर बढ़ा जा सकता है।

जैनदर्शन में कर्म-सिद्धान्त का जितना सूक्ष्म विवेचन हुआ है, उसका शतांश भी अन्य दर्शनों में प्राप्त नहीं होता है। यहाँ प्रज्ञापनासूत्र, भगवतीसूत्र, उत्तराध्ययन सूत्र आदि श्वेताम्बर आगमों के साथ दिगम्बर परम्परा में षट्खण्डागम, कसायपाहुड, महाबन्ध आदि ग्रन्थ एवं

धवला, जय-धवला, महा-धवला आदि टीकाओं में कर्म-सिद्धान्त का विस्तृत विवेचन हुआ है। जैनदर्शन में कर्मसिद्धान्त को लेकर अनेक स्वतन्त्र कृतियों का निर्माण हुआ है, उनमें कम्मपयडि, कर्मग्रन्थ, पंचसंग्रह, गोम्मटसार-कर्मकाण्ड आदि ग्रन्थ उल्लेखनीय हैं। कर्मग्रन्थों का निर्माण श्वेताम्बर एवं दिगम्बर दोनों परम्पराओं में हुआ है। कर्मसिद्धान्त के विवेचन के साथ जीवस्थान, गुणस्थान, मार्गणास्थान आदि का निरूपण एवं विभिन्न द्वारों के साथ गति-आगति, लघुदण्डक, महादण्डक आदि स्तोकों का निर्माण जैन कर्म-सिद्धान्त को समझने में सहायक है।

जैनदर्शन की एक प्रमुख देन अनेकान्तवाद, नयवाद एवं स्याद्वाद का प्रतिपादन है। सत्य को विभिन्न दृष्टिकोणों से जानना नयवाद है। वस्तु अनन्त धर्मात्मक है, यह स्वीकार करना अनेकान्तवाद है। अनेकान्तवाद के अन्तर्गत वस्तु में विरोधी धर्मों के विरोध का परिहार कर उनमें समन्वय स्थापित किया गया है, इसलिए अनेकान्तवाद का सिद्धान्त जहाँ वस्तु की विभिन्न दृष्टिकोणों की विवेचना में सहायक है वहाँ वह नयवाद के माध्यम से परिवार एवं समाज में सामञ्जस्य स्थापित करने में सहायक है। अनेकान्त दृष्टि के कारण आग्रह-बुद्धि नहीं रहती और सत्य का प्रतिपादन किसी अपेक्षा विशेष से 'स्यात्' शब्द के द्वारा किया जाता है। स्यात् का अर्थ शायद या संभवतः नहीं है, अपितु यह किसी अपेक्षा या दृष्टिकोण विशेष से कथन करने के लिए एक निपात शब्द के रूप में प्रयुक्त किया जाता है।

जैनदर्शन का प्रमुख वैशिष्ट्य है कि इसमें राग-द्वेष आदि विचारों पर विजय प्राप्त करने के लिए वीतरागता अथवा समता का उपदेश दिया गया है। जैनधर्म में उन्हीं महान् आत्माओं को देव पद से सम्बोधित किया गया है, जो राग-द्वेष से रहित हैं। वे कनक-कामिनी की अभिलाषा एवं वरदान प्रदान करने की क्रिया से रहित होते हैं। उनमें अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त चारित्र, अनन्त वीर्य आदि गुण होते हैं। जैसा उन्होंने जाना है वैसे मार्ग का वे प्ररूपण करते हैं। उनके मार्ग का अनुसरण कर जो राग-द्वेष के विजय-पथ पर विभिन्न आवश्यक नियमों की पालना के साथ अग्रसर होते हैं, वे गुरु कहे गए हैं। उनके द्वारा उपदिष्ट सम्पूर्ण उपदेश का सार कषायों का उपशम अथवा क्षय है। दूसरे शब्दों में कहें तो वीतरागता की प्राप्ति ही जैनधर्म का लक्ष्य है। वीतरागता साधना भी है और साध्य भी। पाँच इन्द्रियों के विषयों के मनोज्ञ होने पर राग नहीं करना तथा अमनोज्ञ होने पर द्वेष नहीं करना वीतरागता की साधना है। इसे ही समता की साधना भी कहा जाता है। भगवद् गीता एवं धम्मपद आदि ग्रन्थों में भी समत्व का प्रतिपादन हुआ है। भगवद्गीता में समत्व को योग कहा गया है- **'समत्वं योग उच्यते।'** मनःशुद्धि एवं आत्मशुद्धि के लिए जैनदर्शन में विधिवत् साधना का निरूपण भी हुआ है। पंच महाव्रतों, पाँच समितियों एवं तीन गुप्तियों की महती साधना साधुओं के लिए निरूपित है तो श्रावक के लिए पाँच अणुव्रतों, तीन गुणव्रतों एवं चार शिक्षाव्रतों के साथ

प्रतिमाओं की आराधना को भी स्थान दिया गया है। साधु-साध्वी किं वा श्रमण-श्रमणियों की जो कठोर आचार-संहिता जैनधर्म में निरूपित है उसी का परिणाम है कि आज भी जैन साधु-साध्वी आचार की दृष्टि से अन्य परम्पराओं की तुलना में अधिक आचारनिष्ठ हैं।

जैनदर्शन में प्रतिपादित आचार को अहिंसा, संयम एवं तप के रूप में धर्म कहा गया है। सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन एवं सम्यक् चारित्र के अन्तर्गत भी चारित्र के रूप में आचार की प्रतिष्ठा है। आचार को प्राणवान सम्यक् दर्शन एवं सम्यक् ज्ञान बनाते हैं। सम्यक् दर्शन चेतना की आन्तरिक निर्मल दृष्टि है, जो दर्शन मोहनीय कर्म एवं अनन्तानुबन्धी क्रोध-मान-माया-लोभ के क्षय, उपशम या क्षयोपशम से प्राप्त होती है। इस दृष्टि से सम्पन्न व्यक्ति का ज्ञान सम्यक् ज्ञान होता है। सम्यक् ज्ञान आग्रह एवं पक्षपात से रहित होता है। सम्यग्ज्ञानी अहिंसा एवं संयम के आचरण के माध्यम से जितने कर्मों की निर्जरा कर सकता है, उतना अज्ञानी जीव करोड़ों वर्षों में भी नहीं कर पाता है। इसलिए साधना में सम्यक् दर्शन एवं सम्यक् ज्ञान का महत्त्व स्वीकार किया गया है। वेदान्त, सांख्य आदि दर्शन ज्ञान से ही मोक्ष का निरूपण करते हैं। क्रिया को सीधा मोक्ष का साधन नहीं मानते, किन्तु जैनदर्शन पूर्वबद्ध कर्मों की निर्जरा के लिए सम्यक् दर्शन एवं सम्यक् ज्ञानपूर्वक आचरण को महत्त्व देता है।

अहिंसा का जितना सूक्ष्म विवेचन जैनदर्शन करता है उतना अन्यत्र प्राप्त नहीं होता। यहाँ त्रसकायिक जीवों की रक्षा को ही नहीं, अपितु पृथ्वीकायिक आदि स्थावर जीवों के संरक्षण को भी महत्त्व दिया गया है। आचारांगसूत्र कहता है कि मनुष्य इस जीवन के लिए, प्रशंसा, मान-सम्मान, पूजा-प्रतिष्ठा, जन्म-मरण, पाप-मोचन, दुःख-प्रतिघात आदि हेतुओं से भी हिंसा करता है। सभी जीवों के प्रति आत्मवद् भाव के विकास का सूत्र जैन दर्शन में प्राप्त होता है। अहिंसा के साथ अपरिग्रह का सिद्धान्त जैनदर्शन में महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त है जो मनुष्य की आत्मा से भिन्न वस्तुओं पर होने वाली आसक्ति एवं उनके संग्रह पर चोट मारता है। आरम्भ एवं परिग्रह को दुःख का कारण माना गया है। कई बार परिग्रह के कारण भी हिंसा होती है। आचारांग सूत्र इसीलिए संकेत करता है- **परिग्गहाओ अप्पाणं अवसक्केज्जा**। श्रावक के लिए परिग्रह-परिमाण एवं उपभोग-परिभोग परिमाण व्रत का विधान इसीलिए किया गया है कि वह दुःख से रहित सुख का अनुभव कर सके। मन, वचन एवं काया की प्रवृत्तियों को वश में रखना संयम है, जो संयम से जीता है उसका जीवन सुखी एवं निश्चिन्त होता है।

इस प्रकार जैनदर्शन जीवन के विविध आयामों को छूता है तथा अनेक जिज्ञासाओं का शमन करता है, इसमें जिस प्रकार तत्त्वमीमांसा एवं आचार मीमांसा से समृद्ध विवेचन हुआ है उसी प्रकार पञ्चविध ज्ञानों के माध्यम से ज्ञानमीमांसा का भी विशिष्ट विश्लेषण समुपलब्ध होता है। ★

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

अच्चणं रयणं चेव, वंदणं पूयणं तहा।
इड्ढी-सक्कार-सम्माणं, मणसावि न पत्थए।।

-उत्तराध्ययनसूत्र, 35.18

अर्थ- अनगार अर्चना, रचना, वन्दन, पूजा, ऋद्धि, सत्कार एवं सम्मान की मन से भी इच्छा न करे।

विवेचन- जिनशासन में साधु-साध्वियों के आत्मोन्नयन के लिए अनेकविध दिग्बोधक वाक्य प्राप्त होते हैं। आचारांग, उत्तराध्ययन आदि आगमों में ऐसे वाक्यों की बहुतायत है। उत्तराध्ययनसूत्र के पैंतीसवें 'अनगार-मार्ग गति' नामक अध्ययन में अनगार के लिए अनेक मार्गदर्शक सूत्र हैं। प्रस्तुत गाथा में जो सूत्र दिया गया है वह मन के भटकाव को रोकने की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

जब कोई गृहस्थ जीवन का त्याग कर अनगार बनता है तो वह कनक, कामिनी एवं धन-सम्पत्ति को तो छोड़ देता है, किन्तु उसमें दूसरों से मान-सम्मान, पूजा-अर्चना आदि प्राप्त करने की आकांक्षा आसानी से नहीं छूटती है। साधु बनना उतना कठिन नहीं, जितना लौकेषणा एवं मान-सम्मान आदि की कामना को त्यागना कठिन है। आज दुनियाँ में अनेक प्रकार के साधु हैं, उनमें अधिकतर साधु तो कनक, कामिनी, धन-सम्पदा, भू-स्वामित्व आदि के चक्रव्यूह में भी फंसे हुए हैं। समाचार चैनलों एवं अखबारों में भी इस प्रकार की सूचनाएँ आती रहती हैं। तीर्थंकर महावीर ने सन्तों एवं साध्वियों के लिए जो आचार-संहिता प्रदान की है, उसका पालन करने वाले साधु इन विविध प्रकार के दोषों से बचे हुए हैं। किन्तु अर्चन-वन्दन, सम्मान-सत्कार प्राप्त करने की अभिलाषा विचित्र ढंग से मन की गहराई में अव्यक्त रूप से जड़ें जमाकर रहती है। इसलिए साधु में आचार-पालन के साथ यशःकामना एवं सत्कार-सम्मान की अभिलाषा बलवती होती जाती है। यह अभिलाषा साधक को प्रव्रज्या अथवा श्रमण जीवन के मूल लक्ष्य से भटका सकती है। इसलिए उत्तराध्ययन सूत्र में सावधान करते हुए कहा गया है कि अर्चना, रचना (चित्रादि के रूप में), वन्दन, पूजन, ऋद्धि, सत्कार, सम्मान की साधु-साध्वी मन से भी याचना अथवा अभिलाषा न करे। कुछ साधु-साध्वी अपनी अर्चना कराने, अपने पोस्टर एवं होर्डिंग लगवाने में, कुछ वन्दना एवं पूजा करवाने में, कुछ ऋद्धि प्राप्त करने एवं टोना-टोटका करने में, कुछ सत्कार-सम्मान को बढ़ाने की अभिलाषा में अटके हुए हैं। उन साधु-साध्वियों को यह गाथा सावधान करती है एवं प्रेरणा करती है कि साधु को इन सबकी अभिलाषा का मन से त्याग कर देना चाहिए। न चाहने पर भी ये प्राप्त हो जाएं एवं कोई आसक्ति न हो तो कोई हानि नहीं है।**-सम्पादक**

विचार-वारिधि

धर्म-शिक्षा

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

- जिन्हें उत्तम धर्म-श्रवण करने का सुअवसर मिला है, उन्हें दूसरों की देखादेखी पाप के पथ पर नहीं चलना चाहिए। उनके हृदय में दुर्बलता, कुशंका और कल्पित भीति (भय) नहीं होनी चाहिए। ऐसा सच्चा धर्मात्मा अपने उदाहरण से सैंकड़ों अप्रामाणिकों को प्रामाणिक बना सकता है और धर्म की प्रतिष्ठा में भी चार चाँद लगा सकता है।
- धर्म-शिक्षा को जीवन में रमाने के लिए काम-वासना को उपशान्त एवं नियन्त्रित करना, मोह की प्रबलता को दबाना और अमर्यादित लोभ का निग्रह करना आवश्यक है।
- जब आत्मा में सम्यग्ज्ञान की सहस्र-सहस्र किरणें फैलती हैं और उस आलोक से जीवन परिपूर्ण हो जाता है, तब काम, क्रोध और लोभ का सघन अन्धकार टिक ही नहीं सकता।
- मनुष्य के अन्तःकरण में व्याप्त सघन अन्धकार को जो विनष्ट कर विवेक का आलोक फैला देता है, वह 'गुरु' कहलाता है।
- जीवन-रथ को कुमार्ग से बचाकर सन्मार्ग पर चलाने के लिए और अभीष्ट लक्ष्य तक पहुँचाने के लिए योग्य गुरु की अनिवार्य आवश्यकता है।
- अनुकूल निमित्त मिलने पर जीवन बड़ी तेजी के साथ आध्यात्मिकता में बदल जाता है।
- जिस प्रकार खाने से ही भूख मिटती है, भोजन देखने या भोज्य-पदार्थों का नाम सुनने से नहीं; इसी प्रकार धर्म को जीवन में उतारने से, जीवन के समग्र व्यवहारों को धर्ममय बनाने से ही वास्तविक शान्ति प्राप्त हो सकती है।
- ज्ञानी पुरुष का पौद्गलिक पदार्थों के प्रति मोह नहीं होता है।
- जो लोग आहार के सम्बन्ध में असंयमी होते हैं, उत्तेजक भोजन करते हैं, उनके चित्त में काम-भोग की अभिलाषा तीव्र रहती है। वास्तव में आहार-विहार के साथ ब्रह्मचर्य का बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध है।
- मनुष्य के मन की निर्बलता जब उसे नीचे गिराने लगती है तब व्रत की शक्ति ही उसे बचाने में समर्थ होती है।
- व्रत अंगीकार नहीं करने वाला किसी भी समय गिर सकता है। उसका जीवन बिना पाल की तलाई जैसा है, किन्तु व्रती का जीवन उज्ज्वल होता है।

-'नमो पुरिससवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

प्रवचन

व्यसन-मुक्त हो युवा-पीढ़ी

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. द्वारा कोटा में 05 अक्टूबर, 2014 को फरमाए गए इस प्रवचन का आशुलेखन जिनवाणी के सह-सम्पादक श्री नौरतनजी मेहता द्वारा किया गया है। प्रवचन से प्रभावित होकर युवकों ने शेयर बाजार में सट्टा लगाने सहित सप्त कुव्यसन के त्याग किए। **-सम्पादक**

संसार के जीव मात्र के लिए मंगल, उत्तम, शरणदाता पंच परमेष्ठी भगवन्तों के चरणों में कोटि-कोटि वन्दन!

आज अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् का वार्षिक अधिवेशन है। संघ के नाम के पूर्व ''जैन रत्न युवक'' विशेषण लगा है। एक-एक शब्द का अर्थ करें तो पहला शब्द है 'जैन'। जैन अर्थात् स्वयं को जीतने के मार्ग पर चलने वाला। दूसरा शब्द है 'रत्न'। रत्न मूल्यवान होता है। वह श्रेष्ठता का सूचक है। जो जैन 'रत्न' है वह अपनी श्रेष्ठता लिए हुए है, धर्म की विशेषताओं को जीवन में, समाज में, प्रकट करके दिखाने वाला है। आज ऐसे युवारत्नों का सम्मेलन है।

आज आपकी वार्षिक आम-सभा है। मैं युवारत्न बन्धुओं को सबसे पहले ध्यान दिलाता हूँ कि अनेकानेक विषयों का ज्ञान रखने वाले, रिसर्च करने वाले, डिग्रियाँ प्राप्त करने वाले, खोज करने वाले जार्ज बर्नार्डशॉ ने अन्तिम समय में कहा था- ''मुझे मर कर फिर जन्म लेना पड़े तो मैं जैन के घर जन्म लेना चाहूँगा।'' क्या कारण है कि बर्नार्डशॉ ने जैन कुल में जन्म लेने का विचार व्यक्त किया? उसके चिन्तन में था कि जैन कुल में जन्म लेने से अनेकानेक दूषित प्रवृत्तियों से सहज में मुक्ति मिल जाती है। जैन धर्म का महल नीति की नींव पर खड़ा है। नीति क्या? व्यसन से दूर रहना, निर्व्यसनी जीवन जीना।

आचार्य भगवन्त (गुरु हस्ती) के शब्दों में 'व्यसनं विपत्तिः' अर्थात् प्रत्येक व्यसन विपति में डालने वाला है। व्यसन शरीर से, धन से, परिवार से, जीवन से अलग करता है। बहिनें प्रायः एक भजन गाती हैं, जिसमें एक शब्द आता है 'केसरिया'।

जैन होने का मतलब है- जीवन रूपी चदरिया को गुण रूपी केसरिया रंग से सराबोर करना। अभी योगेशमुनिजी ने जैन के लिए जिन तीन बातों का विवेचन किया है, वे तीन गुण हैं- आदर, आस्था और आज्ञापालन। जैन में इन तीन गुणों के साथ व्यसन त्याग की प्रेरणा

आपको प्राप्त होती रही है। आचार्य भगवन्त (गुरु हस्ती) जिन्हें भी गुरु मंत्र देते, उन्हें सप्त कुव्यसन त्याग के नियम करवाते। आज भी गुरु मंत्र में सप्त कुव्यसन त्याग की प्रेरणा प्रमुखता से रहती है, प्रत्याख्यान करवाए जाते हैं। जिनशासन में हर प्रवृत्ति में व्यसन को त्याज्य कहा है और व्यसन मुक्ति की सतत प्रेरणा की जाती है।

आप जैन हैं इसलिए अपना-अपना चिंतन करें। आज जुए का खुला प्रचलन भले ही कम दिखता हो, लेकिन शेयर बाजार के माध्यम से जुए में न जाने कितने लोग सम्मिलित हैं? हम तो सुनते हैं- कल तक जो बाजार में किंग कहलाते थे आज हाथ खड़े करके घर की चार दीवारी से बाहर निकलने की स्थिति में नहीं हैं।

मैं महाभारत काल की बात नहीं कह रहा हूँ। युधिष्ठिर ने भरे दरबार में द्रौपदी को दांव पर लगा दिया। पाँच पति होते हुए भी द्रौपदी को भरे दरबार में साड़ी खिंचवानी पड़ी।

हम सुदूर दक्षिण-प्रवास पश्चात् मारवाड़ आए तब अहमदाबाद होकर आए। वहाँ एक डॉक्टर की बात सुनी। वह डॉक्टर एक-एक ऑपरेशन का एक लाख-दो लाख रुपये लेता था और एक-एक दिन में आठ-दस ऑपरेशन करता था। उस डॉक्टर की कितनी कमाई होती होगी, आप अनुमान कर सकते हैं। डॉक्टर का बड़ा मकान था, बड़ा हॉस्पिटल था, अपार सम्पत्ति थी, लेकिन शेयर बाजर में लग कर वह डॉक्टर बर्बाद हो गया। उसने अपनी बेटी की शादी के लिए रकम रख छोड़ी थी, वह तो गई सो गई, पर अस्पताल बिक गया। अब ऑपरेशन कहाँ करे, वह भी कमाई जाती रही। डॉक्टर की ऐसी स्थिति क्यों हुई? अपार धन सम्पदा का स्वामी बर्बाद हो गया। ऐसे कई उदाहरण हैं। कहना यह है कि शेयर बाजार में लग कर अनेकानेक जिन्दगियाँ बर्बाद हुई हैं।

जैन समाज जब तक व्यसन से दूर था, उसका नाम देश-विदेश में सम्मान से लिया जाता था। जैन समाज के लोगों ने अपनी प्रज्ञा से देश-विदेश में यश-कीर्ति अर्जित की, पर जिन-जिन लोगों ने शेयर बाजार में अर्थात् जुए के व्यसन में पड़कर जो कुछ था, सब गवां दिया। आज भी नौजवान इस व्यसन से पूरी तरह मुक्त नहीं है। हम नियम करवाते हैं, अन्य संत भी नियम करवाते हैं, पर सट्टा बाजार से मुक्ति नहीं हुई। कभी-कभी श्राविकाएँ हमसे कहती हैं- ''बाबजी! आप मेरा नाम तो मत लेना, पर ये शेयर में, डब्बे में और न जाने किन-किन नाम से लोभ-वश कहाँ-कहाँ पैसा लगाते हैं, कहा नहीं जा सकता।''

आज कई स्थानों के युवारत्न बन्धु आए हैं, आप आत्मसाक्षी से अपना-अपना चिन्तन करें और यदि किसी में जुए की कोई लत है तो उसे समाप्त करें। आप दृढ़ इच्छाशक्ति से संकल्प करेंगे तो अपना, अपने परिवार का, अपने संघ का नाम रोशन करेंगे और धर्म संघ की जाहोजलाली में भागीदार बनेंगे। आप न्याय-नीति के विरुद्ध पैसा

कमाएँगे तो धनपति हो जाने पर भी बदनाम हो जाएँगे। अभी महेन्द्रमुनिजी ने खाने-खिलाने और पीने-पिलाने के साथ मौज-शौक में खर्च करने वालों के लिए ठीक ही कहा कि आप धर्म संघ पर कलंक लगे, वैसा आचरण तो मत करना। दूसरी बात महेन्द्रमुनिजी ने रखी- युवा में शक्ति के साथ भक्ति, भक्ति के साथ युक्ति, और युक्ति के साथ अनुरक्ति होगी तो संघ सदा जयवन्त रहेगा। युवा वर्ग इस पर चिंतन करे।

मैं दृष्टान्त देने जाऊँ तो सैकड़ों दृष्टान्त दे सकता हूँ, पर उसका नाम अमर होता है जो धर्मसंघ के लिए कुछ कर गुजरता है।, धर्मसंघ के लिए प्राणों को न्यौछावर करने वाले भी हुए हैं, अब भी मिल सकते हैं। मेरा युवा रत्न बन्धुओं से कथन है कि आपमें से भले ही नब्बे प्रतिशत से ऊपर निर्व्यसनी होंगे, पर जैसे एक मछली सारे तालाब को गन्दा करती है ऐसे ही दस प्रतिशत भी व्यसनी हैं तो समाज बदनाम हो जाएगा। आपने शायद सुना होगा- विदेश में पुस्तकालय की पुस्तक से एक चित्र चुराने के कारण उस जगह लिख दिया गया कि भारतीय चोर होते हैं। करता कोई एक है, पर बदनाम संघ होता है, समाज होता है।

हमें कभी-कभी यह सुनने को मिलता है कि बाबजी! मैं अपनी बच्ची के सम्बन्ध के लिए न जाने कितने जैन घरों में गया, परन्तु मुझे जैन समाज के प्रतिष्ठित कहे जाने वाले व्यक्तियों में एक भी निर्व्यसनी नहीं मिला। यह दर्द भरी बात है। आप वास्तविकता को नजर-अन्दाज न करें। आप युवारत्न बन्धु हैं, अन्तर्मन से प्रगति-उन्नति करना चाहते हैं तो अपना फर्ज निभाएँ।

आचार्य भगवन्त (गुरु हस्ती) तो युवाओं को रीढ़ की हड्डी मानते थे। आपकी रीढ़ की हड्डी मजबूत है तो शरीर का ऊपर का भाग और नीचे का भाग दोनों सशक्त कहे जा सकते हैं और रीढ़ की हड्डी कमजोर है तो पूरा शरीर कमजोर होगा।

यह शहर कोटा शिक्षा हब के रूप में न केवल प्रदेश में अपितु देश भर में प्रसिद्ध है। यहाँ हर प्रान्त के विद्यार्थी विद्याध्ययन के लिए आते हैं, पढ़ते हैं। कोटा में लाख से डेढ़ लाख के बीच बच्चे बाहर से पढ़ने के लिए आते हैं, पर मैं यह भी सुनता हूँ कि यहाँ नित्य-नए हंगामे होते रहते हैं। कोई चम्बल में डूब मरता है तो कोई फंदा लगाकर देह लीला समाप्त करता है। क्यों? आप इस पर चिन्तन करेंगे तो पाएँगे कि पढ़ने वाले विद्यार्थियों में संस्कारों की कमी है।

जैन रत्न युवक परिषद् के युवारत्न बन्धु मात्र पढ़ने वाले ही नहीं, नौकरी करने वाले ही नहीं, पर युवारत्न बन्धु जीवन का निर्माण करने वाले हैं, जीतने वाले हैं। व्यसन त्याग के कारण उनका जीवन केसरिया है। केसरिया रंग से आप परिचित हैं। चन्दन से आप जैसे परिचित हैं, जानते हैं कि चन्दन का स्वभाव शीतलता देने वाला है। चन्दन की खुशबू आस-पास को सुगन्धित करती है। चन्दन के पेड़ पर जहरीले सांप भी सुगन्ध के कारण

आते हैं उसी तरह बिगड़े युवा भी युवक परिषद् में आकर निर्व्यसनी बनें तो उसमें कोई आश्चर्य नहीं है। आप प्रायः नित्य-प्रति भगवान की वाणी सुनते हैं। आप चाहे जोधपुर के हैं या जयपुर के अथवा अन्य-अन्य नगरों के युवारत्न हैं, आप सुनते हैं, सुनाते हैं। यहाँ आकर भी आप मात्र सुनते ही रहोगे तो केवल मात्र सुनने से सफलता मिलने वाली नहीं है। सुनकर आप संकल्प करें, नियमबद्ध हों तो सप्त-कुव्यसन से बचना सहज हो सकेगा।

(आचार्यश्री की प्रेरणा से युवारत्न बन्धुओं ने प्रवचन सभा में खड़े होकर सप्त कुव्यसन त्याग का नियम स्वीकार किया। आचार्य श्री ने भगवान की साक्षी से, संघ की साक्षी से जुआ, मांस, शराब आदि सप्त कुव्यसन के जीवन भर के लिए त्याग करवाए।)

(आचार्यश्री ने जन समुदाय को सम्बोधित करते फरमाया कि) आपने अभी सप्त कुव्यसन के त्याग किए हैं आपकी यह संख्या सन्तोषप्रद नहीं है, अतः यहाँ से नियम लेने वाला हर युवा अपने-अपने गाँव-नगर में पहुँच कर अपने साथियों को निर्व्यसनी बनाने का प्रयास करे। मैं जानता हूँ कि आप युवारत्न बन्धु अपने साथियों के गुण-दोषों से जितने परिचित हैं, उतना मैं नहीं हूँ। शायद, आपके माता-पिता भी आपके दोषों से उतने परिचित नहीं हैं। माता-पिता ही क्या, पत्नी तक को भी आपके व्यसनों की जानकारी है या नहीं, कह नहीं सकता। हमको पता नहीं, माता-पिता और पत्नी तक को जो बातें ज्ञात नहीं, वह आपके दोस्त जानते हैं। आपकी बात अपने साथियों से छुपी हुई नहीं हैं। आप यहाँ से अपने-अपने ग्राम-नगर या महानगर जाकर अपने दोस्तों से यहाँ क्या नियम लिया, उसकी तो चर्चा करें ही, अपने दोस्त व्यसनों से दूर हों इसलिए उनसे कहें कि हमने नियम लिया है, आप भी निर्व्यसनी होने का संकल्प करें। एक-दूसरा, एक-दूसरे को कहेगा, प्रेरणा करेगा तो आपकी बात आपके दोस्त मानेंगे और सत्य-मार्ग पर बढ़ेंगे। आप अगर सच्चे मित्र हैं तो स्वयं व्यसन मुक्त जीवन जीएँ, अपने सभी मित्रों को इस अभियान में जोड़ें। आप गाँव-गाँव, नगर-नगर और महानगरों में अपने मित्रों से बात करेंगे तो आपको अपने अभियान में सफलता मिलेगी। व्यसन-मुक्त जीवन युवारत्न बन्धुओं की पहचान रहनी चाहिए। आप व्यसन-मुक्त जीवन जीएँ, अपने मित्रों को साथ जोड़ें तो युवारत्न परिषद् की ही नहीं शासन की प्रभावना होगी। मैंने आपको लम्बा कहने के बजाय थोड़ा भले ही कहा हो, लेकिन आप व्यसन मुक्त जीवन जीने का अभ्यास करेंगे तो अपना, अपनी परिषद् की, रत्नसंघ की, जैन समाज की और भगवान महावीर के शासन की शोभा बढ़ा सकेंगे। हम समय-समय पर प्रेरणा रूप अपनी बात कहते हैं, आप सुनते हैं, सुनकर आचरण में ढ़ालते हैं तो आप सच्चे अर्थों में जैन रत्न युवक परिषद् के सदस्य हैं। आपका सम्मेलन आपके लिए, सभी युवारत्नों साथियों के लिए, जैन समाज के लिए आदर्श स्थापित करने वाला बने, यहीं मंगल मनीषा है। ■

प्रवचन

युवकों का संघ बने आदर्श संघ

महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.

महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. द्वारा कोटा में 05 अक्टूबर, 2014 को फरमाए गए इस प्रवचन का आशुलेखन जिनवाणी के सह-सम्पादक श्री नौरतनजी मेहता द्वारा किया गया है।-**सम्पादक**

कर्मशृंखला का अन्त कर अनन्त को प्राप्त करने वाले, व्याधि के वमन से वीतरागता का वरण करने वाले अनन्त उपकारी तीर्थंकर भगवन्तों को वंदन करने के पश्चात्......। जिनके आचरण में आचारांग की आभा है, प्रवचन में प्रवचन-माता की प्रभा है, संशरण में शासन की शोभा है ऐसे शासन शिरोमणि, महावीर-शासन के मुकुटमणि अनन्त उपकारी आचार्य भगवन्त को वन्दन!

बन्धुओं!

आप और हम भाग्यशाली हैं, क्योंकि हमें जिनशासन में जिनवाणी श्रवण करने का सौभाग्य मिल रहा है। तीर्थंकर भगवन्तों द्वारा प्ररूपित, गणधर भगवन्तों द्वारा ग्रथित द्वादशी को सुनने, समझने और आचरण करने का अवसर प्राप्त हुआ है। आज नौ पद आराधना का छट्ठा दिवस है। हमें आज चिन्तन करना है कि हमें जो शासन मिला है, धर्म-संघ मिला है वह कैसा है? दूसरा चिन्तन करना है कि हमें जयवन्त जिनवाणी सुनने को मिल रही है, उसका आचरण करने से हमें क्या लाभ होते हैं? तीसरा- आज युवारत्न बन्धुओं का अधिवेशन है, आपको गुरुचरणों में चिन्तन करना है कि प्रत्येक युवक का आचरण कैसा हो? आप युवारत्न बन्धु हैं। आपके आचरण से धर्म-संघ की शोभा कैसे बढ़ सकती है, इस पर आपको विचार और चिन्तन करना है। सबसे पहले युवा सोचें कि हम स्वयं जिनवाणी के आराधक बनें। आप सोचें हमें जो धर्म-संघ मिला है वह छद्मस्थों के द्वारा नहीं, जिनेश्वर भगवन्तों द्वारा प्ररूपित है। जिणाणुमयं, जिणाणुलोमं, जिणप्पणीयं, जिणपरूवियं, जिणक्खायं, जिणाणुचिन्नं, जिणपण्णत्तं, जिणदेसियं, जिणपसत्थं- जिनशासन के ये नौ विशेषण हैं।

जिनवाणी श्रेष्ठ है, अनुत्तर है। आगम कहता है- भूतकाल में अनेक आराधक बन गए हैं, वर्तमान में बन रहे हैं, भविष्य में अनन्त जीव आराधक बनेंगे। आप-हम भाग्यशाली हैं, हमें गुरुचरणों में आराधना करने का सुअवसर मिला है।

युवाओं में जोश होता है। जोश के साथ होश चाहिए। जोश के साथ होश नहीं तो मदहोश होने से कोई नहीं रोक सकता। आप युवा हैं इसलिए जोश के साथ होश रखना। आपकी हर प्रवृत्ति में विवेक आवश्यक है। गाड़ी तो बहुत अच्छी है, पर गाड़ी में ब्रेक नहीं तो उस गाड़ी में कौन यात्रा करना चाहेगा? जैसे गाड़ी में ब्रेक जरूरी है ऐसे ही युवाओं में जोश के साथ होश जरूरी है। जोश और होश दोनों हैं तो आपका काम पार हो जाएगा, सफलता मिलेगी ही।

आप युवारत्न बन्धु हैं। युवा भी कैसे? आप रत्नसंघ के युवा हैं। रत्नसंघ का युवा बेहोश नहीं है। युवाओं में शक्ति होती है। युवाओं में ऊर्जा है, उमंग है, आगे बढ़ने की क्षमता है। आगम बोल रहा है- स्वाध्याय करने वाले जानते हैं, आचार्य भगवन्त (गुरु हीरा) के चरणों में भगवती सूत्र की वाचना चल रही है। उसमें कहा गया है कि भोजन करने वाला श्रमण भी उतने कर्मों की निर्जरा कर लेता है जितनी नारकी का जीव हजारों वर्षों में भी नहीं कर सकता। एक जगह आया है- एक तरुण पुरुष ऐसा बलवान होता है कि वह हथौड़े को आँख की अणी से चकनाचूर कर सकता है।

युवकों में शक्ति होती है। शक्ति के साथ चार चीजें आ जाय तो युवकों का संघ आदर्श संघ बन सकता है। चार चीजें हैं- शक्ति के साथ भक्ति चाहिए। भक्ति के साथ युक्ति चाहिए। युक्ति के साथ अनुरक्ति चाहिए। शक्ति, भक्ति, युक्ति और अनुरक्ति की व्याख्या करने जाऊँ उतना समय नहीं है। मैं ज्यादा बोलूँ वह भी उचित नहीं होगा, क्योंकि आचार्य भगवन्त की अनमोल वाणी श्रवण के लाभ से मैं वंचित करूँ वह हितावह नहीं होगा। पर, मुझे आज्ञा दी गई, इसलिए आज्ञा का आराधन करना है।

हाँ, तो मैं कह रहा था- शक्ति के साथ भक्ति चाहिए। भक्ति का मतलब है-श्रद्धा। भक्ति का मतलब है-समर्पण। प्राण जाय तो जाय, पर संघ जयवन्त रहना चाहिए। भक्ति करने वाला नाम नहीं, काम करता है और काम भी पूरे मनोयोग से करता है।

आज आश्विन शुक्ला एकादशी है, घड़ियों में द्वादशी। आज के दिन पूज्य श्री धर्मदासजी महाराज का जन्मदिवस है तो दीक्षा दिवस भी है। युवक संघ भाग्यशाली है जिसे पूज्य श्री धर्मदास जी महाराज के जन्म-दिवस और दीक्षा दिवस के दिन अधिवेशन करने का सौभाग्य मिल रहा है। पूज्य श्री धर्मदासजी महाराज ने संघ के लिए प्राण त्याग दिए। उन्होंने यह सोचकर कि जिनशासन की हीलना न हो, वे अपने शिष्य के स्थान पर संथारा करके बैठ गए। शरीर रहे या नहीं, शासन की शान रहनी चाहिए। यही बात मुझे युवकों को कहनी है- आप यह सोचें कि हमारा नाम रहे या नहीं, हमारा संघ रहना चाहिए, हमारे संघ की शान रहनी चाहिए।

पूज्य गुरुदेव फरमाते थे- धर्म संघ जयवन्त है, रहेगा। कल जयवन्त था, आज है भविष्य में जयवन्त रहेगा। आप युवारत्न बन्धु हैं, आप किसी और के भरोसे न रहें, अपना स्वयं का भरोसा रखें। औरों का भरोसा काम नहीं आता, काम आता है अपना भरोसा। प्राण जाय तो जाय, धर्म अक्षुण्ण रहना चाहिए। युवाओं से अपेक्षा है कि वे आचार्य भगवन्त (गुरु हीरा) के चरणों में संकल्प करें कि हम व्यक्तिगत हित के बजाय धर्म-संघ के हित को महत्त्व देंगे। हमारे धर्म-संघ पर कोई अंगुली उठाये, ऐसा काम नहीं करेंगे। मेरा नाम रहे या नहीं रहे, मेरा सम्मान रहे या नहीं, मेरा धर्मसंघ रहना चाहिए, मेरे धर्मगुरु का सम्मान रहना चाहिए।

शक्ति के साथ भक्ति चाहिए और भक्ति के साथ युक्ति चाहिए। काम करने की एक युक्ति होती है। युवा बन्धु काम का संचालन इस युक्ति से करे जिससे किसी को अंगुली निर्देश न करना पड़े।

युवक संघ का हर सदस्य सक्रिय हो। आपको आचार्य श्री हस्ती और आचार्य श्री हीरा के सपनों को साकार करना है तो समर्पण के साथ संघ को सक्रिय बनाना है, संघ को अनुशासित और संगठित बनाना है। मैं ज्यादा लम्बी बात नहीं कहूँगा, पर आपको इतना अवश्य कहूँगा कि आपके जीवन को विकृत करने वाली प्रवृत्ति व्यसन से बचें। हर युवारत्न बन्धु व्यसन मुक्त होना चाहिए।

व्यसन क्या ? जो शरीर की मानसिकता को विकृत करता है वह व्यसन है। व्यसन तन को, मन को विकृत करता है, धन की बरबादी करता है तथा संघ-समाज को बदनाम करता है। वह चाहे खाना हो, पीना हो, खिलाना हो, व्यसन, व्यसन है। जुआ खेलना व्यसन है। रत्नसंघ के अधिकतर युवक इस व्यसन से बचे हुए हैं। मेरी तो भावना है कि आचार्य श्री हीरा के चादर पदारोहण के रजत-वर्ष तक 2500 युवक व्यसन मुक्त हो जाएं। संघ का कोई सदस्य व्यसनी नहीं हो।

आप युवारत्न बन्धु हैं। आपमें शक्ति, भक्ति, युक्ति, अनुरक्ति हो। आप धर्मसंघ से, आगम वाणी से अनुरक्ति की अभिव्यक्ति ही नहीं, अनुभूति करें। आप गुरु हीरा के आचार्य पदारोहण के रजत वर्ष में अपने-अपने जीवन में अनुभूति का संचरण करें। पुराने समय के श्रावक चाहे वह आनन्द हो या कामदेव महीने में छः पौषध करते थे। आप रजत वर्ष में साधना-आराधना के कार्यक्रम करें। आप युवारत्न हैं, अतः गुरुदेव के चरणों में व्यसन मुक्त जीवन जीने का संकल्प करें, आगम का स्वाध्याय करें, साधना में सक्रिय बनें तो आप युवक संघ को आगे बढ़ा सकेंगे। मैं ज्यादा समय नहीं लेना चाहता, आप गुरुदेव के अमृत वचन श्रवण करें और जीवन को समुन्नत बनाएँ, यहीं मंगल मनीषा है।

संगोष्ठी-आलेख

योगशास्त्र के आलोक में रात्रिभोजन-विरति

डॉ. धर्मचन्द जैन

रात्रिभोजन के अन्तर्गत कवलाहार का त्याग

आहार का सेवन जीने के लिए आवश्यक है। इसलिए प्रत्येक संसारी जीव आहारार्थी होता है। पृथ्वीकायिक से लेकर वैमानिक देवों तक सभी जीव आहारार्थी होते हैं। आहार दो प्रकार से ग्रहण किए जाते हैं- कोई आहार इच्छापूर्वक ग्रहण किया जाता है, जिसे आभोगनिर्वर्तित आहार कहा गया है तथा कोई आहार बिना इच्छा के एवं बिना जानकारी के स्वतः गृहीत होता रहता है उसे अनाभोगनिर्वर्तित आहार कहा गया है।[1] उदाहरण के लिए हम जो अशन, पान आदि के रूप में आहार करते हैं वह आभोगनिर्वर्तित आहार है तथा हमारे रोओं एवं त्वचा के द्वारा जो सतत आहार ग्रहण किया जाता है, जिसका हमें भान भी नहीं होता वह अनाभोगनिर्वर्तित आहार है। मनुष्य आभोगनिर्वर्तित एवं अनाभोगनिर्वर्तित दोनों प्रकार का आहार ग्रहण करता है। आहार ग्रहण करने की विधि के आधार पर आहार के चार प्रकार भी किए जा सकते हैं- लोमाहार, ओजाहार, प्रक्षेपाहार (कवलाहार) एवं मनोभक्ष्य आहार।[2] इनमें रोम कूपों या त्वचा के द्वारा ग्रहण किया जाने वाला आहार लोमाहार है। इस लोमाहार को अन्य जीवों की भांति मनुष्य भी निरन्तर ग्रहण करता रहता है। जब जीव गर्भ में जन्म ग्रहण करता है तब वह माता के रज एवं पिता के वीर्य को ओजाहार के रूप में ग्रहण करता है। यह आहार जीव के द्वारा अपर्याप्त अवस्था में ही ग्रहण किया जाता है। यह शरीर, इन्द्रियादि के निर्माण में सहायक है। प्रक्षेपाहार का दूसरा नाम कवलाहार है। रोटी, सब्जी, दूध, पानी आदि का सेवन प्रक्षेपाहार कहा गया है। मनुष्य इस आहार को ग्रहण करने या न करने में स्वतन्त्र है। वह बुभुक्षा, पिपासा आदि का अनुभव होने पर शरीर संचालन के लिए आवश्यक समझकर अथवा कभी रसनेन्द्रिय के वशीभूत होकर प्रक्षेपाहार का सेवन करता है। मनोभक्ष्य आहार तो मात्र देवों के द्वारा ग्रहण किया जाता है, जिसमें वे मन से ही आहार का चिन्तन कर उसे ग्रहण कर लेते हैं।[3]

*** आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म. सा. के सान्निध्य में 11 एवं 12 अक्टूबर 2014 को कोटा में आयोजित 'रात्रिभोजन : समस्याएँ और समाधान' विषयक राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी में प्रस्तुत आलेख।**

जब हम रात्रिभोजन त्याग की बात करते हैं तो रात्रि में कवलाहार या प्रक्षेपाहार त्याग की बात करते हैं। कवलाहार करने में रसनेन्द्रिय माध्यम बनती है। रस के वशीभूत होकर मनुष्य आवश्यकता से अधिक एवं अकाल (निर्धारित काल से भिन्न काल) में भी आहार ग्रहण कर लेता है, जिससे उसे कई बार हानि उठानी पड़ती है। इसलिए मनुष्य को चाहिए कि वह संयमित आहार करे तथा रात्रि में पूर्णतया कवलाहार का वर्जन करे।

मनुष्य के द्वारा ग्रहण किए जाने वाले आहार (कवलाहार) को स्थानांग सूत्र में चार प्रकार का प्रतिपादित किया गया है- 1. अशन, 2. पान, 3. खादिम, 4. स्वादिम। ये चारों प्रकार के आहार मनुष्य की आहार संज्ञा को शांत करते हैं। इनसे भूख-प्यास शांत होती है तथा शरीर को आवश्यक ऊर्जा प्राप्त होती है। स्पर्शन, रसना आदि इन्द्रियों एवं दशविध प्राणों को आहारयोग्य पुद्गलों से शक्ति प्राप्त होती है। इसलिए कथञ्चित् वेद में अन्न को प्राण कहा गया है-"**अन्नं वै प्राणाः**" अर्थात् अन्न ही प्राण है। यद्यपि मनुष्य लोमाहार निरन्तर करता रहता है, तथापि शरीर को साधना योग्य एवं कार्य करने की क्षमता के योग्य बनाए रखने के लिए उसे कवलाहार या प्रक्षेपाहार की आवश्यकता होती है।

आहार को संयमित करना एक प्रकार का तप है। कदाचित् एक दिन या कुछ दिनों के लिए अशनादि का पूरी तरह से त्याग किया जा सकता है। रात्रिभोजन के त्याग का नियम भी तप की श्रेणी में आता है।

योगशास्त्र में रात्रिभोजन-त्याग विषयक तर्क

कलिकाल सर्वज्ञ आचार्य हेमचन्द्रसूरि (1088-1173 ई.) ने 'योगशास्त्र' नामक ग्रन्थ में श्रावकाचार का निरूपण करते हुए तीन गुणव्रतों की चर्चा में भोगोपभोग परिमाणव्रत के अन्तर्गत रात्रिभोजन-निषेध का विशद प्रतिपादन किया है। योगशास्त्र के तृतीय प्रकाश में (श्लोक 48 से 70 तक के श्लोकों में) रात्रिभोजन-निषेध के सम्बन्ध में विविध तर्क दिए गए हैं। मुनि जम्बूविजयजी द्वारा सम्पादित एवं मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली से प्रकाशित इस योगशास्त्र में आचार्य हेमचन्द्रसूरि ने अनेक स्थानों पर निशीथ भाष्य एवं आचार्य हरिभद्रसूरि के सम्बोध प्रकरण को अपने कथन का आधार बनाया है। यह सत्य है कि आगमों में जो रात्रिभोजन का निषेध प्राप्त होता है, उसमें सीधे तौर पर श्रमण-श्रमणियों को लक्ष्य में रखा गया है, किन्तु साधनाशील श्रावकों के लिए भी वह निषेध उपादेय है। आचार्य हेमचन्द्र सूरि ने सीधे तौर पर श्रावकाचार के अन्तर्गत रात्रिभोजन-निषेध की चर्चा करके एक महत्त्वपूर्ण मार्ग प्रशस्त किया है। योगशास्त्र में प्रदत्त तर्क इस प्रकार हैं-

1. अहिंसा धर्म का पालन करने के लिए- रात्रि में सूक्ष्म जीवों का संचरण बढ़ जाता है।

अत: भोजन में उनके गिरने की आशंका बनी रहती है। प्राचीनकाल में रात्रि में प्रकाश की अच्छी व्यवस्था नहीं होने के कारण प्राय: लोग सूर्यास्त के पूर्व आहार कर लेते थे। वर्तमान में लोगों का यह तर्क रहता है कि ट्यूब लाइट आदि के प्रकाश में देखकर एवं बंद कमरों में बैठकर हम भोजन करते हैं, जिससे जीवों के भोजन में गिरने की संभावना नहीं रहती, किन्तु उनका यह तर्क अत्यन्त सूक्ष्म जीवों के संचरण को पूरी तरह रोक नहीं पाता है। अनेक सूक्ष्म जीव ट्यूब लाइट के प्रकाश में भी दिखाई नहीं देते हैं। कुछ जीव दिखाई दे भी जाएं तो भी उस प्रकाश में उनका संचरण होने से गिरने की संभावना बनी रहती है। दिन में अल्ट्रावायलेट किरणों के कारण उनका संचरण कम होता है, जबकि रात्रि में इन किरणों का अभाव होने से जीवों का संचरण या भ्रमण बढ़ जाता है। सायंकाल हम देखते ही हैं कि मच्छर किस प्रकार घर के अन्दर प्रवेश करते हैं। आचार्य हेमचन्द्रसूरि कहते हैं-

नाप्रेक्ष्यसूक्ष्मजन्तूनि निश्यद्यात् प्रासुकान्यपि।
अप्युद्यत्केवलज्ञानैर्नादृतं यन्निशाशनम्।।

-योगशास्त्र

प्रासुक अर्थात् अचित्त मोदक, द्राक्षा आदि का रात्रि में सेवन नहीं करना चाहिए, क्योंकि उनमें ऐसे सूक्ष्म जन्तु (कुन्थु, पनक आदि) रहते हैं जो उस समय दिखाई नहीं देते हैं। जिन्हें केवलज्ञान प्रकट हो गया है उनके द्वारा भी रात्रिभोजन नहीं किया गया।

निशीथ भाष्य में भी इसी प्रकार का तथ्य प्ररूपित है कि प्रत्यक्षज्ञानी अर्थात् केवलज्ञानी भी रात्रिभोजन का परिहार करते हैं।[4]

केवलज्ञानी तो सूक्ष्म जीवों को भी प्रत्यक्ष जान सकते हैं, तथापि जीवों की हिंसा से बचने के लिए केवलज्ञानी भी निशा भोजन का परिहार करते हैं।

आचार्य हेमचन्द्रसूरि योगशास्त्र की स्वोपज्ञवृत्ति में कहते हैं कि निशाभोजन करने पर रात्रि में भोजन बनाना भी सम्भव है। उसमें षड्जीव निकाय का वध अवश्यम्भावी है। पात्रों के धोने आदि में जल में विद्यमान जीवों का नाश होता है तथा जल को फैंकने पर भूमि पर विद्यमान कुन्थु, पिपीलिका आदि प्राणियों की हिंसा होती है। अतः उन प्राणियों की रक्षा के लिए निशाभोजन नहीं करना चाहिए।[5]

आचार्य हेमचन्द्रसूरि के इस कथन से विदित होता है कि रात्रि में भोजन बनाना, भोजन के पात्रों को धोना आदि भी सूक्ष्म जीवों के रक्षण हेतु त्याज्य हैं।

2. तप की दृष्टि से रात्रिभोजन-त्याग की उपयोगिता- बाह्य तप में अशन, पान, खादिम एवं स्वादिम में से तीन या चार आहारों का त्याग किया जाता है। कभी ऊनोदरी तप

करते हुए अशन आदि आहारों का भूख से कम प्रयोग किया जाता है। कभी आयम्बिल, नींवी आदि तप के माध्यम से सरस आहार का त्याग किया जाता है। कभी एक, दो या उससे अधिक विगयों का त्याग करके आहार ग्रहण किया जाता है। रात्रिभोजन त्याग में एक निश्चित अवधि के लिए यथा- गर्मियों में दस-ग्यारह घंटों के लिए तो सर्दियों में लगभग चौदह घंटों के लिए अशन आदि का त्याग हो जाता है, जो तप की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। आचार्य हेमचन्द्रसूरि ने रात्रिभोजन-त्याग करने वाले साधक के लिए वर्ष भर में छह मास उपवास के कहे हैं-

करोति विरतिं धन्यो यः सदा निशि भोजनात्।
साऽर्द्धं पुरुषायुषस्य स्यादवश्यमुपोषितः।।

-योगशास्त्र, 3.69

अर्थात् जो रात्रिभोजन से विरति करता है वह धन्य है, क्योंकि उसकी आयुष्य का आधा भाग उपवास में व्यतीत होता है।

वे निशा-भोजन के त्याग का विधान करते हुए कहते हैं कि दिन के प्रारम्भ अर्थात् सूर्योदय के पश्चात् दो घड़ी छोड़कर तथा दिन के अन्त अर्थात् सूर्यास्त से पूर्व दो घड़ी छोड़कर जो भोजन करता है, वह पुण्य का भाजन होता है।[6]

तप एवं त्याग का फल तब विशेष प्राप्त होता है, जब उसे प्रत्याख्यान के पाठपूर्वक किया जाए। बिना संकल्प के यदि कोई दिवा भोजी भी है तो भी उसे तप के फल की प्राप्ति नहीं होती।[7]

कोई यह कहे कि हम दिन में भोजन न करके रात्रि में भोजन करेंगे तो भी वह हमारा तप है। उसके लिए आचार्य हेमचन्द्र कहते हैं कि ऐसे लोग माणिक्य को छोड़कर काच को ग्रहण करते हैं, अथवा वे ऊषर क्षेत्र में शालि (धान्य) के बीजों का वपन करते हैं।[8]

रात्रि में अशन, पान, खादिम एवं स्वादिम इन चतुर्विध आहारों का त्याग किया जाता है, किन्तु कोई यथाशक्ति पान आदि की छूट रखकर तप कर सकता है। यहाँ पर यह विचारणीय है कि दिगम्बर जैन परम्परा में रात्रिभोजन का त्याग रखने वाले कुछ श्रावक दुग्ध, मावे की मिठाई, फल आदि का सेवन कर लेते हैं। जबकि श्वेताम्बर जैन परम्परा में चतुर्विध आहार का त्याग रखने वाले श्रावक-श्राविकाओं की पर्याप्त संख्या है। कुछ श्रावक-श्राविका पानी की छूट रखकर शेष त्रिविध आहारों का त्याग करते हैं। कुछ ऐसे भी हैं जो रात्रि में पानी के साथ दुग्ध सेवन की भी छूट रखते हैं। कोई कितना त्याग रखता है यह व्यक्ति के आत्मबल एवं संकल्प शक्ति पर निर्भर करता है। किन्तु इनमें सर्वश्रेष्ठ त्याग तो चारों

प्रकार के आहारों का त्याग है। द्वितीय स्थान पर पानी की छूट रखकर किया जाने वाला त्रिविध आहार का त्याग है। जैन परम्परा में सभी त्यागों का महत्त्व स्वीकृत है। कोई एकाध आहार का त्याग करता है तो भी उसका महत्त्व है। किन्तु वैष्णव व्रत के समान यदि कोई खादिम आहार का सामान्य आहार से अधिक सेवन रात्रि में करने लगे और अपने को त्यागी मानने लगे तो यह जैन परम्परा में मान्य नहीं है, साथ ही उसे तार्किक एवं लौकिक दृष्टि से भी उपयुक्त नहीं कहा जा सकता है।

उपवास आदि प्रत्याख्यानों में एवं रात्रिभोजन-त्याग में अशन, पान, खादिम एवं स्वादिम आहारों का त्याग किया जाता है। अशनादि आहारों का क्या तात्पर्य है, इसके सम्बन्ध में हरिभद्रसूरि के पंचाशक प्रकरण में प्रत्याख्यानविधि के अन्तर्गत एवं नेमिचन्द्रसूरि के प्रवचनसारोद्धार में प्रत्याख्यान द्वार के अन्तर्गत उल्लेख मिलता है।

3. आस्रव निरोध के लिए- रात्रिभोजन जहाँ कर्म पुद्गलों के आस्रव एवं बंध का कारण बनता है, वहाँ रात्रि भोजन का त्याग अनास्रव का हेतु स्वीकार किया गया है। उत्तराध्ययन सूत्र में स्पष्ट रूप से उल्लेख है-

पाणिवह-मुसावाया अदत्त-मेहुण-परिग्गहा विरओ।
राई-भोयण-विरओ जीवो भवइ-अणासवो।।

-उत्तराध्ययनसूत्र, 30.2

जिस प्रकार प्राणिवध, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन एवं परिग्रह से विरति अनास्रव का हेतु होती है, उसी प्रकार रात्रिभोजन से विरत होना भी अनास्रव का हेतु होता है। पापों से विरति होने पर कर्मों का आस्रव रुकता है। इसी प्रकार रात्रिभोजन से विरति भी कर्मास्रव के निरोध में अर्थात् संवर में कारण बनती है। श्रावक का रात्रिभोजन त्यागव्रत जहाँ एक करण एवं एक योग से होता है वहाँ श्रमण-श्रमणी पंच महाव्रतों के सुरक्षा-कवच के रूप में रात्रि में चारों आहारों का तीन करण, तीन योग से त्याग करते हैं। इसे साधु-साध्वी का छट्ठा व्रत कहा गया है।[9]

हेमचन्द्रसूरि ने पापों से विरति के लिए रात्रिभोजन से भी विरति की प्रेरणा की है। वे विरति की प्रेरणा करते हुए कहते हैं कि रात्रि-भोजन में संसक्त जीव-समूह का भक्षण करने वाले मूढ लोग राक्षसों से भिन्न नहीं हैं।[10] उनका कथन है कि मनुष्य जीवन को एवं जिनधर्म को प्राप्त करके भी कोई रात्रिभोजन से विरति न करे तो वह सींग एवं पूँछ से रहित पशु ही है-

वासरे च रजन्यां च यः खादन्नेव तिष्ठति।
शृंग-पुच्छ परिभ्रष्टः स्पष्टं पशुरेव हि।।

-योगशास्त्र, 3.62

(जो दिन में एवं रात्रि में सदैव खाता रहता है, वह सींग एवं पूछ से रहित पशु ही है।)

4. अनाचीर्ण होने से रात्रिभोजन का त्याग– साधु-साध्वियों के 52 अनाचीर्ण अर्थात् आचरण नहीं करने योग्य बिन्दु कहे गये हैं, जिनमें रात्रिभोजन की भी गणना की गई है। अर्थात् वे रात्रि में आहार का सेवन पूर्णत: वर्जित रखते हैं।

श्रावक भी यदि इस ओर कदम बढ़ाता है तो उसके लिए रात्रिभोजन का त्याग हितकर है, लेकिन उसके लिए इसे अनाचीर्ण नहीं कहा गया है। साधु रात्रि में आहार का संचय नहीं करता है। वह प्रतिदिन भिक्षा में उतना ही आहार लाता है, जितना स्वयं सेवन कर सकता है अथवा उसके साथ वाले साधुओं का समूह सेवन कर सकता है। दशवैकालिक सूत्र में संचय का स्पष्ट निषेध करते हुए कहा गया है–"**सन्निहिं च न कुव्विज्जा अणुमायंपि संजए**"-दशवैकालिक सूत्र, 8.24

उत्तराध्ययनसूत्र में भी निगदित है–

चउव्विहे वि आहारे, राई भोयण-वज्जणा।
सन्निही संचओ चेव, वज्जेयव्वो सुदुक्करो।।

-उत्तराध्ययनसूत्र, 19.31

साधु-साध्वी समुदाय भिक्षा लाकर ही आहार करता है। दशवैकालिकसूत्र में कहा गया है कि यह पृथ्वी कहीं जल के कारण आर्द्र होती है, कहीं बीजों से संसक्त होती है तथा इस पर सूक्ष्म प्राणी विचरण करते रहते हैं। दिन में इनका वर्जन करके आहार आदि की गवेषणा की जाती है। रात्रि में इन सबसे बचकर चलना साधु के लिए सम्भव नहीं है। इस दोष को देखकर ही प्रभु महावीर ने विधान किया कि निर्ग्रंथ साधु रात्रि में चारों प्रकार के आहारों का त्याग करे।[11]

दशवैकालिक सूत्र में स्पष्ट कथन है कि साधु सूर्य के अस्त होने पर तथा पूर्व दिशा में पुन: उदित न होने तक मन से भी आहार की अभिलाषा (इच्छा) न करे।

अत्थंगयम्मि आइच्चे पुरत्था य अणुग्गए।
आहारमाइअं सव्वं, मणसा वि न पत्थए।

-दशवैकालिक सूत्र, 8.28

योगशास्त्र में हेमचन्द्रसूरि ने श्रावकों के लिए भी रात्रिभोजन को अनाचरणीय माना है। इसीलिए वे कहते हैं–

धर्मविन्नैव भुञ्जीत कदाचन दिनात्यये।
बाह्या अपि निशाभोज्यं यदभोज्यं प्रचक्षते।।

-योगशास्त्र, 3.54

जो श्रुतधर्म को जानने वाला है वह कभी भी रात्रि में भोजन न करे। जैनों ने ही नहीं जैनेतरों ने भी रात्रिभोजन को अभोज्य कहा है।

5. रोगों से बचाव के लिए– रात्रिभोजन से अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न हो सकते हैं। आयुर्वेद एवं एलोपैथ के चिकित्सक इस तथ्य से सहमत हैं कि रात्रिभोजन करने पर पर्याप्त रूप से जल का पान नहीं हो पाता है, अतः कई प्रकार के उदर सम्बन्धी रोग उत्पन्न हो जाते हैं। योगशास्त्र में आचार्य हेमचन्द्र ने रात्रि भोजन में कृमि, पिपीलिका, मक्खी आदि के गिरने से हिंसा के साथ विभिन्न रोगों का भी उल्लेख किया है। वे कहते हैं कि भोजन में चींटी आ जाए तो वह मेधा का नाश करती है। जूँ आ जाए तो वह जलोदार रोग को उत्पन्न करती है, मक्खी आ जाए तो वमन करा देती है। कोलिक अर्थात् मकड़ी कुष्ठ रोग उत्पन्न करती है।[12] इस प्रकार रात्रिभोजन में कोई तिनका, कण्टक या अभक्ष्य रेत आदि पदार्थ आ जाएं तो शरीर में पीड़ा उत्पन्न करते हैं।[13]

आचार्य हेमचन्द्र ने आयुर्वेद का वह श्लोक भी उद्धृत किया है, जिसमें कहा गया है कि सूर्य के अस्त हो जाने पर हृदयकमल एवं नाभिकमल संकुचित हो जाते हैं।[14] इनके संकुचित हो जाने से इन अंगों की क्रियाशीलता में कुछ अन्तर आ जाता है।

6. अन्य मतानुसार रात्रिभोजन–त्याग– आचार्य हेमचन्द्र ने योगशास्त्र में ऐसे अनेक जैनेतर संदर्भो का उल्लेख किया है, जिनमें रात्रिभोजन–त्याग की पुष्टि की गई है। वे कहते हैं–

त्रयीतेजोमयो भानुरिति वेदविदो विदुः।
तत्करैः पूतमखिलं शुभं कर्म समाचरेत्।।

-योगशास्त्र, 3.55

सूर्य ऋक्, यजु एवं साम के तेज से युक्त होता है। अतः उसकी किरणों से पवित्रीकृत दिन में ही समस्त शुभकर्मो का आचरण करना चाहिए। यह भी कहा गया है कि अग्नि में आहुति, स्नान, श्राद्ध, देवपूजा, दान और विशेषतः भोजन रात्रि में नहीं करना चाहिए। हेमचन्द्रसूरि ने उल्लेख किया है कि रात्रिभोजन का तात्पर्य मात्र रात्रि में भोजन करना ही नहीं है, किन्तु दिन के आठवें भाग में सूर्य मंद हो जाता है, अतः उस अष्टम भाग को रात्रि जानना चाहिए।

दिवसस्याष्टमे भागे मन्दीभूते दिवाकरे।
नक्तं तद्धि विजानीयान्न नक्तं निशि भोजनम्।।

-योगशास्त्र, 3.57

मात्र निशि भोजन ही त्याज्य नहीं है, दिन के आठवें भाग में किया गया भोजन भी रात्रिभोजन की भांति त्याज्य है। देवी पुराण (78.4-5) में कहे गये श्लोकों को किंचित् परिवर्तन के साथ योगशास्त्र में इस प्रकार कहा गया है-

देवैस्तु भुक्तं पूर्वाह्णे मध्याह्ने ऋषिभिस्तथा।
अपराह्णे च पितृभिः सायाह्ने दैत्य-दानवैः।।
सन्ध्यायां यक्ष-रक्षोभिः सदा भुक्तं कुलोद्वह।
सर्ववेलां व्यतिक्रम्य रात्रौ भुक्तमभोजनम्।।

-योगशास्त्र, 3.58-59

देवताओं के द्वारा पूर्वाह्न में, ऋषियों के द्वारा मध्याह्न में, पितरों के द्वारा अपराह्न में, दैत्य और दानवों के द्वारा सायंकाल में तथा यक्ष-राक्षसों के द्वारा सन्ध्या समय भोजन किया जाता है। यह कथन युधिष्ठिर को सम्बोधित करते हुए कहा गया है। इन सब वेलाओं का उल्लंघन कर रात्रि में खाना अभोजन ही है।

स्कन्ध पुराण के कपालमोचन स्तोत्र में कहा गया है कि दिन में एक बार भोजन करने से अग्निहोत्र यज्ञ का फल मिलता है तथा सूर्यास्त से पूर्व भोजन करने पर तीर्थयात्रा का फल मिलता है।[15]

7. रात्रिभोजन से दुर्गति- महाभारत के शान्तिपर्व एवं पद्मपुराण में रात्रिभोजन को नरक का द्वार कहा गया है, किन्तु योगशास्त्र में आचार्य हेमचन्द्रसूरि रात्रिभोजन को तिर्यंच योनि का एक कारण मानते हैं। वे कहते हैं-

उलूक-काक-मार्जार-गृध्र-शंबर-सूकराः।
अहि-वृश्चिक-गोधाश्च जायन्ते रात्रिभोजनात्।।

-योगशास्त्र, 3.67

रात्रिभोजन से उल्लू, कौआ, बिलाउ, गिद्ध, सूअर, सर्प, बिच्छू, गोह आदि की योनि में जन्म होता है। आचार्य का कथन है कि उल्लू आदि का कथन तो उपलक्षण है, रात्रिभोजन का सेवन करने वाला अधम गति को प्राप्त होता है।

आचार्य हेमचन्द्रसूरि ने रात्रिभोजन के सम्बन्ध में एक कथानक का भी उल्लेख किया है। रामायण में सुना जाता है कि लक्ष्मण जब राम एवं सीता के साथ वन में गए तब कूर्वर नगर में महीधर राजा की पुत्री वनमाला से उनकी भेंट हुई। वनमाला ने लक्ष्मण का वरण किया। फिर राम के साथ लक्ष्मण जब देशान्तर को किसी कार्य से जाने लगे तब उनकी पत्नी वनमाला को विश्वास नहीं हुआ कि लक्ष्मण लौटकर आयेंगे। लक्ष्मण ने कई प्रकार की शपथ ली, किन्तु उनसे असन्तुष्ट होकर वनमाला ने लक्ष्मण को कहा कि यदि तुम

रात्रिभोजन करने वालों की शपथ लोगे तो तुम्हें जाने दूँगी, अन्यथा नहीं।

श्रावकों के लिए रात्रिभोजन-त्याग का विधान

श्रावकत्व की विशुद्धि के लिए रात्रिभोजन त्याज्य है। रात्रिभोजन-त्याग पाँच अणुव्रतों, तीन गुणव्रतों एवं चार शिक्षाव्रतों के पालन में सहायक है। रात्रिभोजन असंयम एवं अविवेक का प्रतीक है। बुद्धिमानजनों के द्वारा अकरणीय है। यह हिंसा आदि दोषों के कारण साधु के लिए जहाँ पूर्णतः त्याज्य है वहाँ श्रावक-श्राविका के लिए भी यह एक आवश्यक गुण है। यद्यपि आगमों में सीधे तौर पर श्रावकों के लिए रात्रिभोजन त्याग का विधान नहीं है, तथापि उत्तरवर्ती काल में अनेक ऐसे उल्लेख हैं, जिनके आधार पर यह कहा जा सकता है कि रात्रिभोजन-त्याग का विधान श्रावकों के लिए भी किया गया था। तत्त्वार्थसूत्र पर रचित टीका सर्वार्थसिद्धि में यह प्रश्न उठाया गया है कि श्रावक के पाँच अणुव्रत ही क्यों, छठा रात्रिभोजन-त्याग का अणुव्रत क्यों नहीं कहा गया? इसके उत्तर में कहा गया है कि प्रथम अणुव्रत की जो पाँच भावनाएँ हैं, उनमें रात्रिभोजन-त्याग का भी उल्लेख हो गया है, अतः उसका पृथक् से कथन नहीं किया गया। तत्त्वार्थवार्तिक एवं तत्त्वार्थ श्लोकवार्तिक में भी भट्ट अकलंक एवं आचार्य विद्यानन्द ने इसकी पुष्टि की है। दिगम्बर परम्परा में तत्त्वार्थसूत्र के मान्य पाठ में प्राणातिपात विरमण व्रत की पाँच भावनाओं के लिए पृथक् से सूत्रों का उल्लेख करते हुए कहा गया है- **'वाङ्मनोगुप्तीर्यादाननिक्षेपणसमित्या-लोकितपानभोजनानि पंच'**। अर्थात् वचनगुप्ति, मनोगुप्ति, ईर्या समिति, आदान-निक्षेपण समिति एवं आलोकितपान भोजन- ये पाँच भावनाएँ प्रथम प्राणातिपात विरमण व्रत की है। 'आलोकितपान भोजन' का तात्पर्य होता है प्रकाश में देखकर पानी एवं भोजन का सेवन करना। आचार्यो ने इसका अभिप्राय रात्रिभोजन-त्याग किया है, क्योंकि रात्रि में ऐसा प्रकाश नहीं होता जिसमें छोटे-छोटे प्राणियों का अवलोकन हो सके। उल्लेखनीय है कि आचारांगसूत्र के द्वितीय श्रुतस्कन्ध में भी 'आलोकितपानभोजन' नामक पंचम भावना का कथन हुआ है-**आलोइयपाणभोयणभोई से निग्गंथे नो अणालोइय-पाणभोयणभोई** **(आचारांग द्वितीय श्रुतस्कन्ध, अध्ययन-15, सूत्र-5)**

दिगम्बर परम्परा में कतिपय श्रावकाचार के ग्रन्थों में भी रात्रिभोजन-त्याग का उल्लेख प्राप्त होता है। रत्नकरण्ड श्रावकाचार में कहा गया है-

अन्नं पानं खाद्यं लेह्यं नाश्नाति यो विभावर्याम्।
स च रात्रिभुक्तिविरतः सत्त्वेष्वनुकम्पमानमनाः।।

-रत्नकरण्ड श्रावकाचार, 142

जो रात्रि में अन्न, पान, खाद्य एवं लेह्य का सेवन नहीं करता है वह प्राणियों पर

अनुकम्पाशील मन वाला होकर रात्रिभोजन से विरत होता है। लाटी संहिता (47-49) में कहा गया है कि रात्रिभोजन-त्याग के बिना दर्शनप्रतिमा हो ही नहीं सकती।

श्वेताम्बर परम्परा में आचार्य श्री हेमचन्द्रसूरि ने योगशास्त्र में रात्रिभोजन-त्याग को श्रावक के भोगोपभोग परिमाण व्रत के अन्तर्गत स्थान दिया है। इस व्रत में भोग एवं उपभोग के योग्य वस्तुओं का परिमाण किया जाता है। साथ ही इसमें अनेक वस्तुओं का वर्जन भी किया जाता है। वर्जन योग्य वस्तुओं के साथ हेमचन्द्राचार्य ने रात्रिभोजन-त्याग को भी स्थान दिया है-

मद्यं मांसं नवनीतं मधूदुम्बरपञ्चकम्।
अनन्तकायमज्ञातफलं रात्रौ च भोजनम्।।

-योगशास्त्र, 3.5

जिस प्रकार श्रावक के लिए मद्य, मांस, मक्खन, शहद, पाँच उदुम्बर फल, अनन्तकायिक वनस्पति एवं अज्ञातफल त्याज्य हैं, उसी प्रकार रात्रिभोजन का त्याग भी आवश्यक है।

रात्रिभोजन-त्याग का समावेश श्रावक के प्रथम, अष्टम एवं दसवें व्रत में भी हो सकता है। प्रथम प्राणातिपात विरमण व्रत की भावनाओं में आलोकित पान भोजन को स्थान दिया ही गया है। रात्रि में भोजन करना अनर्थदण्ड है। भोजन करने के लिए दिन का पर्याप्त समय होता है, अत: रात्रि में भोजन करना व्यर्थ ही हिंसादि दोषों को आमन्त्रित करना है। दसवें व्रत के अन्तर्गत 14 नियमों में रात्रि-भोजन त्याग की गणना की गई है। रात्रिभोजन त्याग करने पर ही ग्यारहवां पौषध व्रत नियम पालित होता है तथा बारहवें अतिथि संविभाग व्रत का पालन भी तभी हो सकता है जब कोई रात्रिभोजन का त्यागी हो।

संदर्भ:-

1. श्री प्रज्ञापनोपाङ्गसूत्र (मलयगिरिवृत्ति- हरिभद्रसूरिविवरणयुक्तं), द्वितीय विभाग, हर्षपुष्पामृत जैन ग्रन्थमाला, लाखा बावल, ग्रन्थांक 377, प्रथमावृत्ति, सन् 2001, पृ. 956-956
2. द्रष्टव्य, प्रज्ञापना सूत्र, आगम प्रकाशन समिति ब्यावर, ग्रन्थांक 27, अट्ठाईसवां आहारपद, पृ. 123, लोमाहारद्वार तथा पृष्ठ 124 मनोभक्षी द्वार।
3. द्रष्टव्य, वही, पृ. 123-124
4. जइ वि हु फासुगदव्वं कुंथु-पणगावि तह य दुप्पस्सा।
पच्चक्खनाणिणो वि हु राईभत्तं परिहरंति।।- निशीथभाष्य, गाथा 3411
5. (i) अपिच निशाभोजने क्रियमाणे अवश्यं पाकः सम्भवी, तत्र च षड्जीवनिकायव-

धोऽवश्यम्भावी, भाजनधावनादौ च जलगतजन्तुविनाशः जलोज्झने च भूमिगत कुन्थु-पिपीलिकादि-जन्तुघातश्च भवति, तत्प्राणिरक्षणकाङ्क्षया अपि निशाभोजनं न कर्तव्यम्।

योगशास्त्र, संपादक मुनि जम्बूविजय, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2009, तृतीय प्रकाश, पृ. 534

(ii) हरिभद्रसूरि ने भी सम्बोधप्रकरण में कहा है-

जीवाणं कुंथुमाईण घायणं भाण-धोयणाईसु।
एमाइरयणि भोयणदोसे को साहिउं तरइ।।-सम्बोधप्रकरण, 7.83

6. अह्नो मुखेऽवसाने च यो द्वे द्वे घटिके त्यजन्।
निशाभोजनदोषज्ञोऽश्नात्यसौ पुण्यभाजनम्।।-योगशास्त्र, 3.63

7. अकृत्वा नियमं दोषाभोजननाद्दिनभोज्यपि।
फलं भजेन्न निर्व्याजं न वृद्धिर्भाषितं विना।।-योगशास्त्र, 3.64

8. नैवाहुतिर्न च स्नानं न श्राद्धं देवतार्चनम्।
दानं वा विहितं रात्रौ भोजनं तु विशेषतः।।-योगशास्त्र, 3.56

9. ये वासरं परित्यज्य रजन्यामेव भुञ्जते।
ते परित्यज्य माणिक्यं काचमाददते जड़ाः।।
वासरे सति ये श्रेयस्काम्यया निशि भुञ्जते।
ते वपन्त्यूषरक्षेत्रे शालीन् सत्यपि पल्वले।।-योगशास्त्र, 3.65-66

10. दशवैकालिकसूत्र, अध्ययन 4, सूत्र-16

11. संसजज्जीवसङ्घातं भुञ्जाना निशि भोजनम्।
राक्षसेभ्यो विशिष्यन्ते मूढात्मानः कथं नु ते ?।।-योगशास्त्र, 3.61

12. उदल्लं बीय संसत्तं, पाणा णिवाडिया महिं।
दिया ताइं विवज्जिज्जा, राओ तत्थ कहं चरे।।
एयं च दोसं दट्ठूणं णायपुत्तेणं भासियं।
सव्वाहारं ण भुंजंति, णिग्गंथा राइभोयणं।।-दशवैकालिक सूत्र 6.25-26

13. द्रष्टव्य, योगशास्त्र, 3.51-52

14. हृन्नाभिपद्मसङ्कोचश्चण्डरोचिरपायतः।
अतो नक्तं न भोक्तव्यं, सूक्ष्मजीवादनादपि।।-योगशास्त्र, 3.60

15. मेधां पिपीलिका हन्ति यूका कुर्याज्जलोदरम्।
कुरुते मक्षिका वान्तिं कुष्ठरोगं च कोलिकः।।-योगशास्त्र, 3.50

16. एक भक्ताशनान्नित्यमग्निहोत्रफलं भवेत्।
अनस्त भोजनान्नित्यं तीर्थयात्राफलं भवेत्।।-स्कन्द पुराण, कपालमोचन स्तोत्र

-3 के 24-25, कुडी हाउसिंग बोर्ड, जोधपुर-342005 (राज)

संगोष्ठी–आलेख

रात्रिभोजन-त्याग का आर्थिक-सामाजिक पक्ष

डॉ. दिलीप धींग

सृष्टि में मुख्यत: दो प्रकार के प्राणी होते हैं – दिवाभोजी (दिन में खाने वाले) और निशाभोजी (रात में खाने वाले)। कुछ प्राणी अहर्निश भोजी भी होते हैं। मनुष्य मूलत: दिवाभोजी शाकाहारी प्राणी है। मनुष्य सुबह जागता है, इष्ट–स्मरण करता है और दिनभर अपना कामकाज करके रात को विश्राम करता है। किसी कारण से रात में खाने वाले व्यक्ति भी सूरज ढलने के बाद जल्दी ही अपनी आहार–चर्या पूरी करके नींद लेना चाहते हैं। रात्रि में निद्रा प्राकृतिक व शारीरिक अनिवार्यता है। रात्रि में भोजन मानव की अनिवार्यता नहीं है। वैज्ञानिक डार्विन ने बन्दर को मानव का पूर्वज कहा है। बन्दर भी दिन में खाने वाला शाकाहारी प्राणी है। जो प्राणी रात में खाते हैं, उनकी आँखें रात के अंधेरे में भी देख पाने में समर्थ होती हैं अथवा उनकी प्रकृति और क्षमता रात में भोजन जुटाने के लिए अनुकूल होती है। मानव के साथ ऐसा नहीं है। अत: मानव के लिए रात में खाना प्रकृति के अनुरूप नहीं है। मानव के लिए दिन में भोजन करना प्राकृतिक रूप से पूरी तरह अनुकूल है। मानव शरीर की प्रकृति और कार्यप्रणाली के अनुसार दिवाभोजन स्वास्थ्य के लिए बेहद हितकारी सिद्ध हुआ है। जो वस्तु तन–मन के स्वास्थ्य के लिए हितकर होती है, वह आर्थिक दृष्टि से भी लाभप्रद होती है। जैनाचार में प्राकृतिक जीवनशैली को आध्यात्मिक जीवन के लिए सहायक व उन्नायक बताया गया है। रात्रिभोजन–निषेध के साथ भी यह तथ्य लागू होता है।

जैनों की पहचान

जैन धर्म और समाज में रात्रिभोजन–त्याग एक पहचान के रूप में कायम है। समस्त जैन साधु–साध्वी आजीवन रात्रिभोजन–त्याग के व्रत को शत–प्रतिशत निभाते/पालते हैं। उनके अच्छे स्वास्थ्य, साधनामय जीवन और तेजस्वी आभामण्डल का एक रहस्य उनकी दिन के उजाले में सम्पन्न समयबद्ध और संयमित आहार–चर्या भी है। अनेक जैन श्रावक–श्राविकाएँ भी नियमपूर्वक रात्रि में भोजन नहीं करते हैं। अनेक जैन गृहस्थ पूर्ण रूप से रात्रिभोजन का त्याग नहीं कर पाते हैं, लेकिन वे रात्रिभोजन–त्याग का अभ्यास करते हैं

* आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म. सा. के सान्निध्य में 11 एवं 12 अक्टूबर 2014 को कोटा में आयोजित 'रात्रिभोजन : समस्याएँ और समाधान' विषयक राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी में प्रस्तुत आलेख।

तथा पूर्ण रात्रिभोजन-त्याग का लक्ष्य रखते हैं। जैन समाज में रात्रिभोजन का पूर्ण त्याग नहीं करने वाले भी किसी न किसी रूप में, आंशिक रूप में रात्रिभोजन का वर्जन कर लेते हैं। साँझ ढलने के बाद जल्दी ही भोजन कर लेना, देर रात में भोजन नहीं करना, पर्युषण तथा अन्य पर्व-तिथियों पर रात्रिभोजन छोड़ना, सूर्योदय के बाद जलपान करना आदि आंशिक रात्रिभोजन-त्याग के उदाहरण हैं। रात्रिभोजन के प्रति इस उदासीनता से व्यक्ति के तन, मन और बुद्धि पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है। इससे व्यक्ति की संकल्प-शक्ति और रचनात्मक दृष्टि में अभिवृद्धि होती है। तेजी से बदलते समय-चक्र में भी जैनाचार की यह विशेषता (रात्रिभोजन-निषेध) किसी न किसी स्वरूप में विद्यमान है। यह जैन समाज की सजगता का सुपरिणाम है।

छठा व्रत

रात्रिभोजन-त्याग का सन्देश भगवान महावीर की विशिष्ट और अनुपम देन है। भगवान महावीर ने अहिंसा, संयम और तप को धर्म बताया।[1] रात्रिभोजन-त्याग एक ऐसा विशिष्ट व्रत या नियम है, जिसके पालन करने से अहिंसा, संयम और तप; तीनों की एक साथ आराधना हो जाती है। जैन ग्रंथों में रात्रिभोजन-त्याग को 'नित्य-तप का साधन' कहा गया है।[2] जैन श्रमणाचार में रात्रिभोजन-त्याग को छठे महाव्रत का दर्जा दिया गया है। श्रमण-श्रमणियों के लिए रात्रिभोजन-त्याग को अनिवार्य बताया गया है।[3] उनके लिए रात्रि में जल-सेवन भी निषिद्ध है। साधु-साध्वियों के लिए कहा गया है कि वे सूर्यास्त होने के पर्याप्त समय पूर्व ही अपनी आहारचर्या सम्पन्न कर लें। सूर्यास्त होते-होते भी कोई श्रमण आहार करता है तो उसे अनुचित बताया गया है।[4] साधु-साध्वियों में अन्य महाव्रतों के अपवाद मिल सकते हैं, पर रात्रिभोजन-त्याग का कोई अपवाद नहीं है। इससे रात्रिभोजन-त्याग की विशिष्टता और महत्ता का पता चलता है। चारित्तपाहुड में ग्यारह प्रकार के संयमाचरण में रात्रिभोजन-त्याग को समाविष्ट किया गया है।[5] अनेक ग्रंथों में श्रावक के लिए भी रात्रिभोजन-त्याग को छठे अणुव्रत की संज्ञा दी गई है।[6] कुछ मनीषियों ने रात्रिभोजन-त्याग को 'आलोकित भोजनपान' की संज्ञा दी है।[7] 'आलोकित भोजनपान' का आशय है दिन के आलोक (प्रकाश) में आहार-पानी सम्पन्न कर लेना। इस प्रकार श्रावकाचार में भी यानी गृहस्थ जीवन में भी रात्रिभोजन-त्याग का बहुत महत्त्व है। इससे व्यक्ति के स्वास्थ्य, सौभाग्य और सम्पन्नता पर अनुकूल प्रभाव होता है।

स्वास्थ्य और समृद्धि

यह एक सुस्थापित, प्रयोगसिद्ध तथा अनुभूत तथ्य है कि रात्रिभोजन का त्याग

स्वास्थ्य के लिए बहुत हितकर है। दिवाभोजन (दिन में भोजन) करने वालों की पाचन-प्रणाली को रात्रि में विश्राम मिलता है। शरीर के एक महत्त्वपूर्ण संयंत्र (पाचन-संस्थान) को पर्याप्त विश्राम मिलने से शरीर की अन्य प्रणालियों को भी पर्याप्त ऊर्जा और ऑक्सीजन की सहज आपूर्ति हो जाती है। इससे तन, मन और मस्तिष्क अधिक स्वस्थ बनते हैं। व्यक्ति की रचनात्मकता और सक्रियता बढ़ जाती है। इसका सुप्रभाव व्यक्ति के आर्थिक जीवन पर भी होता है।

प्राणी-विज्ञान, शरीर-विज्ञान, आयुर्वेद तथा अन्य चिकित्सा पद्धतियों के अनुसार मानव को दिन में भोजन कर लेना चाहिये। ऐसे अनेक व्यक्ति, जिन्हें कई प्रकार की शारीरिक तकलीफें व बीमारियाँ थीं, रात्रिभोजन छोड़ने के बाद उन तकलीफों व बीमारियों से उन्हें राहत या मुक्ति मिली। कमरदर्द, मोटापा, अनिद्रा, अतिनिद्रा या अनियमित निद्रा, उच्च या निम्न रक्तचाप, हृदय सम्बन्धी बीमारियाँ आदि अनेक रोगों का एक कारण रात्रिभोजन भी है। जो लाभ अनेक प्रकार की दवाइयों से नहीं हो पाते हैं, वे लाभ भोजन में नियमितता तथा रात्रिभोजन वर्जित करने से प्रत्यक्ष देखे जाते हैं। रात्रिभोजन त्याग करने से बेहतर स्वास्थ्य के साथ अनेक लाभ होते हैं। कुछ लाभ तथा उनकी आर्थिक मीमांसा इस प्रकार है -

1. **कार्यक्षमता और कुशलता-** कार्यक्षम और कार्यदक्ष व्यक्ति अपने व्यापार, व्यवसाय, नौकरी या पेशे के कार्यों को अच्छी तरह से निष्पादित करता है। अच्छा कार्य करने से वह अपने आपको संतुष्ट महसूस करता है। उसकी व्यावसायिक चुनौतियाँ झेलने की क्षमता बढ़ जाती है। फलत: वह अपने व्यवसाय और व्यवसाय के लाभों को बढ़ाता है।

2. **चिकित्सा पर खर्च नहीं-** स्वस्थ व्यक्ति अनेक प्रकार की दवाइयों, चिकित्सकों और चिकित्साओं पर होने वाले समय, श्रम और खर्चों को बचा लेता है। उसकी समृद्धि बहुगुणित रूप से बढ़ती है।

3. **ज्ञान-ध्यान का विकास-** रात्रि का समय मुख्यत: अध्ययन, मनन, चिन्तन, ध्यान और उपासना के साथ प्रगाढ़ व निश्चिन्त निद्रा के लिए होता है। जब भोजन दिन में कर लिया जाता है तो रात में ज्ञान-ध्यान की साधना का समय मिल जाता है तथा साधना बेहतर ढंग से होती है। ऐसी साधना करने के बाद ली गई निद्रा गहरी विश्रान्ति देती है और व्यक्ति को नवीन ऊर्जा व स्फूर्ति से भर देती है।

दिवाभोजन और ब्रह्मचर्य

रात्रिभोजन-निषेध का सम्बन्ध जितना अहिंसा और आरोग्य से है, उतना ही संयम, सदाचार और ब्रह्मचर्य से भी है। जो व्यक्ति सूर्यास्त पूर्व ही अपना आहार ग्रहण कर लेता

है, सोने के समय तक उसका पेट हल्का-फुल्का और चित्त प्रसन्न हो जाता है। ऐसे में ब्रह्मचर्य का पालन उसके लिए बहुत आसान हो जाता है। गणधर सुधर्मा भगवान महावीर की स्तुति में कहते हैं - **'से वारिया इत्थि सराइ भत्तं'**।[8] यहाँ रात्रिभोजन के साथ ही वासना-विलास का निषेध किया गया है। रसना और वासना का गहरा रिश्ता है। यही रिश्ता रात्रिभोजन और वासना का भी है। पुरुषार्थसिद्ध्युपाय में भी इस रिश्ते का जिक्र किया गया है।[9] जैनाचार में विशेष साधना करने वाले श्रावक प्रतिमाएँ स्वीकार करते हैं। श्वेताम्बर परम्परा के अनुसार श्रावक की ग्यारह प्रतिमाओं में पाँचवीं नियम प्रतिमा में रात्रिभोजन-त्याग का समावेश है तथा छठी ब्रह्मचर्य प्रतिमा बताई गई है।[10] दिगम्बर परम्परा के अनुसार छठी प्रतिमा रात्रिभुक्तित्याग और सातवीं प्रतिमा ब्रह्मचर्य का पालन है।[11] इससे रात्रिभोजन त्याग और ब्रह्मचर्य के सहसम्बन्ध का पता चलता है। कितने ही व्यक्ति चाहते हुए भी ब्रह्मचर्य की साधना नहीं कर पाते हैं। ऐसे व्यक्तियों को सादा-सात्त्विक आहार करना चाहिये तथा रात्रिभोजन-त्याग की दिशा में आगे बढ़ना चाहिये। अनेक अपराध और अनाचार रात के अंधेरे में होते हैं या किये जाते हैं। यदि सूक्ष्म दृष्टि से विचार करें तो समाज में सदाचार की स्थापना में रात्रिभोजन त्याग का भी महत्वपूर्ण योगदान हो सकता है।

तीन नियम

सामाजिक मूल्यों के संरक्षण और सामुदायिक सम्पन्नता की वृद्धि हेतु रात्रिभोजन-त्याग के महत्त्व पर बहुपक्षीय विचार किया जाना चाहिये। लगभग चौबीस शताब्दियों पूर्व जब ओसवाल वंश की स्थापना हुई थी, तब जैन धर्म स्वीकार करने वाले समस्त उपकेशनगरवासियों (ओसियां निवासियों) को आचार्य रत्नप्रभसूरि ने तीन नियम करवाये थे -

1. सप्त व्यसनों (मांसाहार, मदिरापान, परस्त्रीगमन, वेश्यागमन, शिकार, चोरी व जुआ) का त्याग।
2. पंच परमेष्ठी के प्रति आस्था।
3. रात्रिभोजन का निषेध।

यह सर्वविदित है कि साधारण लोगों के एक समूह ने इन तीन नियमों के बल पर हर क्षेत्र में असाधारण ऊँचाइयों का वरण किया, अपना विस्तार किया और अपनी विशिष्ट पहचान बनाई। यहाँ एक बात और स्पष्ट होती है कि किसी भी नियम के साथ आस्था, निष्ठा और बुराइयों का त्याग भी आवश्यक है।

गहराई से विचार करें तो इन तीन नियमों में अन्तः सम्बन्ध भी विद्यमान है। अन्य श्रेष्ठ

नियमों में भी पारस्परिक अन्तः सम्बन्ध विद्यमान रहता है। एक सद्गुण अन्य सद्गुणों के विकास में सहायक बनता है। आज हर व्यक्ति सिर्फ आर्थिक उन्नति के लिए लालायित रहता है, लेकिन आर्थिक उन्नति के लिए गैर-आर्थिक सद्गुणों का विकास भी आवश्यक है। जीवन की समग्रता में ही सर्वांगीण उन्नति और सच्ची समृद्धि सन्निहित है।

योगनिद्रा

आहार की भाँति निद्रा भी शरीर के लिए आवश्यक है। यह तथ्य है कि रात्रिभोजन-त्याग का सम्बन्ध अच्छी नींद से भी है। शरीर को विश्राम के साथ ही पेट और पाचन-तंत्र को भी विश्राम मिल जाने से निद्रा प्रगाढ़ और नवस्फूर्तिदायिनी बन जाती है। प्रकारान्तर से कहा जा सकता है कि रात्रिभोजन-निषेध तनाव कम करने में सहायक बन सकता है। तनाव और अनिद्रा पर होने वाले खर्च रात्रिभोजन-त्याग से बचाये जा सकते हैं। इसके अलावा रात्रिभोजन-त्याग करने वाला अपनी निद्रा को आध्यात्मिक निद्रा बना सकता है। सूर्यास्त-पूर्व भोजन कर लेने से शरीर निद्रा-पूर्व तक स्वाध्याय, ध्यान, परमेष्ठी-स्मरण आदि के लिए एकदम अनुकूल हो जाता है। जो व्यक्ति निद्रा लेने से पूर्व स्वाध्याय, ध्यान, नवकार-स्मरण आदि करता है अथवा ध्यान करके निद्रा के रूप में विश्राम करता है, उसकी निद्रा योगनिद्रा हो जाती है। उसका थोड़ी देर का आत्म-चिन्तन या ध्यान सम्पूर्ण निद्रा-काल जितना लाभकारी हो जाता है। अशुभ स्वप्नों से बचने के लिए भी निद्रा-पूर्व ध्यान अथवा नमस्कार महामंत्र का स्मरण बहुत हितकारी माना जाता है। लेकिन निद्रा-पूर्व ध्यान को प्रभावशाली बनाने के लिए सबसे प्रमुख तथ्य है - सूर्यास्त-पूर्व आहार। जो व्यक्ति रात्रिभोजन त्याग करता है और योगनिद्रा लेता है, उसकी थोड़ी-सी निद्रा भी अधिक थकान मिटाने वाली और शीघ्र स्फूर्ति देने वाली हो जाती है। योग-निद्रा लेने वाला अगले दिन ताजगी के साथ जल्दी उठ सकता है। वह भलीभाँति अपनी प्रात:कालीन साधना-उपासना कर सकता है और पुनीत संकल्पों के साथ अपने नये दिन का शुभारंभ कर सकता है। इस तरह उसके पुण्य और पुरुषार्थ में अभिवृद्धि होती है तथा दिनचर्या और जीवनचर्या में एक ऊर्जा और नियमितता का समावेश हो जाता है।[12] ये सारी अनुकूलताएँ जीवन में शान्ति और समृद्धि लाती हैं।

स्नेहवर्द्धक भोज

जैन गृहस्थाचार में रात्रिभोजन-त्याग का नियम एक विशिष्ट पहचान के रूप में स्थापित रहा है। व्यक्तिगत जीवन में गृहस्थ के लिए सम्पूर्ण रात्रिभोजन-त्याग भले ही अनिवार्य नहीं रहा, लेकिन जैन समाज में सामूहिक भोज (जीमण) परम्परागत ढंग से दिन में ही हुआ करते थे। जैन समाज में दिन का दूसरा सामूहिक भोजन सायंकालीन ही होता था,

रात्रिकालीन नहीं। इसका प्रभाव अन्य समाजों पर भी पड़ता था। रात को खाने वाले भी जैन समाज के सायंकालीन सामूहिक भोज (प्रीतिभोज या स्नेहभोज) में सूर्यास्त पूर्व ही जीमने आते थे। जैनेतर समाज के सायंकालीन स्नेहभोज में जब जैन समाज के व्यक्तियों को आमंत्रित किया जाता था तो उनके लिए सूर्यास्त-पूर्व जीमने की व्यवस्था भी की जाती थी। यही नहीं जमींकन्दरहित भोजन की व्यवस्था भी की जाती थी। कई स्थानों पर जैनेतर समाज के द्वारा आयोजित स्नेहभोज में आज भी इस प्रकार की व्यवस्थाएँ देखने में आती हैं। वर्तमान में ऐसी व्यवस्था जैनों के द्वारा आयोजित अपने ही स्नेहभोज में की जाती हैं।

इस जीमने और जिमाने के व्यवहार में रात्रिभोजन-त्याग का नियम कभी बाधक नहीं बना; बल्कि दो समुदायों के स्नेह-सद्भाव को बढ़ाने वाला ही सिद्ध हुआ। इस नियम के निमित्त से एक-दूसरे की भावना का समादर किया जाता रहा। आजकल कुछ लोग घर में तो रात को नहीं खाते हैं, लेकिन जीमण के लिए रात्रिभोजन की छूट रखते हैं। यह विरोधाभास है। वस्तुतः घर के रात्रिभोजन की तुलना में जीमण का रात्रिभोजन अधिक पापजनक और हानिकारक होता है। इसी प्रकार जैनाचार की दृष्टि से घर के रात्रिभोजन की अपेक्षा होटल या रेस्तरां का रात्रिभोजन अधिक पापकारी है। आचार्य हस्ती के शब्दों में- "घर के भोजन में सद्भावना का बल है। शुद्धता और भावना बाहर होटलों में कहाँ?[13] अतः नियम के ग्रहण, पालन और आगार में क्रम, आवश्यकता आदि का पूरा विवेक रखना चाहिये।"

पश्चिमी संस्कृति और पैसे के अतिशय प्रभाव के कारण दिन में जीमण करने की जैन समाज की यह परम्परागत पहचान कम होती जा रही है। उसका सामाजिक जनजीवन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। पहले तो व्यक्तिगत तौर पर भी बहुत सारे व्यक्ति रात्रिभोजन के त्यागी होते थे; लेकिन अब सामूहिक रूप में भी देर रात तक खाया और खिलाया जाता है। आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरण की दृष्टि से रात्रिकालीन सामूहिक भोज अनेक प्रकार से नुकसानदायक होते हैं।

आर्थिक-सामाजिक प्रभाव

रात्रिकालीन सामूहिक भोज प्रायः आडम्बर और वैभव-प्रदर्शन के साथ खुले उद्यानों में आयोजित किये जाते हैं। कुछ धनाढ्य लोग अपने अहंकार और वैभव का प्रदर्शन करते हुए ऐसे रात्रिभोजों में कुछ घण्टों में अनाप-शनाप पैसा पानी की तरह बहा देते हैं। निम्न मध्यवर्गीय जनजीवन पर इस प्रकार के प्रदर्शनों का अच्छा व अनुकूल प्रभाव नहीं पड़ता है।[14] आडम्बरपूर्ण खर्चीली शादियों में-से यदि सामूहिक रात्रिभोज को निकाल दिया जाए तो अनेक प्रकार के आडम्बरों, अपव्ययों और फूहड़ताओं पर सहज ही अंकुश लग सकता

है। ऐसा करने से कौटुम्बिक गौरव, सामाजिक अहिंसा और सामुदायिक सद्भाव जैसे मूल्य अधिक प्राणवान और शक्तिशाली बन सकेंगे।

यह तथ्य है कि दिन में होने वाले सामूहिक भोज की अपेक्षा रात्रि में होने वाले सामूहिक भोज में खर्च भी अधिक होता है और जूठन भी अधिक होती है। यदि इन भोजों को दिन में कर लिया जाये तो धन-धान्य और बिजली का अपव्यय तो रुकेगा ही, समाज में अनावश्यक होड़ा-होड़ी और देखादेखी में भी कमी आएगी। बचे हुए संसाधनों का उपयोग उत्पादक-कार्यों में हो सकेगा। सामूहिक रात्रिभोजों का निषेध यानी समाज को सादगी, समता और समृद्धि का सन्देश।

कभी-कभी देखा जाता है कि खर्चीले सामूहिक रात्रिभोज में भोजन परोसने के लिए भाड़े की किशोरियों और युवतियों को भी नियुक्त किया जाता है। नियुक्त तरुणियों को देर रात तक समारोह स्थल पर रुकना होता है। नारी के व्यवसायीकरण का यह भी एक रूप है। किसी कुलीन परिवार के सामूहिक रात्रिभोज में इस प्रकार की व्यवस्था गरिमामय नहीं लगती है। ऐसी व्यवस्थाओं में आतिथ्य का गौरव तो कम और पैसे का नकारात्मक प्रदर्शन अधिक होता है।

पर्यावरण पर प्रभाव

खुले उद्यानों में हरी-हरी दूब पर सामूहिक रात्रिभोज से छोटे-बड़े अनेक प्रकार के जीव पीड़ित होते हैं। रात के समय विद्युत के प्रकाश में खुले में भट्टियाँ लगाकर गरमागरम भोजन बनाना संस्कृति (जैनाचार) और प्रकृति (पर्यावरण) की दृष्टि से उचित नहीं लगता है। इसके अलावा उद्यानों में तथा उद्यानों के आसपास वृक्ष होते हैं, जिन पर अनेक पंछी रात्रि में विश्राम करते हैं और नींद लेते हैं। यहाँ तक कि सूर्यास्त होने पर पेड़-पौधे भी सो जाते हैं। जब उद्यानों में रात्रिकालीन स्नेहभोज होता है तो उसके साथ आतिशबाजी, शोरगुल, गाजे-बाजे, तेज आवाज में गीत-संगीत (ऑर्केस्ट्रा) और धूम-धड़ाके भी होते हैं। रात में ऐसा कोलाहल जीव-जगत में हलचल मचाता है और उन्हें भयाकुल कर देता है। इस प्रकार के शोरगुल तथा भय से पशु-पक्षियों की प्राकृतिक जीवनचर्या में व्यवधान होता है। यह व्यवधान पर्यावरण को नुकसान पहुँचाता है।

इंसान की ज्यादतियों की वजह से ही नई पीढ़ी झिंगुर के संगीत, भौंरे की गुंजार और जुगनू की चमक से अपरिचित हो रही है। आज हमारे घरों व कॉलोनियों से फुदकती-चहकती गौरेया और गुटर-गूं करते कबूतर गायब हैं। उद्यानों में लगे पेड़ों की डालियाँ सूनी-सूनी हैं। उन पर पंछी अपना नीड़ नहीं बनाते हैं और रैन बसेरा भी नहीं करते हैं। अब उन डालियों पर रंग-बिरंगे बिजली के बल्व टांग दिये गये हैं। कहीं-कहीं लाउड-स्पीकर

लगा दिये गये हैं। ऐसी अनेक प्रकार की कृत्रिमताएँ रात्रिकालीन भोजस्थलों पर देखी जा सकती हैं। आज दुनिया में समष्टिगत अर्थशास्त्र के अन्तर्गत पर्यावरण-आर्थिकी की बहुत चर्चा होती है। पर्यावरण, पारिस्थितिकी और जैव-विविधता को नुकसान पहुँचाकर की गई आर्थिक उन्नति धरती को अवनति की ओर धकेलती है। सामूहिक रात्रिभोज का निषेध करके अनेक प्रकार के दूषण, प्रदूषण और अपव्यय रोके जा सकते हैं।

रात्रि में भोजन-निर्माण :

जैन दृष्टि से रात्रिभोजन के सम्पूर्ण निषेध के लिए दिन में तैयार किये गये आहार को दिन में ही ग्रहण करने की बात भी कही गई है। रात में बनाना और रात में खाना, दिन में बनाना और रात में खाना तथा रात में बनाना और दिन में खाना; ये तीनों ही विकल्प किसी न किसी दृष्टि से रात्रिभोजन की श्रेणी में माने गये हैं।[15] रात्रिभोजन के इन तीन विकल्पों की बिन्दुवार प्रस्तुति इस प्रकार है -

1. रात में बनाना और रात में ही खाना।
2. दिन में बनाना और रात में खाना।
3. रात में बनाना और दिन में खाना।

पहला विकल्प सुस्पष्ट रूप से रात्रिभोजन है। दूसरा विकल्प भी सुस्पष्ट रूप से रात्रिभोजन है, क्योंकि भोजन का सेवन रात को ही किया जा रहा है। तीसरे विकल्प में जैन दर्शन की सूक्ष्मता और बहुआयामिता प्रकट होती है। रात को नहीं खाना, यह एक सुपरिचित तथा समझने-समझाने योग्य तथ्य है। लेकिन पहले और तीसरे बिन्दु (विकल्प) में रात में भोजन बनाने का भी निषेध किया गया है। रात को भोजन नहीं बनाना यानी रात को भोजन का निर्माण नहीं करना, रात को भोजन नहीं पकाना, रात को भट्टी या चूल्हा नहीं जलाना। रात को भोजन पकाने के कारण अनेक जीव-जन्तुओं की हिंसा होती है।[16] जिससे जैव-विविधता को नुकसान पहुँचता है।

पारिवारिक स्तर पर विचार करें तो सूर्यास्त-पूर्व भोजन सम्बन्धी कार्य सम्पन्न हो जाने पर भोजन बनाने वाली गृहिणियों को पर्याप्त विश्राम मिल जाता है और कुछ रचनात्मक कार्य करने के लिए समय भी। ऐसा होने से घर की महिला सदस्य स्वाध्याय, ध्यान, बच्चों को पढ़ाना आदि के लिए आसानी से समय का नियोजन कर सकती हैं। यह स्थिति परिवार और समाज की उन्नति में बहुत सहायक बनती है।

पैक्ड फूड और रात्रिभोजन

रात को भोजन तैयार नहीं करने-करवाने में अहिंसा, आरोग्य, पर्यावरण आदि से

सम्बन्धित बिन्दु भी जुड़े हुए हैं। वर्तमान सन्दर्भ में इस तथ्य की आर्थिक और सामाजिक मीमांसा चौंकाने वाले तथ्य प्रकट करती है। वर्तमान की अर्थव्यवस्था पर उपभोक्तावाद और बाजारवाद हावी है। बाजारवादी हर चीज़ का व्यवसायीकरण करके उसे बिकाऊ बना देते हैं। हम संसार को परिवार मानते हैं, वे संसार को बाजार मानते हैं। उन्हें हर आदमी उपभोक्ता नजर आता है। बाजारवादियों ने पानी जैसी सर्वसुलभ आवश्यक चीज़ को बिकाऊ बना दिया और सिर्फ पेयजल का अरबों-खरबों का व्यापार-जाल फैला दिया।

भारतीय शाकाहारी और स्वावलम्बी जीवनशैली की तरफ देखें तो पता चलेगा कि हमारे रसोईघर में बनने वाले आहार में शरीर को उत्तम पोषण देने वाले सभी तत्त्व सहज रूप से विद्यमान रहते थे तथा आज भी वे सारी पोषक वस्तुएँ हमारी पारम्परिक रसोई में विद्यमान हैं या हो सकती हैं। लेकिन हमारे प्रमाद के कारण हमारी रसोई में बाजार और बाजारवाद घुस गया है। डिब्बाबन्द भोजन, पैक्ड या पैकेज्ड फूड और बेकरी-उत्पाद हमारी घर की थाली में किसी न किसी शक्ल में आ गये हैं। अनेक अध्ययन और सर्वेक्षण बताते हैं कि बाजार में बिकने वाली अधिकांश पैकेटबन्द खाने-पीने की चीजें कीमत, सेहत और गुणवत्ता की दृष्टि से हानिकारक होती है।[17]

जिन वस्तुओं की आवश्यकता नहीं है; जो न तो उपयोगी हैं, न पोषक हैं और न ही किफायती हैं; आकर्षक पैकेट में उपलब्ध उन चीज़ों को स्वाद और शौक के नाम पर खरीदा और खाया जा रहा है। कारखानों (फैक्ट्रियों) में तैयार भोजन की उपयोगिता और अनुपयोगिता के अनेक आर्थिक और गैर-आर्थिक पक्ष हो सकते हैं, लेकिन यहाँ जैनाचार के उस बिन्दु पर चर्चा की जा रही है, जिसमें कहा गया है कि भोजन का निर्माण रात्रि में नहीं होना चाहिये। आज पैकेज्ड खाद्य वस्तुओं के उत्पादन के लिए बड़े-बड़े उद्योग कार्य कर रहे हैं। अनेक खाद्यपदार्थ उत्पादक कम्पनियों में आठ-आठ घण्टों के तीन विभागों (शिफ्टों) में रात-दिन संयंत्र संचालित रहते हैं। इस आधार पर कहा जा सकता है कि लगभग पचास प्रतिशत पैक्ड खाद्य-उत्पादों (ठोस व तरल) का निर्माण रात्रि के समय में हो रहा है। अत: पूर्ण रात्रिभोजन त्यागी के लिए बाजार में उपलब्ध पैक्ड खाद्य पदार्थ स्वीकार्य नहीं हो सकते हैं। इसके अलावा जैन चौके या रसोईघर में यतना और शुद्धता के जिन उच्च व सूक्ष्म मापदण्डों का ध्यान रखा जाता है, उन मापदण्डों का खयाल बाजार में उपलब्ध खाद्य-पदार्थों के निर्माण में नहीं रखा जाता है। यदि इन कारखानों के खाद्य-उत्पादों की कच्ची सामग्री की गुणवत्ता, निर्माण-प्रक्रिया, पैकिंग सामग्री, वितरण-व्यवस्था, परिवहनजनित प्रदूषण, लुभावने विज्ञापन, कर्मचारियों व मजदूरों की दशा आदि पर विचार करें तो अनेक विरोधाभासी जानकारियाँ मिल सकती हैं।

देश की अधिकांश आबादी गाँवों में रहती है तथा अधिकांश आबादी मध्य और निम्न वर्ग से ताल्लुकात रखती है। आश्चर्य होता है कि बाजार के महंगे और कम पौष्टिक खाद्य पदार्थों की गिरफ्त में आम आदमी भी आ गया है। बाजार में उपलब्ध कृत्रिम चीज़ों (प्रिज़र्वेटिव्ज़, एडिटिव्ज़) और उपायों (फ्रीजिंग व रेफ्रिजरेटिंग) से संरक्षित किये गये पुराने खाद्य-पदार्थों को छोड़कर घर में स्नेहभाव से बनाई ताजा साग-रोटी खाकर व्यक्ति अपने स्वास्थ्य और बजट को बेहतर बना सकता है।

ऐसे अनेक तथ्यों के उजाले में कहा जा सकता है कि कारखानों में निर्मित खाने-पीने की चीजें जैनाचार के मापदण्डों पर खरी नहीं उतरती हैं। रात्रिभोजन का त्याग करने वालों को बाजार में उपलब्ध पैक्ड फूड का त्याग अवश्य करना चाहिये। यदि सिर्फ पैक्ड फूड का त्याग भी किया जाता है तो उसमें अप्रत्यक्ष व आंशिक रूप में रात्रिभोजन का त्याग भी समाविष्ट माना जा सकता है। वैसा करने से अर्थ और सेहत का लाभ तो होगा ही। इसके साथ ही पैक्ड फूड के निर्माण, पैकिंग, संरक्षण, विपणन, वितरण और विक्रय से जुड़ी अनेक प्रकार की अयतनाओं और अनियमितताओं के दुष्प्रभावों से भी बचा जा सकेगा।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि रात्रिभोजन निषेध के अनेक लाभकारी पहलू हैं। यह नियम व्यष्टि अर्थशास्त्र तथा समष्टि अर्थशास्त्र, दोनों के लिए लाभकारी है। समाज, व्यवसाय और जनस्वास्थ्य से जुड़े कुछ महत्वपूर्ण बिन्दु ऐसे हैं, जिनका सहसम्बन्ध रात्रिभोजन-निषेध के साथ भी है। ऐसे ही सामाजिक और आर्थिक बिन्दुओं को केन्द्र में रखकर यहाँ थोड़ी चर्चा की गई है। वैयक्तिक और सामूहिक स्तर पर होने वाले रात्रिभोजों के विभिन्न प्रभावों का सर्वेक्षणात्मक अध्ययन किया जाए तो और भी अनेक उपयोगी तथ्य मिल सकते हैं।

सन्दर्भ

1. दशवैकालिक-सूत्र 1.1
2. जैन, सागरमल (डॉ.), भारतीय आचार-दर्शन : एक तुलनात्मक अध्ययन (भाग-2), पृष्ठ 377
3. दशवैकालिक सूत्र 4.16, उत्तराध्ययन सूत्र, अध्ययन 19, मूलाचार 112-113
4. उत्तराध्ययन सूत्र 17.16
5. चारित्रपाहुड, गाथा 22
6. (क) निर्ग्रन्थ प्रवचन (जैन दिवाकर चौथमलजी), हिन्दी भाष्य (पं. शोभाचन्द्र भारिल्ल), नौवाँ अध्ययन, आठवाँ श्लोक, पृष्ठ 335

   (ख) आचारसार, 5.70
7. भास्कर, भागचन्द (डॉ.), 'जैन दर्शन और संस्कृति का इतिहास', पृष्ठ 269

8. सूत्रकृतांग सूत्र, छठा अध्ययन (वीर-स्तुति)
9. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय (अमृतचन्द्राचार्य), गाथा 132
10. दशाश्रुतस्कंध 6 दशा
11. समंतभद्रकृत श्रावकाचार, वसुनन्दी कृत श्रावकाचार आदि।
12. देखें, जिनवाणी, जनवरी-2011 (गुरु-गरिमा एवं श्रमण-जीवन विशेषांक) में डॉ. दिलीप धींग का लेख 'श्रावकोपयोगी श्रमणाचार', पृष्ठ 325
13. देखें, नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं, पृष्ठ 362 (संपादक : डॉ. धर्मचंद जैन)
14. धींग, दिलीप (डॉ.), जैन आगमों का अर्थशास्त्रीय मूल्यांकन, पृष्ठ 186
15. जीवन प्रबंधन के तत्त्व (मुनि मनीषसागर), अध्याय 5, 'शरीर प्रबंधन' (स्वतंत्र पुस्तक), पृष्ठ 49
16. निर्ग्रंथ प्रवचन (जैन दिवाकर चौथमलजी), पृष्ठ 288
17. देखें, दि टाइम्स ऑफ इंडिया (चेन्नई) 14-7-2014 के अंक में प्रकाशित समाचार

-निदेशक : अंतरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र
सुगन हाउस, 18, रामानुजा अय्यर स्ट्रीट, साहुकारपेट, चेन्नई-600001 (तमिलनाडु)

सत्य की साधना

डॉ. रमेश "मयंक"

सत्य का स्वरूप
कभी खंडित नहीं होता,
सत्य के ज्ञान से
सदा दुःखों से मुक्ति हो जाती
सत्य के अनुभव से
राग-द्वेष पर
विवेक की विजय पताका फहराती
साधना की युक्ति हाथ आती,
सत्य तो विषय है- अभिव्यक्ति का
सत्य तो आचरण है- मोह से विरक्ति का
जो सत्य को सही-सही पहचानेगा
वह मुक्ति की मंजिल पाने
सत्य की साधना करने की ठानेगा।

-बी-8, मीरा नगर, चित्तौड़गढ़-312001 (राज.)

संगोष्ठी-आलेख

रात्रिभोजन-त्याग में प्रायोगिक समस्याएँ और समाधान

डॉ. श्वेता जैन

"**सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः**" के लक्ष्य से अनुप्राणित जैन संस्कृति में दर्शन-ज्ञान से संवलित चारित्र को मुक्ति का पथ प्रतिपादित किया गया है। चारित्र चर्या का वाचक है। रात्रिभोजन-त्याग का नियम हमारी जीवन-चर्या का अंग है। अतः रात्रिभोजन-त्याग का नियम दर्शन-ज्ञान से युक्त होने पर मुक्ति का हेतु बनता है और दर्शन-ज्ञान के अभाव में यह एक क्रिया मात्र है। विदेश में स्वास्थ्य की दृष्टि से रात्रि भोजन नहीं किया जा रहा है तो वह सम्यक् चारित्र का अंग नहीं है, मात्र एक क्रिया है। जो उनके शारीरिक स्वास्थ्य को ठीक रखती है।

व्यक्ति की दृष्टि जब आत्मशुद्धि की होती है और साथ में उसे यह अनुभूति होती है कि रात्रिभोजन करने से उसकी साधना में बाधा उत्पन्न हो रही है तो वह अपनी जीवन-चर्या को इस प्रकार ढालने का प्रयास करता है कि जिससे उसकी साधना पुष्ट हो। व्यक्ति की यह दृष्टि उसका 'दर्शन' है और रात्रिभोजन-त्याग की आवश्यकता की अनुभूति उसका 'ज्ञान' है। अतः दर्शन-ज्ञान के प्रकाश में जो रात्रिभोजन-त्याग किया जाता है, वही चारित्र की श्रेणी में गणनीय होता है। किसी की यहाँ जिज्ञासा हो सकती है कि सामायिक-छेदोपस्थापनीय आदि पाँच चारित्र होते हैं जो साधु के हैं, फिर श्रावक के रात्रिभोजन के प्रत्याख्यान को चारित्र कैसे कहा गया है? इस सम्बन्ध में हरिभद्रसूरि 'पञ्चाशक प्रकरण' में कहते हैं- "**पच्चक्खाणं नियमो चरित्तधम्मो य होंति एगट्ठा**"[1] प्रत्याख्यान, नियम और चारित्रधर्म एक ही अर्थ वाले होते हैं।

रात्रिभोजन-त्याग सर्वतः और देशतः के भेद से दो प्रकार का होता है। सर्वतः रात्रिभोजन त्याग में अशन, पान, खादिम और स्वादिम- ये चारों आहार 3 करण और 3 योग से छोड़ दिए जाते हैं। ये त्याग साधु-साध्वियों द्वारा किये जाते हैं। देशतः त्याग

---

* आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म. सा. के सान्निध्य में 11 एवं 12 अक्टूबर 2014 को कोटा में आयोजित 'रात्रिभोजन : समस्याएँ और समाधान' विषयक राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी में प्रस्तुत आलेख।

श्रावक-श्राविकाओं द्वारा किया जाता है। श्रावकों के प्रत्याख्यान के सम्बन्ध में योगशास्त्र टीका में कहा गया है-

सेयालं भंग सयं पच्चक्खाणम्मि जस्स उवलद्धं।
सो खलु पच्चक्खाणे कुसलो सेसा अकुसलाओ।।[2]

श्रावक की विरति 147 भंगों में से (49 भंग X 3 (भूत, वर्तमान और भविष्य)) किसी भी भंग से की जा सकती है। जो इन 147 भंगों को समझ लेता है, वही प्रत्याख्यान करने में कुशल होता है, शेष अकुशल होते हैं।

रात्रिभोजन-त्याग के विकल्पों या भंगों को द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव की अपेक्षा से समझा जा सकता है। द्रव्य की अपेक्षा से असण, पाण, खादिम और स्वादिम में से दो (असण-खादिम अथवा असण-स्वादिम) प्रकार के, तीन (असण-खादिम-स्वादिम) प्रकार के अथवा चारों प्रकार के आहारों का त्याग किया जा सकता है। इन चारों प्रकार के आहारों का ज्ञान होने पर ही त्याग का सम्यक् पालन सम्भव है। हरिभद्रसूरि त्याग का क्रम बतलाते हुए कहते हैं कि सर्वप्रथम आहार के चार भेदों का ज्ञान होता है। फिर तद्विषयक प्रत्याख्यान की रुचि होती है, फिर द्विविध-आहार आदि भेद वाले प्रत्याख्यान को स्वीकार करने का भाव होता है, फिर उसका उपयुक्त पालन होता है तत्पश्चात् आहार संम्बन्धी विरति की वृद्धि होती है।[3] उन्होंने चतुर्विध आहार का विस्तार से प्रतिपादन किया है, वह इस प्रकार है-

असण से तात्पर्य-

असणं ओयणसत्तुगमुग्गजगाराइ खज्जगविही य।
खीराई सूरणाई मंडगपभिई य विण्णेयं।।[4]

चावल आदि अनाज, सत्तू, मूंग आदि दलहन, रबड़ी और तली हुई वस्तुएँ आदि पकवान के अनेक प्रकार एवं दूध, दही छाछ तथा सूरण आदि कन्द और सभी प्रकार की सब्जियों आदि को अशन जानना चाहिए।

पाण से तात्पर्य-

पाणं सोवीरजवोदगाइ चित्तं सुराइगं चेव।
आउक्काओ सव्वो कक्कडगजलाइयं च तहा।।[5]

माँड, यव आदि का धोया हुआ पानी, विविध प्रकार की मदिरा आदि, कुएँ का पानी आदि, ककड़ी खजूर आदि के भीतर का जल तथा आम आदि फलों का धोया हुआ पानी इत्यादि सभी को पान समझना चाहिए।

खादिम से तात्पर्य-

भत्तोसं दन्ताई खज्जूरं नालकेरदक्खादी।
कक्कडिगंबगफणसाइ बहुविहं खाइमं णेयं।।[6]

भुने हुए चने, गेहूँ आदि अनाज, गुड़ आदि से संस्कृत पदार्थ तथा खजूर, नारियल, द्राक्षा, ककड़ी, आम, कटहल आदि अनेक प्रकार के फल खादिम जानना चाहिए।

स्वादिम से तात्पर्य-

दंतवणं तंबोलं चित्तं तुलसी कुहेडगाई य।
महुपिप्पलिसुंठाई अणेगहा साइमं होइ।।[7]

दातून, पान का पत्ता, सुपारी, इलायची, लवंग, कर्पूर आदि सुगन्धित द्रव्यों के मिश्रण रूप ताम्बूल, तुलसी, जीरा, हल्दी, शहद, पीपल, सोंठ, हरड़ आदि अनेक प्रकार के स्वादिम हैं।

आचार्य हरिभद्रसूरि के इन चतुर्विध आहार के प्रभेदों से सभी एकमत हों, यह आवश्यक नहीं है। आज इनके स्पष्टीकरण की आवश्यकता है ताकि नियम लेने वाले को सरलता हो सके।

रात्रिभोजन-त्याग का नियम जब किसी क्षेत्र विशेष से जोड़ दिया जाता है, जैसे घर में, शहर में या देश में रहने पर रात्रिभोजन नहीं करना। यह क्षेत्र के विकल्प से लिया गया नियम होता है। काल की अपेक्षा से श्रावक जीवन पर्यन्त, वर्ष, चातुर्मास, मास, पक्ष या सीमित रात्रियों तक या तिथियों के दिन रात्रिभोजन-त्याग करता है। भाव की अपेक्षा से आत्मशुद्धि के लक्ष्य हेतु नियम ग्रहण किया जाता है न कि आदर पाने के लिए, कीर्ति प्राप्त करने के लिए, वैभव या किसी अन्य कामना से।

करण और योग की अपेक्षा से इस नियम को देखा जाए तो यह एक करण और एक योग से ही पालन करना श्रावक के लिए संभव होता है। (करूँ नहीं काया से) क्योंकि गृहस्थी में रहते हुए श्रावक स्वयं तो रात्रिभोजन का त्याग कर सकता है, किन्तु दूसरों को रात्रिभोजन करवाने के प्रसंग उपस्थित होने पर वह उससे बच नहीं सकता है। बच्चों को, व्यापार में ग्राहक को और अन्य सम्बन्धी जनों को रात्रि में भोजन करवाना पड़ सकता है।

उपर्युक्त चर्चा से यह बात स्पष्ट है कि प्रत्येक श्रावक अपनी क्षमता के अनुसार रात्रिभोजन त्याग के नियम को ग्रहण कर सकता है। वह चार या तीन या दो प्रकार के आहार का त्याग कर सकता है; जो घर में रहकर ही पालन करना चाहता है तो वह वैसा कर सकता है; तिथि, पर्वो पर ही पालन करना चाहे तो ऐसा भी संभव है। किन्तु भाव से वह नियम

आत्मशुद्धि के लिए ही ले सकता है। आदर पाने, यश-कामना आदि भावना से नहीं ले सकता है। अतः भाव पर विशेष बल है जिसमें कोई विकल्प नहीं है, भंग नहीं है। इस प्रकार रात्रिभोजन-त्याग के नियम में द्रव्य, क्षेत्र और काल से अनेक विकल्प प्राप्त हैं।

''चिड़ी, कमेड़ी कागला, रात पड़्या नहीं खाय।
मिनख जमारो पायने, रात पड़्या क्यूं खाय।।''

इस पद्य के द्वारा मानव को प्रकृति से जोड़कर प्रेरणा की गई है कि रात होने पर नहीं खाना चाहिए। महाभारत के शान्ति पर्व में कहा है- **''ये रात्रौ सर्वदाऽऽहारं वर्जयन्ति सुमेधसः'''** बुद्धिमान रात्रि में भोजन नहीं करता। आचार्य रत्नचन्द्र जी म.सा. ने कहा-

रात पड़्या किम खाय, जाय मार्‍याँ त्रस प्राणी।
कीट पतंगा कुंथुआ, पड़े भाणा में आणी।
लट गिज्जइ सुलसुली, इल्ली अण्ड समेत।
'रतन' कहे धिक् ते हने खावे कर कर हेत।।

वर्तमान में भी आचार्यो, सन्तों द्वारा रात्रिभोजन-त्याग पर बल देने हेतु नये-नये पद्य रचे जा रहे हैं। एक स्थान पर ''रात्रि भोजन को नरक का द्वार' कह दिया गया है। यह कथन कहाँ तक उचित है, यह मेरी समझ में नहीं आया। जब रात्रिभोजन-त्याग अनेक भंग सहित ग्रहण किया जा सकता है, तो यह अतिशयोक्ति पूर्ण कथन क्यों कह दिए जाते हैं। प्रेरणा उतनी की जाए जितनी उचित हो, किन्तु नरक का भय दिखाकर प्रेरणा करना धर्म की दीप्ति को कम करना है। धर्म का आधार भय या लोभ होने पर वह ज्यादा दिन नहीं रहता। अतः प्रेमपूर्वक और समझाइश के साथ धर्म की प्रेरणा ही धर्म की जाहोजलाली का उचित साधन है।

प्राचीन समय में मनुष्य प्रकृति के अनुसार अपनी जीवन-चर्या चलाता था। अतः अधिकतर लोग रात्रि में मुख्य भोजन नहीं करते थे। रात्रिभोजन का जब प्रचलन प्रारम्भ हुआ तो अन्य धर्मावलम्बियों को रात्रिभोजन में आपत्ति नहीं थी, क्योंकि उनकी अहिंसा मानव और पशु मात्र तक सीमित थी। जैन धर्म में अहिंसा की व्यापकता मानव और पशुओं तक ही नहीं थी अपितु चींटी, मच्छर, मक्खी आदि त्रसकाय, पृथ्वीकाय, अप्काय, वायुकाय, तेउकाय, वनस्पतिकाय जैसे जीवों की हिंसा भी त्याज्य कही गई है। और इस प्रकार की अहिंसा की पालना के लिए रात्रिभोजन-त्याग एक आवश्यक नियम है। पहले यह नियम दिन में खाने की सभ्यता से स्वयं पलता था, अब सभ्यता बदलने से यह नियम कठिन हो गया है। परिणामस्वरूप इस नियम पर अधिक बल दिया जाने लगा है।

कुछ बच्चे बालवय से सुसंस्कारों में पले-बड़े होते हैं, तो वे रात्रिभोजन-त्याग का नियम बचपन से ही पालने लग जाते हैं। अनुकूल परिस्थितियाँ मिलने पर वह आगे भी

निभता चला जाता है। दूसरे युवा जैन बन्धुओं से यह नियम नहीं पलता है तो वे उसे तिरस्कार या हेय दृष्टि से देखते हैं, अपने भीतर अहं का पोषण करते रहते हैं। ऐसा करना आत्महितकारी नहीं है। अहंकार रात्रिभोजन-त्याग से भी बड़ी बुराई या पाप है। किसी भी नियम का अहं करना उसको पालना नहीं, ढोना है।

प्रायोगिक समस्याएँ और उनका समाधान

नियम में बहुविकल्पता होने पर सबसे **पहली समस्या** आती है कि नियम को किस विकल्प के साथ ग्रहण किया जाए। व्यक्ति अपने सामर्थ्य का आकलन निष्पक्ष होकर नहीं कर पाता है, उसका मन तो सदैव अधिक छूट के साथ नियम ग्रहण करने के लिए तत्पर होता है। इसका **समाधान** यह हो सकता है कि आप सर्वप्रथम किसी नियम को बिना छूट के (अपवाद के) ग्रहण करें, फिर देखें कि अब पालन करने में क्या-क्या बाधा उत्पन्न हो रही है। उन बाधाओं के निस्तारण में जो-जो छूट आवश्यक है, आप उनके साथ नियम को ग्रहण करें। छूट लेने वाले को अमृतचन्द्राचार्य की यह बात ध्यान रखने योग्य है- **"यो मनो वचनकायैः परिहरति रात्रिभुक्तिं सततमहिंसा स पालयति"**[8] जो पुरुष मन, वचन, काया से रात्रिभोजन को त्याग देता है, वह निरन्तर अहिंसा का पालन करता है। इस बात को ध्यान में रखने से वह श्रावक परिस्थितियाँ जैसे ही अनुकूल होंगी वह बिना अपवाद या छूट के नियम का पालन करेगा।

द्वितीय समस्या प्राकृत भाषा न आने की है। चूंकि नियम ग्रहण प्राकृत-पाठ से होता है तो उसमें विशेष आपवादिक स्थिति के उल्लेख की जानकारी नियम ग्रहण-कर्ता को नहीं हो पाती है। इसलिए नियम के प्रेरक कर्ता को नियम लेने वाले को जानकारी देनी चाहिए अथवा नियमग्रहणकर्ता को स्वयं सजग रहकर उसकी जानकारी कर लेनी चाहिए। वे स्थितियाँ हैं-

1. **अणाभोगेणं**- अनाभोग की अत्यन्त विस्मृति से कुछ मुँह में ले लेना।
2. **सहसागारेणं**- अकस्मात् जैसे पानी बरसता हो और मुख में छींटे पड़ जाए या छाछ बिलोते समय मुँह में छींटे पड़ जाए।
3. **महत्तरागारेणं**- महापुरुषों की आज्ञा से अर्थात् गुरुजन के निमित्त से त्याग का भंग करना पडे।
4. **सव्वसमाहिवत्तियागारेणं**- सब प्रकार की शारीरिक, मानसिक नीरोगता रहे तब तक त्याग है। अर्थात् शरीर में भयंकर रोग हो जाए या असह्य पीड़ा हो जाए और अधैर्य के कारण आर्त-रौद्र ध्यान रूप असमाधि होने लगे तो समाधि को बनाये रखने के लिए

औषधि, भोजन आदि लेना पड़े तो नियम भंग नहीं होता है।

तृतीय समस्या– रात्रिभोजन-त्याग आधुनिक जीवन शैली के मानदण्ड में सम्मिलित नहीं किया जाता है। ऑफिस कल्चर में यह नियम व्यक्ति को हंसी का पात्र बना देता है या उनसे अलग-थलग कर देता है। अतः इस नियम के पालन से वह कहीं अपने मन में कुण्ठित होता रहता है। ऐसी स्थिति को दो तरीके से सुलझाया जा सकता है, पहली बात तो व्यक्ति नियम के महत्त्व को जानकर अपनी कुण्ठा को दूर करे या फिर भंगों के अनुसार नियमों में समायोजन करे।

चतुर्थ समस्या– बीमारी के समय में रात्रिभोजन-त्याग के नियम को अपने स्वास्थ्य के अनुसार ले सकते हैं, ताकि चिड़चिड़ापन न आए, द्वेष के भाव न जगे। यदि मन में समाधि न रहे और नियम का पालन दिखावे के लिए करते हैं तो आत्मशुद्धि का मूल लक्ष्य खण्डित हो जाता है। जो श्रावक बीमारी की अवस्था में भी समता रखते हुए नियम का पालन करते हैं, तो वे साधक धन्य हैं।

पंचम समस्या– विश्व एक गाँव की तरह हो गया है। साधनों के विकास के कारण अपने कार्य से श्रावकों को विदेश यात्रा करनी रहती है। विदेश यात्रा के समय रात्रिभोजन-त्यागी को काफी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। कई बार अमरीका आदि देशों तक जाने में 18-20 घंटे का सफर रात्रि का ही होता है या फिर दिन का। कई ऐसे देश हैं जहाँ कुछ महीने 18 घंटे की रात्रि होती है और 6 घंटे का दिन होता है, तो कभी 6 घंटे की रात्रि और 18 घंटे का दिन होता है। ऐसी स्थितियों में अपने मन और तन की समाधि का खयाल कर नियम का पालन करना चाहिए।

इस प्रकार जीवन में कई ऐसे प्रसंग उपस्थित होते हैं जब नियमों में परिवर्तन करने की आवश्यकता होती है। ये परिवर्तन स्थायी रूप न लें, इसकी सावचेती भी जरूरी है। आत्मशुद्धि में रात्रिभोजन-त्याग का नियम सहायक है, अतः इस नियम का हमें दृढ़ता के साथ पालन करना चाहिए।

संदर्भः-

1. पञ्चाशक प्रकरणम्, अनुवादक- डॉ. दीनानाथ शर्मा, पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी, 1997, प्रत्याख्यान विधि, गाथा-2
2. द्रष्टव्यः- जिणधम्मो- आचार्यश्री नानेश, श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, समता भवन, गंगाशहर- बीकानेर, 15 वां संस्करण, पृष्ठ-589
3. णाणं सद्दहणं गहणं पालणा विरतिवुड्ढि चेव एवंति।
होइ इहरा उ मोहा विवज्जओ भणियभावाणं।।-पञ्चाशकप्रकरणं, प्रत्याख्यानविधि, गाथा-26

4. पञ्चाशक प्रकरण, गाथा-27
5. प्रत्याख्यान विधि, गाथा-28
6. पञ्चाशक प्रकरणं, प्रत्याख्यान विधि, गाथा 29
7. पञ्चाशक प्रकरणं, प्रत्याख्यान विधि, गाथा 30
8. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय, गाथा 134
9. द्रष्टव्य:- आहार-संयम एवं रात्रिभोजन-त्याग, पृ. 33

-'समता कुंज', 12/7ए, जालमविलास स्कीम, पावटा बी रोड़, जोधपुर-342006 (राज.)

रात्रिभोजन-विरति अंक पर साधक प्रतिक्रिया

सुश्री मीना बोहरा

हिन्दी मासिक पत्रिका जिनवाणी का रात्रिभोजन-विरति अंक (1) पढ़ा। अधिकांश विद्वानों ने रात्रिभोजन-त्याग हेतु प्रेरणा की है। रात्रि-भोजन त्याग कोई कठिन नहीं है। मैं अपने अनुभव से कहती हूँ कि यावज्जीवन सुख-समाधिपूर्वक रात्रि-भोजन का त्याग आसानी से किया जा सकता है। मैं लगभग 26 वर्षों से निरंतर चौविहार कर रही हूँ, परन्तु मुझे इसमें किञ्चित् मात्र भी बाधा नहीं आई। मेरी प्रथम नियुक्ति 17 वर्ष पूर्व रणसी गाँव में हुई, उस समय वहाँ से आवागमन के साधन भी सीमित थे और मेरे एकान्तर तप भी चल रहा था। अवकाश होने पर मैं जोधपुर आती थी, इस समयावधि में मुझे कई बार बस में ही चौविहार के प्रत्याख्यान करने पड़े तथा दूसरे दिन उपवास होता था। जोधपुर स्थानान्तरण के बाद भी अनेक बार अर्धवार्षिक परीक्षा में दो पारी (9.00 से 5.30) होने, जिला-राज्य स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिताओं आदि में रात्रि नौ-दस बजे तक भी विद्यालय में रुकने का काम पड़ा, किन्तु न तो रात्रि-चौविहार-त्याग में बाधा आई और न ही 18 वर्षों से निरन्तर एकान्तर तप में। मैं आज भी शाम का भोजन विद्यालय में ही करती हूँ, ताकि रात्रि-चौविहार-त्याग में आसानी रहे। एकान्तर तप के कारण शाम के भोजन के बाद अगले (सुबह के) भोजन में लगभग 42-43 घंटे का अंतराल होता है, फिर मेरी तरह सभी न तो एकान्तर तप करते हैं न ही उनके बाजारु खाद्य पदार्थों का मेरी तरह पूर्णतः त्याग है। चाहे कितना ही व्यस्त जीवन हो, Lunch Break सभी के लिए होता है। बाहर का भोजन नहीं करने वाले अपने साथ टिफिन रख सकते हैं। पुलिस अधिकारी दीपा जैन का समय तो व्यस्ततम है, फिर भी वह रात्रि में भोजन नहीं करती। दृढ़ निश्चय हो तो रात्रिभोजन-त्याग में कोई भी कठिनाई नहीं आ सकती। - *बोहरा भवन, महिला बाग, जोधपुर (राज.)*

शोधालेख

रात्रिभोजन-विरति के विविध सन्दर्भ

डॉ. पवनकुमार जैन

(1) श्वेताम्बर साहित्य के संदर्भ

- **प्रश्नव्याकरण सूत्र** के प्रथम संवर द्वार एवं **आचारांगसूत्र**, अध्ययन 15 में आलोकित पान-भोजन का अहिंसा महाव्रत की भावनाओं के अन्तर्गत उल्लेख हुआ है। यह रात्रिभोजन-त्याग का ही सूचक है।
- **उत्तराध्ययन सूत्र के** उन्नीसवें अध्ययन में कहा है- **चउव्विहे वि आहारे, राईभोयण-वज्जणा (उत्तराध्ययनसूत्र अ.19, गाथा 31)** अर्थात् रात में चारों आहारों के सेवन का निषेध है।
- **समवायांग सूत्र** में रात्रिभोजन शबल दोष के रूप में स्वीकार किया गया है। **(समवाय 21)**
- **दशवैकालिक सूत्र** के अध्याय 6 की गाथा 23 से 25 में रात्रि-भोजन से होने वाले हिंसा जनित दोषों का उल्लेख है। रात्रि-भोजन विरमण की महत्ता को स्थापित करने के लिए दशवैकालिक सूत्र अध्ययन 4 एवं बृहत्कल्प भाष्य गाथा 2839 में भिक्षा के दोषों के साथ उसका उल्लेख नहीं करके उसे छठे व्रत के रूप में निरूपित किया गया है।
- **निशीथ सूत्र** (अध्ययन 10 सूत्र 31-39) में वर्णित '**उग्गयवित्तीए**' और '**अणत्थमिय-मणसंकल्पे**' इन दो शब्दों से यह तात्पर्य प्रकट होता है कि साधु के आहार का समय सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त के बीच का है।
- **निशीथ चूर्णि** में आधाकर्म और रात्रिभोजन दोनों का प्रायश्चित्त चार गुरु (उपवास) बताते हुए भी चूर्णिकार कहते हैं कि- "**कम्मं सेयं न भोयणं रातो मूलगुणोपघातित्वात्।**" अर्थात् आधाकर्म उत्तरगुणों का उपघात करने वाला है, लेकिन रात्रि-भोजन मूलगुणों को नष्ट करने वाला होने से वह अधिक दोष वाला है। **(निशीथचूर्णि भाष्य 1 पृ. 150)**
- **निशीथ भाष्य में** कहा है कि दिन में बनाये गये निर्जीव लड्डू आदि में भी रात में आए जीवों को हम देख नहीं सकते हैं। सर्वज्ञ भी प्रतिज्ञापूर्वक रात्रिभोजन का त्याग करते हैं।
- **अचलगच्छाधिपति श्री हर्षनिधानसूरि** द्वारा संग्रह की गई श्री रत्नसंचय प्रकरण (वि. स. 1833) में उल्लेख प्राप्त होता है-

पाणाइ दुगुण साइमं, साइमतिगुणेण खाइमं होइ।
खाइमतिगुणं असणं, राईभोए मुणेयव्वं।।

-(रत्नसंचय प्रकरण, गाथा 452)

*** कोटा में 11-12 अक्टूबर 2014 को आयोजित संगोष्ठी हेतु प्रेषित आलेख।**

अर्थात् रात्रि में पानी की अपेक्षा स्वादिम के सेवन में दुगुना पाप, स्वादिम से तीन गुना पाप खादिम के सेवन में एवं खादिम से तीन गुना पाप अशन के सेवन में लगता है।

जं चेव राइभोयणे, ते दोसा अंधयारंमि।

-(रत्नसंचय प्रकरण गाथा 453)

अर्थात् रात्रिभोजन में जो दोष लगते हैं वे दोष अंधकार में भोजन करने से लगते हैं।

• **दशवैकालिक अगस्त्यचूर्णि** पृष्ठ 60 पर कहा गया है- **"तं रातिभत्तं चतुव्विहं, तं जहा 1. दिवा घेत्तुं बितियदिवसे दिवा भुंजति, 2. दिवा घेत्तुं रातिं भुंजति 3. रातिं घेत्तुं दिवा भुंजति 4. रातिं घेत्तुं रातिं भुंजति"** अर्थात् रात्रि भक्त के चार विकल्प होते हैं - 1. दिन में लाकर दूसरे दिन, दिन में खाना, 2. दिन में लाकर रात्रि में खाना 3. रात में लाकर दिन में खाना और 4. रात में लाकर रात में खाना। इन चारों का ही निषेध है। ऐसा ही उल्लेख जिनदासचूर्णि पृ. 112 एवं हारिभद्रीय टीका पृ. 116 पर भी है।

दशवैकालिक अगस्त्यचूर्णि पृष्ठ 86 पर कहा गया है- **किं रातीभोयणं मूलगुणः उत्तरगुणः? उत्तरगुण एवायं तहावि सव्वमूलगुणरक्खाहेतुत्ति मूलगुणसम्भूतं पढिज्जति** अर्थात् रात्रिभोजन मूल गुण है या उत्तरगुण? रात्रिभोजन विरमण उत्तरगुण है। फिर भी यह मूलगुणों की रक्षा का हेतु है, अतः इसका मूल गुणों के साथ प्रतिपादन किया गया है।

• **विशेषावश्यकभाष्य** गाथा 1247 की वृत्ति के अनुसार रात्रिभोजन नहीं करने से अहिंसा महाव्रत का संरक्षण होता है। इससे वह समिति के समान उत्तरगुण है, पर श्रमण के लिए वह अहिंसा महाव्रत की तरह पालन करने योग्य है। इस दृष्टि से वह मूलगुण की कोटि में है।

• **बृहत्कल्पभाष्य** में कहा गया है कि रात्रि में भिक्षार्थ जाने से सर्वज्ञता के प्रति आशंका उत्पन्न होती है, मिथ्यात्व की वृद्धि होती है तथा आत्म-विराधना और संयम-विराधना होती है। रात्रि के अंधकार में न दीखने से मुनि स्खलित होकर गिर सकता है, पैर में कांटे लग सकते हैं, गड्ढ़े में गिर सकता है, सर्प काट सकता है, कुत्ते उपद्रव कर सकते हैं, बैल सींग से मार सकता है तथा नगररक्षक उसे चोर समझकर पकड़ सकते हैं। (बृहत्कल्पभाष्य 2841, 2842)। इन्हीं दोषों का निशीथ भाष्य में विस्तार से उल्लेख हुआ है। (निशीथ भाष्य गाथा 413-423) रात्रिभोजन के लगभग इन्हीं दोषों का वर्णन मूलाचार में भी है। (मूलाचार, अधिकार 5, गाथा 296)

बृहत्कल्प भाष्यकार ने रात्रिभोजन से होने वाली संयम-विराधना का विस्तार से वर्णन किया है। रात्रिभोजन हेतु गमन में षट्काय की विराधना संभव है, क्योंकि अंधकार में दिखाई न देने से हरियाली एवं बीज की हिंसा भी संभव है। (बृहत्कल्पभाष्य, गाथा 2843-48)

नोटः – यहाँ बृहत्कल्पभाष्य की कुछ ही गाथाओं के आधार पर उल्लेख किया गया है, वहाँ

गाथा 2836 से 2876 तक रात्रिभोजन के दोष आदि का विस्तार से वर्णन हुआ है।

• **योगशास्त्र** में आचार्य हेमचन्द्र ने कहा है कि रात में स्वच्छंद घूमने वाले प्रेत, व्यंतर, पिशाच, राक्षस आदि हल्की जाति के देवों द्वारा स्पर्शादि से भोजन झूठा कर दिया जाता है, इसलिए रात्रि में भोजन नहीं करना चाहिए। (योगशास्त्र, प्रकाश 3, श्लोक 48)

आचार्य हेमचन्द्र कहते हैं कि '**धर्मविन्नैव भुंजीत, कदाचन दिनात्यये। बाह्या अपि निशाभोज्यं यद्भोज्यं प्रचक्षते**' अर्थात् जिनशासन को न मानने वाले अन्यमतीय लोग भी रात्रिभोजन को अभोज्य कहते हैं। अतः धर्मज्ञ श्रावक सूर्यास्त हो जाने के बाद रात्रि-भोजन न करे। (योगशास्त्र, प्रकाश 3, श्लोक 54)

संसृज्जीवसंघातं, भुंजानां निशिभोजनम्। राक्षसेभ्यो विशिष्यन्ते मूढात्मानः कथं नु ते? - योगशास्त्र, प्रकाश 3, श्लोक 61) अर्थात् रात्रिभोजन करने वालों को आचार्य हेमचन्द्र ने राक्षस की उपमा दी है।

योगशास्त्र, प्रकाश 3, श्लोक 68 **श्रूयते ह्यन्यशपथाननादृत्यैव लक्ष्मणः। निशाभोजनशपथं, कारितोवनमालया।** यहाँ एक कथानक दिया है कि वनवास गमन के समय रास्ते में कुबेरनगर आया वहाँ के राजा की पुत्री वनमाला से लक्ष्मण ने विवाह किया और शीघ्र आने का वादा करके जब वे आगे बढ़ने लगे तो वनमाला को विश्वास नहीं हुआ कि लक्ष्मण वापस आयेंगे, इसलिए उसने लक्ष्मण के पास दूसरी कोई भी सौगंध ग्रहण करवाने के बदले रात्रि भोजन का पाप लगे ऐसी सौगंध करवायी अर्थात् वनमाला ने कहा कि अगर "रात्रि भोजन का पाप लगे" ऐसा कहें तो मैं आपको जाने की आज्ञा देती हूँ और लक्ष्मण ने यह सौगंध ली। यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि लक्ष्मण ने वनमाला से कहा था कि मैं नहीं आऊं तो मुझे प्राणातिपात का पाप लगे, पर उसने रात्रि भोजन के पाप की प्रतिज्ञा करवाई।

नोटः- यहाँ योगशास्त्र के कुछ ही श्लोकों का उल्लेख किया गया है, वैसे तीसरे प्रकाश के श्लोक नं. 48 से 70 तक रात्रिभोजन के बारे में विस्तार से वर्णन हुआ है।

• जैन-न्याय ग्रन्थ **रत्नाकरावतारिका** में भी रात्रि भोजन का निषेध किया गया है, यथा- **जैनेन रात्रि भोजनं न भजनीयम्।**

(2) दिगम्बर साहित्य के संदर्भ

• **धवला पुस्तक** 12 में '**रत्तीए भोयण रादिभोयणं**' अर्थात् रात्रि में भोजन सो रात्रि भोजन कहलाता है।

जेणेदं सुत्तं देसमासियं तेणेत्थ महु-मांस-पंचुंबर-णिंवसण-हुल्लभक्खण-सुरापाण अवेलासणादीणं पि णाणावरणपच्चयत्तं-परूवेदव्वं। (धवला पु. 12, सू. 4.2.88, पृ. 283)

यह सूत्र देशामर्शक है अतः इससे यहाँ मधु, मांस, पंच उदुम्बर फल, निन्द्य भोजन, फूलों के भक्षण, मद्यपान तथा असामयिक (रात्रिभोजन) भोजन आदि को ज्ञानावरणीय का कारण बतलाना चाहिए।

• **मूलाचार–**

उदयत्थमणे कालेणालीतियवज्जिय मज्झम्हि।
एकम्हि दुअ तिए वा मुहुत्तकाले य भत्तं तु।।

अर्थात् सूर्य के उदय व अस्त काल की तीन घड़ी छोड़कर इसके मध्य काल में कोई भी समय आहार ग्रहण करने का काल है। (मूल गुणाधिकार, गाथा 35) ऐसा ही उल्लेख राजवार्तिक 7.1.18 में भी है।

तेसिं चेव वदाणं रक्खणट्ठं रादिभोयणणियत्ती। मूलाचार, अधिकार 5, श्लोक 295 में कहा है कि पांच महाव्रत आदि की रक्षा के लिए रात्रिभोजन त्याग व्रत है। दिगम्बर परम्परा में रात्रिभोजन त्याग को छठा अणुव्रत कहा गया है। मूलाचार गाथा 296-297 में वट्टकेर ने रात्रिभोजन-विरमण को पंच महाव्रत की रक्षा के लिए आवश्यक माना है। इसी प्रकार दर्शनसार (पृ. 38) में देवसेन, चारित्रसार (पृ. 13) में चामुण्डराय, आचार सार (5.70) में वीरनन्दी का भी यही मत है।

• **यामस्यार्द्धं न भोक्तव्यं** (लाटी संहिता अधिकार 5.234) श्रावक को सूर्य निकलने के पश्चात् आधे पहर तक तथा सूर्य अस्त से आधे पहर पहले भोजन कर लेना चाहिए। यही बात सागार धर्मामृत में भी कही है। (सागार धर्मामृत अधिकार 3 श्लोक 15)

• **सागार धर्मामृत–**

अहिंसाव्रतरक्षार्थं मूलव्रतविशुद्धये।
नक्तं भुक्तिं चतुर्धापि, सदा धीरस्त्रिधा त्यजेत्।।

-(अधिकार 4 श्लोक 24)

अर्थात् व्रतों का पालक श्रावक अहिंसाणुव्रत की रक्षा के लिए धैर्य से युक्त होता हुआ रात्रि में मन, वचन और काय से चारों ही प्रकार के आहार का सदा त्याग करे।

• **कार्तिकेयानुप्रेक्षा**

जो चउविहं पि भोज्जं रयणीए णेव भुंजदे णाणी।
ण य भुंजावदि अण्णं णिसि-विरओ सो हवे भोज्जो।।

-(गाथा 382)

अर्थात् जो ज्ञानी श्रावक रात्रि में चारों प्रकार के आहार को नहीं करता और न दूसरों को रात्रि में भोजन कराता है, वह रात्रि भोजन का त्यागी होता है।

जो णिसि-भुत्तिं वज्जदि सो उववासं करेदि छम्मासं।
संवच्छरस्स मज्झे आरंभं चयदि रयणीए।।

-(गाथा 383)

अर्थात् जो पुरुष रात्रि-भोजन का त्याग करता है, वह एक वर्ष में छह महीने का उपवास करता है। रात्रि भोजन का त्याग करने के कारण वह भोजन सम्बन्धी सम्पूर्ण आरम्भ का भी त्याग करता है।

- **पुरुषार्थसिद्ध्युपाय-**

किं वा बहु प्रलपितैरिति सिद्धं यो मनोवचनकायैः।
परिहरति रात्रिभुक्तिं सततमहिंसां स पालयति।।

-(श्लोक 134)

अर्थात् जो पुरुष मन, वचन और काय से रात्रि भोजन को त्याग देता है, वह निरन्तर अहिंसा का पालन करता है, ऐसा सार सिद्धान्त में वर्णन हुआ।

रात्रौ भुञ्जानानां यस्मादनिवारिता भवति हिंसा।
हिंसाविरतैस्तस्मात् त्यक्तव्या रात्रिभुक्तिरपि।।
रागाद्युदयपरत्वादनिवृत्तिर्नातिवर्तते हिंसाम्।
रात्रिंदिवमाहरतः कथं हि हिंसा न संभवति।।
यद्येवं तर्हि दिवा कर्तव्यो भोजनस्य परिहारः।
भोक्तव्यं तु निशायां नेत्थं नित्यं भवति हिंसा।।
नैवं वासरभुक्तेर्भवति हि रागोऽधिको रजनिभुक्तौ।
अन्नकवलस्य भुक्तेर्भुक्ताविव मांसकवलस्य।।
अर्कालोकेन विना भुञ्जानः परिहरेत् कथं हिंसाम्।
अपि बोधिते प्रदीपे भोज्यजुषां सूक्ष्मजीवानाम्।।

-(श्लोक 129-133)

पुरुषार्थसिद्ध्युपाय में कहा है कि रात्रि में भोजन करने वालों के हिंसा अनिवारित होती है, अतएव हिंसा के त्यागी को रात्रि भोजन का त्याग करना चाहिए। रागादिभावों के उदय की उत्कृष्टता के कारण रात्रिभोजन से विरति न करना हिंसा ही है। रात-दिन आहार करने वालों के हिंसा कैसे सम्भव नहीं होती? अर्थात् तीव्र रागी ही रात-दिन खायेगा और जहाँ राग है वहाँ हिंसा है। प्रश्न - यदि ऐसा है तो दिन के भोजन का त्याग करना चाहिए और रात्रि को भोजन करना चाहिए, क्योंकि ऐसा करने से हिंसा सदा काल न होगी। उत्तर - अन्न के ग्रास के भोजन की अपेक्षा मांस के ग्रास के भोजन में जैसे राग अधिक होता है। वैसे ही दिन के भोजन की अपेक्षा रात्रि भोजन में निश्चय कर अधिक राग होता है, अतएव रात्रि भोजन ही त्याज्य है। दूसरे, सूर्य के प्रकाश के बिना रात्रि में भोजन करने वाले पुरुषों के द्वारा

जलाये हुए दीपक में भी भोजन में मिले हुए सूक्ष्म जीवों को दूर नहीं किया जा सकेगा। अतएव रात्रि भोजन त्याज्य है।

- **रत्नकरण्डश्रावकाचार में–**

अन्नं पानं खाद्यं लेह्यं नाश्नाति यो विभावर्याम्।
स च रात्रिभुक्तिविरतः सत्त्वेष्वनुकम्पमानमनाः।।

-(परिच्छेद 5, गाथा 21)

अर्थात् जो जीवों पर दयालु चित्त होता हुआ रात्रि में अन्न, पेय, खाद्य और लेह्य (चाटने योग्य पदार्थ) को नहीं खाता है, वह रात्रिभुक्तित्यागी प्रतिमाधारी श्रावक है।

- **आचारसार** में कहा है कि **व्रतत्राणाय कर्तव्यं रात्रिभोजनवर्जनम्। सर्वथान्नान्निवृत्तिः तत्प्रोक्तं षष्ठमणुव्रतम्।** (आचारसार 5.7071) अर्थात् अहिंसा आदि व्रतों की रक्षा के लिए रात्रिभोजन का त्याग अथवा उस समय अन्न खाने का त्याग करना छठी रात्रि भुक्ति त्याग प्रतिमा या छठा अणुव्रत है।

- **सर्वार्थसिद्धि, तत्त्वार्थराजावर्तिक** (राजवार्तिक 7.1.17-20) आदि के अध्ययन 7 सूत्र 1 में छठे व्रत के रूप में रात्रि भोजन त्याग का उल्लेख नहीं करके इसका समावेश अहिंसा व्रत की **आलोकितपानभोजन** नामक भावना में किया गया है। यहां शंका हो सकती है कि जब आलोकित पानभोजन ही रात्रिभोजन-त्याग है तो चन्द्रमा अथवा कृत्रिम प्रकाश में भी भोजन करने पर रात्रि भोजन का दोष नहीं लगना चाहिए। आचार्य ने इसका समाधान करते हुए कहा है कि इसमें दीपक आदि के आरंभ के दोष लगेंगे, इसलिए रात्रि भोजन अनुकूल नहीं है।

- **निशिभोजनभुंजन कथा** में कविवर भूधरदास ने कहा है कि–

कीड़ी बुध बल हरै, कंपगद करै कसारी।
मकड़ी कारण कुष्ठ रोग उपजै अतिभारी।।
जुआ जलोदर जनै; फांस गल व्यथा बढ़वै।
बाल करे स्वर भंग, वमन माखी उपजावै।।
तालु छिद्त बिच्छु भखत, और व्याधि बहु करई थल।
ये प्रगट दोष निसि असन के, परभव दोष परोक्ष फल।।

- **'अहिंसाव्रत-रक्षार्थं, मूलव्रतविशुद्धये, निशायां वर्जयेत् भुक्तिं, इहामुत्र च दुःखदाम्।।** (वसुनंदि उपासकाध्ययन, श्लोक 334) अर्थात् अहिंसाव्रत की रक्षा और आठ गुण मूलगुणों की निर्मलता के लिए तथा इस लोक-सम्बन्धी रोगों से बचने के लिए एवं परलोक के दुःखों से निवृत्ति के लिए रात्रिभोजन का त्याग कर देना चाहिए।

- **अमितगति श्रावकाचार** पंचम परिच्छेद श्लोक 4042 में भी रात्रिभोजन का निषेध

किया गया है।

- **गोम्मटसार जीवकाण्ड** गाथा 29 के अनुसार **णो इन्दियेसु विरदो, णो जीवे थावरे तसे वापि। जो सद्दहदि जिणुत्तं, सम्माइट्ठी अविरदो सो।।** अर्थात् अविरत सम्यग्दृष्टि न तो त्रस हिंसा से विरत है और न स्थावर हिंसा, से अतः वह रात्रिभोजन भी क्यों छोड़ें ? उत्तर में कहा गया है कि रात्रिभोजन का त्याग न करने से उसका पाक्षिकपना अथवा व्रतों के धारण करने के पक्ष को स्वीकार करना भी सिद्ध नहीं होता है।

- **उमास्वाति, श्रावकाचार 329 एवं श्रावकाचार सारोद्धार 118** (उद्धृत श्रावकाचार संग्रह भाग 3) के अनुसार रात्रिभोजन करने वाला अगले जन्म में उल्लू, कौआ, बिल्ली आदि निकृष्ट योनि में जन्म ग्रहण करता है। अतः समझदार और विवेकी जनों को रात्रिभोजन का त्याग अवश्य करना चाहिए।

- **भगवती आराधना**, अध्याय 6, गाथा 1179-1180 में श्रमणों के लिए रात्रिभोजन-विरमण व्रत का पालन आवश्यक माना गया है। इसी प्रकार पूज्यपाद (सर्वार्थसिद्धि 7.1 टीका पृ. 343-44), अकलंक (तत्त्वार्थराजवार्तिक 7.1), विद्यानंद (तत्त्वार्थवार्तिक 7.1) एवं श्रुतसागर (तत्त्वार्थवृत्ति 7.1) ने रात्रिभोजन को त्याज्य बताया है।

(3) जैनेतर साहित्य के संदर्भ

- **मार्कण्डेय पुराण-**

अस्तंगते दिवानाथे, आपो रुधिरमुच्यये।
अन्नं मांससमं प्रोक्तं, मार्कण्डेयमहर्षिणा।

अर्थात् मार्कण्ड पुराण में मार्कण्डेय ऋषि ने कहा है कि सूर्यास्त होने के पश्चात् पानी पीना खून पीने के बराबर है और अन्न खाना मांस खाने के बराबर है।

मृते स्वजनमात्रेऽपि, सूतकं जायते किल।
अस्तंगते दिवानाथे, भोजनं किमु क्रियते।।

अर्थात् जिस तरह स्वजन और संबंधियों की मृत्यु होने पर मनुष्य को सूतक लगता है तो फिर सूर्य के अस्त होने पर भोजन किस तरह कर सकते हैं? यानी कि सूर्यास्त के बाद रात्रिभोजन कदापि करने योग्य नहीं है।

नोकद्दमपि पातव्यं रात्रावत्र युधिष्ठिर।
तपस्विना विशेषेण, गृहिणा च विवेकिना।।

-(अध्ययन 30, श्लोक 22)

अर्थात् हे युधिष्ठिर! विशेष करके तपस्वियों तथा विवेकी गृहस्थों को रात्रि में भोजन तो दूर रहा, पानी भी नहीं पीना चाहिए।

• **यजुर्वेद–**

देवैस्तु भुक्तं पूर्वाह्णे, मध्याह्ने ऋषिभिस्तथा।
अपराह्णे तु पितृभिः सायाह्णे दैत्यदानवैः।।
संध्यायां यक्षरक्षोभि, सदा भुक्तं कुलोद्वहै।
सर्ववेला व्यतिक्रम्य, रात्रौ भुक्तमभोजनम्।।

यजुर्वेद में युधिष्ठिर को सम्बोधित करते हुए कहा है कि हे युधिष्ठिर! हमेशा देवगण दिन के प्रथम प्रहर में भोजन करते हैं। ऋषिमुनि आदि दिन के दूसरे प्रहर में, पितृ लोग दिन के तीसरे प्रहर में और दैत्य, दानव तथा यक्ष और राक्षस शाम के समय भोजन करते हैं। इन देवों के भोजन के समय को छोड़कर जो रात्रि भोजन करते हैं, वह भोजन, अभोजन के बराबर है अर्थात् खराब भोजन है।

• योगवाशिष्ठ पूर्वार्ध श्लोक 108 में कहा है कि '**नक्तं न भोजयेद्यस्तु, चातुर्मास्ये विशेषतः। सर्वकामानवाप्नोति, इहलोके परत्र च।**' अर्थात् जो हमेशा रात्रिभोजन नहीं करता है और चौमासे में विशेष रूप से रात्रि भोजन का त्याग करता है, उस आत्मा के इस भव और परभव के सभी मनोरथ पूर्ण होते हैं। जैन दर्शन तो चातुर्मास में विशेष जीवोत्पत्ति मानता है, इसलिए साधु-साध्वी भी चार माह तक एक ही स्थान पर रहते हैं।

• **महाभारत–**

चत्वारि नरकद्वारं, प्रथमं रात्रिभोजनं।
परस्त्रीगमनं चैव, सन्धानानन्तकायिकं।।

- महाभारत (शांतिपर्व), पद्मपुराण (प्रभासखंड)

अर्थात् पहला रात्रिभोजन, दूसरा परस्त्रीगमन, तीसरा सन्धान (अचार) आदि का सेवन और चौथा अनन्तकायिक जीवों का सेवन करना, ये चार कारण नरक में जाने के हैं। अतः जो रात्रिभोजन करता है, उसे दुर्गति का मेहमान बनना पड़ता है।

ये रात्रौ सर्वदाऽऽहारं, वर्जयन्ति सुमेधसः।
तेषां पक्षोपवासस्य, फलं मासेन जायते।।-(शान्तिपर्व 16)

जो पुण्यात्माएँ रात्रि में आहार का (पानी का भी) त्याग करे, उनको एक महीने में पन्द्रह दिन के उपवास का फल मिलता है। ऐसा ही उल्लेख श्रावकाचार सारोद्धार 3.108 एवं उमास्वामी के श्रावकाचार 325 में भी है।

पयोदपटलस्थेन, नाश्नन्ति रविमंडले।
अस्तंगते तु भुंजाना, अहो भानोः सुसेवकाः।।

जो सूर्य का उपासक है, लेकिन सूर्य की उपस्थिति में भोजन नहीं करता है, वह सूर्य की उपासना का मात्र ढोंग करता है।

● **स्कन्दपुराण, कपोलस्तोत्र, श्लोक 24**

त्वया सर्वमिदं व्याहतं, ध्येयोऽसि जगतां रवे।
त्वयि चास्तिमिते देव, आपो रुधिरमुच्यते।।

हे सूर्य! तुमसे ही सम्पूर्ण जगत् व्याप्त है। सभी के द्वारा तू ध्यान करने योग्य है। हे देव! तुम्हारे अस्त होने के बाद पानी पीना भी खून के बराबर है।

● **स्कन्ध पुराण**

एकभक्ताशनान्नित्यमग्निहोत्रफलं लभेत।
अनस्तभोजनो नित्यं, तीर्थयात्राफलं भवेत्।।

-(स्कंध 7, अ. 11, श्लोक 235)

अर्थात् जो मानव हमेशा एक बार भोजन करता है वह अग्निहोत्र का फल प्राप्त करता है, लेकिन जो मानव प्रतिदिन सूर्यास्त से ही पूर्व भोजन करता है, उसको घर बैठे तीर्थ यात्रा का फल प्राप्त होता है।

● **ऋषीश्वरभारत-महाभारत-**

चातुर्मास्ये तु सम्प्राप्ते, रात्रिभोज्यं करोति यः।
तस्य शुद्धिर्न विद्येत, चान्द्रायणशतैरपि।

अर्थात् चातुर्मास में भी जो रात्रिभोजन करता है, उसके पाप की शुद्धि सैकड़ों चान्द्रायणत से भी नहीं होती है।

मद्यमांसाशनं रात्रौ, भोजनं कंदभक्षणम्।
ये कुर्वन्ति वृथातेषां, तीर्थयात्रा जपस्तपः।

अर्थात् जो मनुष्य मदिरा, मांस, रात्रिभोजन और कंदमूल का भक्षण करते हैं, उनके तीर्थयात्रा, जप-तप आदि अनुष्ठान निष्फल हो जाते हैं।

अह्नो मुखेऽवसाने च, यो द्वे द्वे घटिके त्यजन्।
निशाभोजनदोषज्ञोऽशनात्यसौ पुण्यभोजनम्।।

अर्थात् सूर्योदय होने के पश्चात् दो घड़ी और सूर्यास्त के पूर्व दो घड़ी छोड़कर जो भोजन किया जाता है, वह पुण्य भोजन होता है।

त्रयी तेजोमयी भानुरिति वेदविदो विदुः।
तत्करैः पूतमखिलं, शुभं कर्म समाचरेत्।।
नैवाहुतिर्न च स्नानं, न श्राद्धदेवतार्चनम्।
दानं वा विहितं रात्रौ, भोजनं तु विशेषतः।।

वेद के जानकार सूर्य को तेजोमय कहते हैं, सूर्य की किरणों से पवित्र हुए सभी शुभ कर्म करने चाहिए। रात्रि को आहुति, स्नान, श्राद्ध, देवतार्चन और दान तथा विशेष रूप से

भोजन का त्याग करना चाहिए।

मद्यमांसाशनं रात्रौ-भोजनं कंदभक्षणम्।
भक्षणात् नरकं याति, वर्जनात् स्वर्गमाप्नुयात्।।

अर्थात् जो मनुष्य मदिरा, मांस, रात्रिभोजन और कंदमूल का भक्षण करते हैं, वे नरक गति में जाते हैं और जो मनुष्य मदिरा, मांस, रात्रिभोजन, कंदमूल भक्षण का त्याग करते हैं, वे स्वर्ग में जाते हैं।

- **मज्झिमनिकाय** के कीटगिरिसूत्र (2.2.10) के अनुसार **एकं समयं भगवा कासीसु चारिकं चरति महता भिक्खुसंघेन सद्धिं। तत्र खो भगवा भिक्खु आमन्तेसि – अह खो, भिक्खवे, अंजत्रेव रत्तिभोजना भुंजामि। अंजत्र खो पनाहं, भिक्खवे, रत्तिभोजना भुंजमानो अप्पाबाधतंच संजानामि अप्पातंकतं च लहुट्ठानं च बलं च फासुविहारं च एथ, तम्हेपि, भिक्खवे, अंजत्रेव रत्तिभोजना-भुंजथ। अंजत्र खो पन, भिक्खवे, तुम्हेपि रत्तिभोजना, भुंजमाना अप्पाबाधतं च संजानिस्सथ लहुट्ठानं च बलं च फासुविहारं च ति।।** अर्थात् एक समय बडे भारी भिक्षु संघ के साथ भगवान् काशी में चारिका करते थे। वहाँ भगवान् ने भिक्षुओं को आमंत्रित किया और कहा- "भिक्षुओं! मैं रात्रिभोजन से विरत हो भोजन करता हूँ। रात्रिभोजन छोड़कर भोजन करने से आरोग्य, उत्साह, बल, सुखपूर्वक विहार का अनुभव करता हूँ, आओ भिक्षुओं! तुम भी रात्रिभोजन विरत हो भोजन करो, रात्रिभोजन छोड़कर भोजन करने से तुम भी उनका अनुभव करोगे" इस प्रकार वैदिक एवं बौद्ध परम्परा में भी रात्रिभोजन का निषेध किया गया है।

रात्रिभोजन-विरति सम्बन्धी कतिपय पुस्तकें-

1. आचार्यश्री हीराचन्द्र जी म.सा., **आहार, संयम और रात्रिभोजन-त्याग**- सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर (राज.)
2. श्री विजय कीर्तिचन्द्र सूरीजी महाराज, **नरक का प्रथम द्वार : रात्रि भोजन** श्री लब्धि लक्ष्मण कीर्ति, जैन नवयुवक मंडल, सिरोही (राज.), प्रथम आवृत्ति सन् 1970
3. श्रीमद् भव्यदर्शन विजयजी म. सा., **रात्रिभोजन-महापाप** श्री पद्मविजयजी गणिवर जैन ग्रंथमाला ट्रस्ट, अहमदाबाद, तृतीय आवृत्ति, वि. सं. 2047
4. आचार्यदेव श्री राजयशसूरीश्वरजी म. सा., **रात्रिभोजन-महापाप** लब्धि विक्रम संस्कृति केन्द्र, अहमदाबाद, चतुर्थ आवृत्ति सन् 1997
5. क्षुल्लक जिनेन्द्र वर्णी **जैनेन्द्र सिद्धान्त कोश** भाग 3, भारतीय ज्ञानपीठ. नई दिल्ली, छठी आवृत्ति, सन् 2002
6. साध्वी स्थितप्रज्ञाश्री **रात्रि भोजन त्याग आवश्यक क्यों?** पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी, प्रथम आवृत्ति, सन् 2009

-6 यू.जी., आदेश्वर टावर, सरदारपुरा, जोधपुर (राज.)

गीत

मान गुरुवर प्यारा है

श्री धर्मचन्द जैन

(शान्त-दान्त गंभीर, परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पण्डितरत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा 5 के जोधपुर चातुर्मास के समापन के प्रसंग पर प्रस्तुत एवं 81 वें जन्म-दिवस पर प्रकाशित गीतिका)

(तर्जः- मुनिवर मान महान् है.....।)

मान गुरुवर प्यारा है, सबका नयन सितारा है।
जो भी वन्दे मान गुरु को, उसका वारा न्यारा है।।
मान गुरुवर प्यारा है.....।।टेर।।

अचलचन्द जी पिता आपके, माँ छोटा के लाल जी-2,
भर यौवन में संयम लेके, अद्भुत किया कमाल जी-2,
विनय भाव को धारा है, मृदुता भाव अपारा है।
जो भी वन्दे.....।।1।।

लक्ष्मीचन्द जी की सेवा में, अध्ययन खूब बढ़ाया जी-2,
शास्त्र ज्ञान में रत रहकर के, समता को अपनाया जी-2,
श्रेष्ठ क्रिया को धारा है, उपाध्याय पद प्यारा है।
जो भी वन्दे.....।।2।।

मुनि गौतम के प्रवचन देखे, जन-जन के मन भाया जी-2,
अद्भुत शैली, मधुर भजन सुन, नर-नारी हर्षाया जी-2,
सरस वचन को धारा है, आशुकवि हमारा है।
जो भी वन्दे.....।।3।।

लोकचन्द्र जी की मौन साधना, ध्यान साधना न्यारी जी-2,
गहरा अध्ययन, अनुपम वाचन, शैली अजब निराली जी-2,
दर्शन मुनिवर प्यारा है, आख्यानों का पिटारा है।
जो भी वन्दे.....।।4।।

जितेन्द्र मुनिवर को देखो, सेवा गुण अपनाया जी-2,
नम्र और एकाग्र भाव से, ज्ञान-ध्यान विकसाया जी-2,
गुरु आज्ञा को धारा है, जीवन को संवारा है।
जो भी वन्दे.....।।5।।

मैनासुन्दरी रतनकंवरजी, शासन को चमकाया जी-2,
सती मण्डल की महिमा न्यारी, भाया बायां गाया जी-2,
चौमासी दिन प्यारा है, धर्म का ठाट अपारा है।
जो भी वन्दे मान गुरु को, उसका वारा न्यारा है।।6।।

-रजिस्ट्रार, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर(राज.)

संगोष्ठी–आलेख

रात्रिभोजन-त्याग में युवाओं की समस्याएँ

श्री पदमचन्द गाँधी

इस आलेख में लेखक ने युवाओं के द्वारा रात्रिभोजन का त्याग नहीं किए जाने हेतु अनेक कारण प्रस्तुत किए हैं, जिनमें अधिकतर कारण महानगरों में कार्यशील युवाओं से सम्बद्ध हैं। कुछ व्यापारी वर्ग के युवकों की समस्याएँ भी प्रस्तुत की गई हैं। समस्याएँ अनेक उठायी गई हैं, किन्तु संकल्प शक्ति हो तो समाधान भी सम्भव है। कतिपय समाधान इस प्रकार हो सकते हैं- (1) मुम्बई जैसे महानगरों के अनेक क्षेत्रों में जैन भोजनशालाएँ चलती हैं, उन भोजन शालाओं में सायंकाल सूर्यास्त से पूर्व जाकर अथवा टिफिन मंगवाकर समय पर भोजन किया जा सकता है। जो प्रतिदिन रात्रिभोजन का त्याग न कर सकें, वे अष्टमी, चतुर्दशी, पक्खी आदि पर्व तिथियों पर यह नियम पालना प्रारम्भ करें ताकि रात्रिभोजन-त्याग का अभ्यास बन सके एवं फिर आगे बढ़ा जा सके। (2) गुजरात में ऐसे रेस्टोरेण्ट हैं जहाँ सायंकालीन भोजन सूर्यास्त से पहले उपलब्ध हो जाता है। ऐसे रेस्टोरेण्टों से सम्पर्क किया जा सकता है। जैन भोजनकर्ताओं के कारण विश्व में 'जैन फूड' प्रसिद्ध है, इसी प्रकार यदि सायंकालीन भोजन सूर्यास्त के पूर्व करने वालों की मांग बढ़ जाए तो कहीं से भी टिफिन, रेस्टोरेण्ट, भोजनशाला आदि की व्यवस्था सम्भव है। यह सब संकल्पशक्ति पर निर्भर करता है। (3) यदि सायंकालीन भोजन की सूर्यास्त पूर्व किसी भी प्रकार से व्यवस्था न हो सके तो यह संकल्प/नियम ग्रहण किया जाए कि रात्रि में 8 बजे या 9 बजे बाद भोजन नहीं करुँगा। (4) जैन अब अल्पसंख्यक हैं, वे अपने धर्म की मर्यादा को पूर्ण करने के लिए भी घण्टे भर का कार्यस्थल से अवकाश लेकर भोजन कर सकते हैं। (5) युवा रात्रिभोजन के दोषों से प्रायः परिचित नहीं है। वह यदि इन दोषों से परिचित हो तो सम्भव है कि संकल्प ग्रहण करे एवं कुछ कदम आगे बढ़े। आप लेखक के विचारों को पढ़ें, किन्तु अन्य लेखकों के आलेखों में समाधान भी ढूँढने का प्रयत्न करें। सम्भावित समाधान के रूप में पाठक अपने लेख भी भेज सकते हैं। **-सम्पादक**

आज का युवा अति महत्त्वाकांक्षी है। वह सदैव सपनों की उड़ान भरते हुए अपनी

* आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म. सा. के सान्निध्य में 11 एवं 12 अक्टूबर 2014 को कोटा में आयोजित 'रात्रिभोजन : समस्याएँ और समाधान' विषयक राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी में प्रस्तुत आलेख।

योजनाओं को मूर्त रूप देने हेतु प्रयासरत रहता है। युवाओं के लिए समय अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। वह हर पल, हर क्षण की कीमत वसूलना चाहता है। युवा चाहे नौकरी या व्यवसाय में हो अथवा शहरी या ग्रामीण क्षेत्र का हो, सभी का लक्ष्य है- मुद्रा अर्जन अथवा आजीविका में व्यस्तता।

आज का युवा बहुत समझदार है, इण्टेलीजेण्ट है, धर्म के प्रति जिज्ञासु है, हैल्थ कोंशियस भी है। फिर भी ऐसी कौनसी परिस्थितियाँ हैं, जिनके कारण वह रात्रिभोजन करता है? मेडिकल साइन्स तथा धार्मिक दृष्टिकोण से रात्रिभोजन-त्याग ठीक है, लेकिन आज की परिस्थितियों में व्यावहारिक दृष्टिकोण पर यह 'खरा' नहीं उतरता। "जे रात में खाय ते नरक में जाय" वाली कहावत की भी युवक उपेक्षा कर रहे हैं। आज का युवा चाहकर भी रात्रिभोजन का त्याग नहीं कर पाता, क्योंकि इसके पालन में बहुत सारी समस्याएँ उसके सामने आती हैं, जिनका समाधान या तो है नहीं, यदि है तो बहुत ही मुश्किलों से भरा हुआ है। अतः वह रात्रिभोजन-त्याग से डरता है, कतराता है। इतना ही नहीं कई युवा तो इन्हीं नियमों की बन्दिशों के कारण स्थानक तक नहीं जाते हैं। आज अधिकांश (अपवादों को छोड़कर) युवाओं के सामने रात्रिभोजन की बहुत ही व्यावहारिक (Most Practical) एवं नहीं टाले जाने वाली (Unavoidable) समस्याएँ हैं, जिनका विवरण निम्नानुसार हैः-

1. संयुक्त परिवार का अभाव एवं टूटते एकल परिवार- कोई समय था जब 50-60 व्यक्तियों का खाना एक साथ बनता था। यह तो अब ऐतिहासिक सोच रह गयी है तथा कल्पना से परे है; लेकिन जो एकल या इकाई परिवार है उनमें भी सामंजस्य नहीं बैठ रहा है। वधू या वर कब छोड़कर चले जाएं, कहा नहीं जा सकता। उनमें आपसी सामंजस्य नहीं बनने के कारण खाना कौन बनाए, कब बनाए, यह विचारणीय प्रश्न है। वर्तमान एवं भावी पीढ़ी की औरतें, हो सकता है खाना बनाना ही भूल जाएं? इस स्थिति में 'रसोईदार' या होटल के भरोसे भोजन-व्यवस्था रहती है। ऐसे वातावरण में घर का भोजन ही नसीब नहीं होता, रात्रिभोजन तो दूर की बात बन जाती है। एकल परिवार को सभी तरह की जिम्मेदारियाँ वहन करनी पड़ती हैं, समय का अभाव भी रहता है।

2. सादा जीवन-स्तर के स्थान पर उच्च जीवन-स्तर अपनाना- आज जीवन-स्तर में सुधार हुआ है, घर का हर सदस्य अर्निंग मेम्बर (कमाऊ) बन रहा है, जबकि पहले एक कमाता था दस खाते थे। उच्च जीवन स्तर बनाने के लिए नई से नई वस्तुओं का प्रयोग किया जा रहा है। इसमें खाद्य पदार्थ भी शामिल हैं। आज सादा जीवन कोई जीना ही नहीं चाहता। युवा हर जगह नये आयाम को पसंद करता है। परिवार का प्रत्येक सदस्य अपने-अपने शिड्यूल में व्यस्त रहता है, सबकी दिनचर्या अलग-अलग होती है। उच्च जीवन स्तर

के लिए अधिक समय तक कार्य करना पड़ता है, जिससे वह अति व्यस्त रहता है। "Small is beautiful" 'थोड़े में सुख' वाली बात गौण हो गयी है। यदि उच्च जीवन स्तर को बनाए नहीं रखें तो घर, समाज, दफ्तर में 'हीनदृष्टि' से देखा जाता है, उसे सामजिक प्रताड़ना झेलनी पड़ती है।

3. भौतिकता का प्रभाव– भौतिकता का प्रभाव इतना घर कर गया है कि इससे बचने का आसार नज़र नहीं आता, क्योंकि आज युवा ही नहीं परिवार के अन्य सदस्य एवं बच्चे भी अवकाश के दिन बाहर जाना पसन्द करते हैं। शाम (रात्रि) को होटल में जाना पसन्द करते हैं। इतना ही नहीं "नाइट क्लब, नाइट पार्टी, नाइट डाँस, केण्डल लाइट डिनर" आज के युवाओं की प्रथम प्राथमिकता बन गयी है। सात दिनों के कार्यों के बाद वे अवकाश के दिन ऐसी ही जगहों पर जाना पसंद करते हैं, क्योंकि उन्हें इसी में आनन्द प्राप्त होता है। वे इसे वहन भी कर सकते हैं, क्योंकि अच्छा पैकेज मिलता है। उनकी क्रय शक्ति अधिक है, वे खर्च कर सकते हैं। इस व्यय को वे दुरुपयोग नहीं सदुपयोग मानते हैं। आज का युवा भोगवाद में विश्वास करता है। ऐसे स्थानों पर जाकर वे मनोरंजन की धारणा को स्पष्ट करते हैं।

4. कार्यस्थल से दूरियाँ– महानगरों में कार्यस्थल, चाहे नौकरीपेशा वालों के लिए हो या व्यापारी वर्ग के लिए, प्रायः बहुत दूर होते हैं। 30-40 किलोमीटर की दूरी सामान्य सी बात है। यदि नौकरी-पेशेवाला 10 से 6 बजे तक नौकरी करता है तो उसे सुबह 7 बजे चलना पड़ता है, जिसमें भी दिन का टिफिन साथ लेकर चलना पड़ता है। जब कार्यालय से घर हेतु प्रस्थान करता है तो रात्रि के 8 से 9 बज जाते हैं। वह यह उम्मीद के साथ घर आता है कि घर पर गरमागरम शुद्ध खाना खायेंगे। यह उसका सतत क्रम रहता है, एक दो दिन की बात नहीं है। अतः ऐसी स्थिति में रात्रिभोजन करना पड़ता है। यदि वह दिन में भोजन करना चाहे तो भी नहीं कर सकता। दो टिफिन संभव नहीं हैं, दूरियों के कारण दूसरा टिफिन घर से मंगवाना भी कठिन है। अगर किसी तरह पहुँच भी गया तो रोज दोनों वक्त टिफिन का खाना स्वास्थ्य के लिए भी ठीक नहीं है।

5. दिनचर्या में परिवर्तन नहीं होना– स्वास्थ्य के लिए कम से कम 8 घण्टे नींद लेना जरूरी होता है, लेकिन देखने में आता है कि आज की युवा पीढ़ी 6 घण्टे भी नहीं सो पाती है। बुजुर्गों की दी गयी दिनचर्या बदल गयी है। Early to bed & early to rise की कहावत चरितार्थ नहीं है। व्यक्ति जब 7 बजे घर से चलता है या रात्रि में घर पर 10 बजे बाद पहुँचता है तो स्वाभाविक है देर रात को खाना खायेगा, टी.वी. पर न्यूज या मनोरंजन चैनल देखेगा, 11-12 बजना स्वाभाविक है तो उससे जल्दी उठने की उम्मीद कैसे की जाए। एक दो दिन

उठ जाएगा लेकिन रोज संभव नहीं। यदि वह अपनी दैनिक चर्या में परिवर्तन कर भी देता है तो अन्य बातों की स्थिति समान रहती है, जैसे बाजार का लेट खुलना, देरी से बन्द होना, दूरियों का होना इत्यादि। ये परिस्थितियाँ ज्यों की त्यों बनी रहती हैं। अतः युवा अपनी दिनचर्या में बदलाव नहीं कर पाता।

6. प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण (Time of Competition)– 'कहीं मैं पीछे न रह जाऊँ' या 'मैं उससे आगे कैसे आऊँ' ऐसी सोच युवाओं में घर कर गयी है। वह अपने को अग्रणी बनाने के लिए अपनी कार्यक्षमता का पूर्ण उपयोग करता है, नई तकनीकी, नयी योजनाओं को लागू करता है। अब 'थोड़े में सब्र' की सोच समाप्त हो गयी है। ऐसी प्रतिस्पर्धा के वातावरण में युवाओं का अधिकांश समय अपने लक्ष्य पर ही केन्द्रित होता है। ऐसी स्थिति में वह खाना-पीना भी भूल जाता है, रात्रिभोजन-त्याग उसे कहाँ याद रहेगा? यदि वह नियम भी ले लेता है तो निभा नहीं पाता है, क्योंकि उसे अपने आपको श्रेष्ठ सिद्ध करना है।

7. टारगेट ओरिएण्टेड वर्क– अच्छे पैकेज के लिए अधिक गुणवत्ता तथा टारगेट निर्धारित करना आवश्यक हो गया है। चाहे व्यापारिक क्षेत्र हो, व्यावसायिक, वाणिज्यिक या अन्य। आज संस्थाएँ या कम्पनियाँ मुँह माँगा पैकेज देने को तैयार है। आई.आई.टी. होल्डर को 1.10 करोड़ का सालाना पैकेज तक दिया जा रहा है, वह इसी शर्त पर कि वे संस्था के निर्धारित टारगेट प्राप्त करेंगे। उसके लिए युवाओं को लेपटॉप इण्टरनेट इत्यादि सुविधाएँ प्रदान की जाती हैं। देखने में आता है कि आज का युवा सुबह से शाम तक मोबाइल एवं लेपटॉप पर ही रहता है। चाहे वह ट्रेन में हो या प्लेन में, घर में हो या दफ्तर में, ये उपकरण उससे छूट नहीं पाते, क्योंकि टारगेट निर्धारित है, उन्हें पूर्ण करने हेतु जनसम्पर्क करना, सूचनाएँ प्राप्त करना, रिपोर्टिंग करना आवश्यक होता है। दैनिक रिपोर्ट अपने उच्च पदस्थ को कर उसके निर्देशों का पालन करना जरूरी होता है, बोस की सुविधानुसार उसे कार्य करने पड़ते हैं। ऐसे में रात्रिभोजन-त्याग कहाँ याद आता है? यही स्थिति व्यापार की भी है।

9. कार्यशील घण्टों (Working hours) में वृद्धि– युवाओं के सामने आज रात्रिभोजन-त्याग करने में कार्यस्थल पर कार्यकारी घण्टों में वृद्धि होने से भी समस्याएँ उत्पन्न हो जाती है। कहीं जगह कार्य के 8 घण्टे निर्धारित है, कहीं पर 10 घण्टे, कई जगह 12 घण्टे निर्धारित हैं, इनसे भी युवाओं की व्यस्तता बढ़ी है। कई जगह इनके कार्य के घण्टे निश्चित होने पर भी कार्यालय से या प्रतिष्ठान से वे नहीं जा सकते, क्योंकि जो कार्य दैनिक रूप से पूर्ण करना है, उन्हें पूरा किए बिना वे नहीं जा सकते। यदि कार्य के घण्टे कम कर दिए जायें तो कार्य पूर्ण नहीं हो सकता। ऐसी स्थिति में सामान्यतया युवा घर पर देरी से पहुँच

पाता है, जिससे रात्रिभोजन-त्याग का पालन नहीं कर पाता।

10. केरियर पर ज्यादा ध्यान देना– आज का युवा रात्रिभोजन-त्याग के स्थान पर अपने केरियर या भविष्य को संवारने एवं सुरक्षित रखने के लिए अधिकांश समय अपने लक्ष्य पर केन्द्रित करता है। ऐसे में रात्रिभोजन-त्याग गौण हो जाता है। केरियर को छोड़ना व्यवहारिक नहीं हैं। वह सदैव इसी उधेड़बुन में लगा रहता है।

11. पति-पत्नी दोनों का कार्यशील होना– आज की भौतिकवादी संस्कृति में पति-पत्नी दोनों जॉब करते हैं। जो गृहिणियाँ जॉब नहीं करतीं वे भी आजकल अपने पति के व्यवसाय, वाणिज्य एवं दुकानों पर हाथ बँटाती हैं। जो गृहिणियाँ पहले घरों में रहकर घर का काम करती थीं वे आज बाजारों की दुकानों, व्यावसायिक प्रतिष्ठानों पर नज़र आती हैं। ऐसे में घर पर देरी से पहुँचना, देरी से खाना बनाना एवं खाना आम बात हो गयी है। यदि ऐसा नहीं हो तो व्यवसाय पर नियंत्रण नहीं रह पाता, नौकरों के भरोसे कार्य सुचारु रूप से नहीं चल पाता। यदि व्यवसाय को बढ़ाना है, या घर खर्च की पूर्ति करनी है तो पत्नी का कार्यशील होना आवश्यक है। कई बार तो यह समस्या आ जाती है कि रात्रि में भी खाना बाजार से मंगवाना पड़ता है।

12. बुजुर्गों की मानसिकता– बुजुर्ग चाहे कितने ही धार्मिक क्यों न हो, लेकिन जहाँ स्वार्थ की बात या अर्थ की बात आती है तो धार्मिकता गौण कर दी जाती है। बुजुर्ग ही सबसे पहले युवाओं को दुकान की चाबियाँ सौंपते हैं तथा देर तक कार्य करने को प्रेरित करते हैं। वे यही कहते हैं-"अभी तो तुम्हारे कमाने-खाने के दिन हैं, धर्म तो बाद में भी हो जायेगा"। कई तो यहाँ तक कह देते हैं- "कमायेगा नहीं तो खायेगा क्या?" इस उम्र में रात्रिभोजन-त्याग कहाँ जरूरी है। ऐसे में युवापीढ़ी पर इस मानसिकता का असर पड़ता है अन्यथा उन्हें प्रताड़ना झेलनी पड़ती है। अतः रात्रिभोजन-त्याग वे भी नहीं कर पाते हैं।

13. कार्यस्थलों पर मानसिक थकावट का होना– दिनभर के कार्यक्रम को निपटाने के बाद या अपने व्यावसायिक प्रतिष्ठानों को मंगल करने के बाद युवा अपने साथ लाते हैं मानसिक थकावट। यह सत्य है कि थका हुआ व्यक्ति रिलेक्स होना चाहता है। दफ्तर से आते ही भोजन करना अनमना एवं अजीब सा लगता है, वह कुछ देर आराम करना चाहता है। उसके बाद आराम से खाना चाहता है, ऐसी स्थिति में स्वाभाविक है वह रात्रिभोजन ही करेगा। क्योंकि दिन में तो वह घर पहुँच ही नहीं पाता है।

14. यातायात के सुगम साधनों का अभाव– यातायात के सुगम साधन नहीं मिलने से व्यक्ति कार्यस्थल से घर तक पहुँचने में लेट हो जाता है। कई जगहों पर 2 या 3 साधन

बदल कर जाना पड़ता है। उन्हें अनावश्यक इन्तजार करना पड़ता है, अधिक दूरियों के कारण हर व्यक्ति स्कूटर या कार के व्यय को वहन नहीं कर पाता। अतः सार्वजनिक यातायात सुविधाओं का उपयोग करना पड़ता है। बहुत कम संस्थाएँ, जो अपनी यातायात बसें उपलब्ध कराती हैं, वे भी कार्य समाप्ति पर ही चलती हैं, जिससे देरी होना स्वाभाविक है। अतः समय पर या दिन में घर पर पहुँचना सम्भव नहीं है।

15. रात्रिभोजन-त्याग टाइम मैनेजमेन्ट का पार्ट नहीं- आज की युवा पीढ़ी जो अपने टारगेट प्राप्ति हेतु, व्यवसाय संचालन हेतु या केरियर निर्माण हेतु जो टाइम मैनेजमेन्ट करती है, उसमें रात्रिभोजन त्याग को स्थान नहीं दिया जाता, क्योंकि इसको स्थान देने पर उन सब टारगेट की पूर्ति होने से बाधाएँ ही उत्पन्न होती हैं।

16. रात्रिकालीन सेवाओं का प्रारम्भ होना- आज सरकार युवा पीढ़ी की अति व्यस्तता को ध्यान में रखते हुए रात्रिकालीन सेवाएँ आरम्भ कर चुकी है। नाइट मार्केट चल रहे हैं, नाइट स्कूल कॉलेज चल रहे हैं, नाइट हॉस्पिटल चल रहे हैं। इतना ही नहीं ग्लोबलाइजेशन के कारण विदेशी कम्पनियाँ भारत के स्किल्ड वर्ग का अधिक उपयोग कर रही हैं। यह कार्य रात्रि में ही किया जा सकता है, इसके लिए उन्हें पर्याप्त आय का भुगतान होता है। इस प्रकार रात्रि सेवाओं का असर युवाओं पर पड़ रहा है, जिससे वे दिन में आराम करते हैं या देरी से उठते हैं तथा रात्रिभोजन-त्याग में सहयोग नहीं कर पाते।

17. भारत का परिवर्तनशील जलवायु- भारत विभिन्न जलवायुओं का देश है। यहाँ पर तीन ऋतुएँ होती हैं जो किसी अन्य देशों में नहीं होती हैं। सूर्य की स्थिति को देखते हुए गर्मियों में दिन बड़े होते हैं तथा 21 सितम्बर से छोटे दिन होना प्रारम्भ हो जाते हैं। अक्टूबर के बाद 5.30 बजे सूर्यास्त हो जाता है, जबकि कोई भी प्रतिष्ठान, सरकारी कार्यालय 6 बजे से पहले बन्द नहीं होते हैं। अतः घर पहुँचते-पहुँचते रात्रि हो जाती है। इस स्थिति को कैसे बदला जाय, विचारणीय प्रश्न है।

18. बढ़ता हुआ ट्यूरिंग जॉब- युवा पीढ़ी को अधिकतम टूर करने पड़ते हैं, जिन्हें टाला नहीं जा सकता। उनका घर पहुँचने का समय निश्चित नहीं होने से प्रायः रात्रि को ही पहुँचते हैं। इस कारण से भी रात्रिभोजन-त्याग में समस्याएँ आती हैं।

उपर्युक्त बिन्दुओं से स्पष्ट होता है कि आज की युवा पीढ़ी के सामने रात्रिभोजन त्याग एक समस्या है, भले ही यह धार्मिक दृष्टि से उपयुक्त हो। यदि स्वास्थ्य की दृष्टि से भी देखा जाए तो इसका स्वास्थ्य पर इतना असर नहीं पड़ता। क्योंकि आज का युवा अपने स्वास्थ्य के प्रति सजग है। इसको संधारित (Maintain) करने के लिए बहुत सारे साधन

उपलब्ध हो गये हैं। मेडिकल साइन्स भी इन पर कार्य कर रही है। इतना ही नहीं आज जीवन क्षमता (Life Expectancy) भी बढ़ी है। पहले साधारण व्यक्ति की उम्र 55-65 वर्ष थी, जो बढ़कर 65 से 76 वर्ष औसतन हो गयी है। अतः उक्त व्यावहारिक समस्याएँ जब तक सुलझाई नहीं जायेंगी, तब तक रात्रिभोजन-त्याग संभव नहीं है। यदि संभव है तो समय सीमा का निर्धारण जैसे मैं रात्रि 8 बजे या 10 बजे के बाद भोजन नहीं करूँगा। इस प्रकार के नियमों को निभाया जा सकता है। लेकिन सम्पूर्ण रात्रिभोजन-त्याग वर्तमान में युवकों के लिए संभव प्रतीत नहीं होता।

-25, बैंक कॉलोनी, महेश नगर (विस्तार-बी), गोपालपुरा बाईपास, जयपुर (राज.)

रात्रि में दूध नहीं पीया पण्डित नेहरु ने

संकलन एवं अनुवाद : श्री देवेन्द्रनाथ मोदी

इन्दौर नगर में जब भी कभी विशिष्ट सम्माननीय अतिथि का आगमन होता तब उनकी आतिथ्य सेवा का दायित्व सर हुकमीचन्दजी सेठ के आवास पर ही होता था। एक बार भारत के प्रधानमंत्री पण्डित श्री जवाहरलाल नेहरू इन्दौर पधारे तब सर 'हुकमीचंदजी' के यहाँ ठहरे। अनेक प्रतिष्ठित व्यक्तियों से मुलाकात करने एवं विभिन्न स्थानों पर उद्घाटन कार्यक्रमों में सम्मिलित होने के पश्चात् विशिष्ट व्यक्तियों से वार्ता में वे व्यस्त रहे। पंडित नेहरु के निजी सचिव रसोईघर में नेहरुजी के लिए गर्म दूध का प्रबन्ध करने गए। रसोईदार ने सेठ साहब की अनुमति प्राप्त करने हेतु कहा। निजी सचिव ने सर हुकमीचन्दजी के सुपुत्र को रसोईदार को गर्म दूध तैयार करने की अनुमति देने हेतु कहा। सेठ हुकमीचन्दजी के सुपुत्र ने निजी सचिव की बात सुनकर पंडित नेहरू के पास जाकर सविनय निवेदन किया-"बंगले के पास ही गाड़ी खड़ी है और ड्राइवर भी है ही। आपको चाहे वहाँ ले जायेगा। आप दूध लेकर वापिस लौट आइए। यहाँ रात्रि को कुछ नहीं मिलता, सिवाय पानी के। गुस्ताखी माफ़ करें।"

वातावरण में सन्नाटा छा गया। पंडित नेहरू शयन-कक्ष की ओर प्रस्थान करते-करते बोले:- "आज मुझे बहुत खुशी है कि आप सब रात में कुछ भी लिए बिना चलाते हैं, तो मुझे भी आज की रात कुछ नहीं लेना, ऐसा तय किया है।"

स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पण्डित जवाहरलाल नेहरु रात को सुखपूर्वक निद्रा लेकर प्रातःकाल सेठ हुकमीचन्द जी से विदा लेकर अग्रिम प्रवास के लिए प्रस्थान कर गए।

-गुजराती मासिक पत्रिका 'प्रबुद्ध जीवन', दिसम्बर-2013 से संकलित

गीत

वीर प्रभु की अन्तिम वाणी (5)

मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा.

(तर्जः- गुण सौरभ से रहे महकता, ऐसा अपना घर हो)
वीर प्रभु की अन्तिम वाणी, सुनलो और सुनालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।
उत्तराध्ययन में गुंजित होती, प्रभु शिक्षा अपनालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।

(बारहवाँ अध्ययन : हरिकेशीय)

पूर्व जन्म के जातिमद से, निम्न जाति में आये,
बोधि पाकर इक घटना से, मुनि पथ को अपनाये,
क्षमा-त्याग की गाथा सुनकर, धर्म का मर्म निकालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।73।।
बदसूरत थे हरिकेशीबल, बन गये आतम ज्ञानी,
सर्वोत्तम गुण के धारक की, महिमा सबने जानी,
साध्वाचार के शोभित मुनि को, वंदन कर गुण गालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।74।।
यज्ञ सदन पहुँचे भिक्षा को, तप गोपित थी काया,
हंसी उड़ाकर बोले ब्राह्मण, कौन भूत ये आया?
मन नहीं अच्छा उच्च वर्ण का, उससे कदम हटालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।75।।
मुनि के तप से आकर्षित हो, इक यक्ष बना अनुगामी,
महामुनि की देह में छिपकर, वचन कहे फिर नामी,
मुनिवर फिर भी मौन रहे थे, शान्त स्वभाव बनालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।76।।
मैं हूँ साधक भिक्षाजीवी, किंचित् भी नहीं लोभी,
बहुत यहाँ आहार बना है, बचा मिले मुझको भी,
कृषक तुल्य सम भिक्षा देकर, पुण्य की फसल उगालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।77।।

विद्यायुक्त विप्र ही होते, पुण्य क्षेत्र के वासी,
पात्र नहीं हो भिक्षा के तुम, क्षुद्र बने संन्यासी,
अन्न-पान नहीं हर्गिज देंगे, हमसे पिण्ड छुडालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।78।।

हिंसादि से जुड़े विप्र भी, पाप क्षेत्र ही होते,
वेदों का तुम अर्थ ना जानो, शास्त्रभार ही ढोते,
समता-साधक पुण्य क्षेत्र है, देकर लाभ कमालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।79।।

शिक्षक के आगे भिखमंगे, क्यों बढ़-चढ़ कर बोला,
सड़ जायेगा भोजन फिर भी, नहीं मिले इक तोला,
क्रोध में आकर अपशब्दों को, मुख से नहीं निकालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।80।।

समिति-गुप्ति से योजित, इन्द्रिय जयी हूँ याचक,
निर्दोष दान नहीं दोगे मुझको, कैसे यज्ञ हो सार्थक,
सुपात्र दान की महिमा भारी, देकर पुण्य कमालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।81।।

याज्ञिक ने आवेश में आकर, छात्रजनों को पुकारा,
कण्ठ पकड़कर बाहर करने, मुनिवर को फिर मारा,
गहरी चोट सही समता से, चित्त में क्षमा बसालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।82।।

उसी काल याज्ञिक की पत्नी, भद्रा ने यह देखा,
करने लगी शान्त सभी को, मन में दुःख की रेखा,
कथन किया मुनिवर के गुण का, हित की बात पचालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।83।।

देवयोग से नृप ने मुझको, अर्पित इन्हें कराया,
सुरनर पूजित ब्रह्मव्रती को, किंचित् नहीं सुहाया,
अपमानित हो भस्म न कर दे, मन में बात जमालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।84।।

कुपित बने यक्षों ने रोका, रौद्र बने छात्रों को,
मार गिराया कर दिए उनके, क्षत-विक्षत गात्रों को,

कथन किया भद्रा ने तब फिर, दिल में उसे बिठालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।85।।

भिक्षु का अपमान है करना, नख से शैल खुरचना,
लोह चबाना दाँतों से और, पाँव से आग कुचलना,
जीवन अपना चाहते हो तो, इनकी शरण थमालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।86।।

दारुण दशा देख छात्रों की, सोमदेव घबराए,
भद्रा संग जा मुनि से बोले, भंते! माफ कराएं,
ऋषिजन कुपित नहीं होते हैं, दयाभाव दिखलाओ।
जीवन धन्य बनालो.....।।87।।

रोष नहीं किंचित् भी मुझको, आगे कभी न होगा,
यक्ष यहाँ जो सेवा करते, उनने मारा होगा,
इसमें मेरी नहीं प्रेरणा, राग-द्वेष ना पालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।88।।

धर्म-अर्थ के ज्ञाता मुनिवर, शरण तिहारी आये,
सर्वजीवों के रक्षक पूज्यवर, तेरे वचन सुहाये,
अनुग्रह कर अब भिक्षा ले लो, दान की महिमा गालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।89।।

मासक्षपण का पारणक था, आहार मुनि ने ग्रहण किया,
देवों ने महिमा गाने को, अहोदान उद्घोष किया,
तप की महिमा जान इसे अब, जाति भरम मिटालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।90।।

यज्ञ क्रिया में पाप बंध है, शुद्धि नहीं अन्तर की,
आश्रव रोक आराधन करलो, अहिंसादि संवर की,
दहन जहाँ कर्म शत्रु का, ऐसा यज्ञ करालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।91।।

जीवात्मा ही यज्ञ कुण्ड है, तप ही उसका अगन है,
मन-वच काया योग पात्र है, कर्म वहाँ ईंधन है,
तन है कण्डा अरु संयम का, शान्ति पाठ पढ़ालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।92।।

धर्म सरोवर शुद्धि करन हो, ब्रह्म शान्ति तीरथ है,
अवगाहन कर निर्मल होते, राग-द्वेष छीजत है,
सच्चा रूप यज्ञ का जानो, सत्य धर्म अपनालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।93।।

(तेरहवाँ अध्ययन : चित्त संभूति)

पूर्व जन्म में चित्त संभूति, मुनिवर थे तपधारी,
सम्भूत मुनि को रानी के जब, केश लगे सुखकारी,
चित्त ने तब उनको समझाया, तप का पुण्य संभालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।94।।

चित्त मुनि की बात न मानी, भोग चाह में आकर,
मिले मुझे पर के बदले में, चक्री के सुख सागर,
तप के फल में भोग की इच्छा, तज संसार घटालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।95।।

प्रीत पुरानी पूर्व भवों की, इस भव में भटकाई,
तप-फल की चाहत में पाई, चक्री की प्रभुताई,
चित्त मुनि ने संयम धारा, कर्म का भार हटालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।96।।

नृत्य गीत में लीन ब्रह्मदत्त, यादें पूर्व की आई,
चित्त मुनि से मिलने आतुर, जो पहले था भाई,
पाप-पुण्य की उनकी चर्चा, सुनकर ज्ञान बढ़ालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।97।।

निदान किया था तुमने राजन, हुआ वियोग हमारा,
चक्री बोला शुभ कर्मों से, पाया भोग पसारा,
विरक्त बनो इनसे अब राजन, शील गुणों को पालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।98।।

रम्य महल धन धान्य पूर्ण है, चित्त मुनि स्वीकारो,
नाट्य गीत नारी सुख भोगो, कुछ ना और विचारो,
निकले तब उद्‌गार मुनि के, भोग का जीवन टालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।99।।

भारभूत आभूषण समझो, गीत विलाप सरीखे,

विडम्बनामय नाटक सारे, पापों के फल तीखे,
काम भोग दुःखदायी राजन्, उनसे राग हटालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।100।।

अधम से उत्तम जाति मिली है, शुभ कर्मों का फल है,
क्षणिक सुखों को तज अपनाओ, श्रमण धर्म मंगल है,
क्रूर मृत्यु कब आ जायेगी, कल पर बात न टालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।101।।

मित्र शत्रु परिचित रिश्ते सब, कोई काम न आए,
किये कर्म का फल तो राजन्, जीव अकेला पाए,
कर्म करे कर्त्ता का पीछा, पुण्य से पुण्य कमालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।102।।

भौतिक वैभव धरा रहेगा, जब होगा जाना परभव,
देह जलाकर सब लौटेंगे, क्या पत्नी और क्या बांधव,
मार बुरी है पाप कर्म की, दुष्कर्मों को टालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।103।।

समझ रहा हूँ बातें मैं पर, काम भोग दुर्जय हैं,
धर्म जानकर पाप न छूटे, कैसा यह विस्मय है,
ऐसे दलदल में फंसने से, निज को सदा बचालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।104।।

संयम जीवन जी न सको तो, आर्य कर्म अपनाओ,
प्राणी मात्र पर करुणा करके, दुर्गति को तो टालो,
आखिर काम भोग भी छूटे, सच्ची बात पचालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।105।।

भोग त्यागने की बुद्धि, नहीं लगती है तेरी राजन्,
व्यर्थ दिया उपदेश तुम्हें, अब जाता अपने केतन,
सिद्धि पाई चित्त मुनि ने, सोच बदल अब डालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।106।।

(क्रमशः)

संकलनकर्ता- नवरतन डागा, पूर्व महामंत्री, अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, 'लक्ष्य' 76, नेहरुपार्क, बखतसागर स्कीम, जोधपुर-342003 (राज)

विचार

स्वाध्यायियों की गुणवत्ता का प्रश्न

श्री राजेन्द्र कुम्भट (सेवानिवृत्त आई.आर.एस.)

स्वाध्याय संघ, जोधपुर के सह-संयोजक श्री राजेन्द्र जी कुम्भट का 22 नवम्बर 2014 को आकस्मिक स्वर्गगमन हो गया। उन्होंने देहावसान से पूर्व स्वाध्याय संघ एवं स्वाध्यायियों के सम्बन्ध में अपना चिन्तन जिनवाणी में प्रकाशनार्थ प्रेषित किया था। उनके विचारों का लाभ स्वाध्याय संघ एवं स्वाध्यायियों को प्राप्त हो सके, एतदर्थ उनके विचार यहाँ प्रस्तुत हैं।-सम्पादक

रत्नसंघ के सप्तम पट्टधर आचार्यप्रवर पूज्य श्री हस्तीमल जी महाराज साहब संघ के ऐसे अप्रतिम नायक थे, जिन्होंने जैन धर्म के प्रचार-प्रसार तथा सतत ज्ञान-ध्यान करने-करवाने हेतु स्वाध्यायी तैयार किए तथा उनकी प्रेरणा से पर्युषण में स्वाध्यायी सेवा के लिए स्वाध्याय संघ की स्थापना हुई। 12 स्वाध्यायियों से शुरु हुई स्वाध्यायी सेवा आज विशाल रूप ले चुकी है। अष्टम पट्टधर पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की प्रेरणा रहती है कि स्वाध्यायियों की गुणवत्ता में निरन्तर सुधार होता रहना चाहिए। स्वाध्याय-शिविरों एवं प्रेरणा के माध्यम से अभी स्वाध्यायियों की संख्या भी 1000 से अधिक हो गयी है। इस वर्ष के पर्युषण पर्व में कुल 153 स्थानों पर 405 स्वाध्यायियों द्वारा सेवा दी गयी। वे सभी स्वाध्यायी धन्यवाद के पात्र हैं। मैं उन सभी स्वाध्यायियों को स्वाध्याय संघ की ओर से बधाई व धन्यवाद देता हूँ तथा यह उम्मीद करता हूँ कि वे लगातार आगे भी सेवा देकर संघ का तथा हस्ती गुरु के द्वारा लगाये गए इस वृक्ष का सिंचन करते रहेंगे।

पिछले कई वर्षों में स्वाध्यायियों की गुणवत्ता का प्रश्न उठता रहा है। आज जब विभिन्न सम्प्रदायों द्वारा स्वाध्याय संघों के बनने व उनके द्वारा स्वाध्यायी सेवा के शुरु किये जाने के पश्चात् स्वाध्यायी की गुणवता का प्रश्न प्रधान हो गया है। इसलिए स्वाध्याय संघ का यह महत्त्वपूर्ण मुद्दा है कि स्वाध्यायियों की योग्यता को कैसे बनाये रखा जाये और कैसे उनकी योग्यता को बढ़ाया जाए। हर बार पर्युषण पर्व पर जाने वाले स्वाध्यायियों में से दो चार स्थानों से शिकायत आती है। इसका प्रमुख कारण स्वाध्यायियों में अनुशासन तथा ज्ञान की कमी है। जिस प्रकार संघ का कर्तव्य है कि उच्च गुणीजनों को स्वाध्याय-सेवा में भेजे, वैसे ही स्वाध्यायियों का भी कर्तव्य है कि वे उत्तरोत्तर अपनी योग्यता को बढ़ाये।

इसके लिए वरिष्ठ स्वाध्यायियों की जिम्मेदारी बहुत बढ़ जाती है। यह बात सही है कि एक ही स्थान पर सारे ही वरिष्ठ स्वाध्यायी नहीं भेजे जा सकते हैं, परन्तु उनके साथ जाने वाले कनिष्ठ स्वाध्यायियों पर नियंत्रण रखते हुए वे उन्हें धार्मिक क्रियाओं की जानकारी के साथ प्रशिक्षण दें तथा उनसे सेवा का लाभ लें।

स्वाध्यायियों का भी यह कर्तव्य है कि वे स्वाध्यायी की न्यूनतम योग्यता को प्राप्त करें। उनको कम से कम प्रतिक्रमण अर्थ सहित कंठस्थ होना ही चाहिए। केवल यह कहकर कि मुझे प्रतिक्रमण याद है, लेकिन सेवा देते समय प्रतिक्रमण नहीं करवा सके, तो पर्युषण सेवा में जाना उचित नहीं है। स्वाध्याय संघ का यह परम कर्तव्य है कि ऐसे स्वाध्यायियों को प्रतिक्रमण अर्थ भावार्थ सहित कंठस्थ कराने का उपक्रम करे।

स्वाध्यायियों की न्यूनतम योग्यता प्राप्त हो और सभी स्वाध्यायी प्रतिक्रमण को पूर्ण रूप से शब्दार्थ और भावार्थ सहित जानें इसके लिए स्वाध्याय संघ ने यह वर्ष प्रतिक्रमण वर्ष के रूप में मनाये जाने का लक्ष्य रखा है। इसी लक्ष्य से जोधपुर में 25-27 दिसम्बर को प्रतिक्रमण प्रशिक्षण शिविर लगाया जा रहा है। स्वाध्यायी के रूप में सेवा देने से पूर्व आवश्यक नियमों का पालन करने की जानकारी भी जरूरी है, ताकि किसी प्रकार की शिकायत नहीं आये। स्वाध्यायियों का भी कर्तव्य है कि वे नियमों का पूर्णरूप से पालन करें और स्वाध्याय संघ का सम्मान बढ़ायें। इसके लिए संघ की सामूहिक जिम्मेदारी हो जाती है कि वह भिन्न-भिन्न स्थानों पर प्रतिक्रमण-सम्बन्धी शिविर लगाये तथा क्षेत्रीय संयोजकों को भी इस संबंध में निर्देश दिए जाएं कि वे अपने क्षेत्र के सभी स्वाध्यायियों को प्रतिक्रमण कंठस्थ हो, इसके लिए उपाय करें। यह सुनिश्चित हो जाना चाहिए कि एक भी स्वाध्यायी बिना प्रतिक्रमण के नहीं रहे। स्वाध्याय संघ को शीघ्र ही इस सम्बन्ध में समयबद्ध कार्यक्रम बनाकर सभी क्षेत्रीय संयोजकों को उनसे अनुपालना रिपोर्ट भेजने का निर्देश भी दिया जाए। यह संभव नहीं है कि सभी स्वाध्यायी केन्द्रीय शिविर में उपस्थित हो पायें, अतः केन्द्रीय शिविर के पश्चात् सभी क्षेत्रों में क्षेत्रीय संयोजकों की सहमति से कार्यक्रम बनाया जाए, तभी इस प्रतिक्रमण वर्ष का अच्छा निष्कर्ष प्राप्त हो सकता है। जिन युवक-युवतियों ने आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की आठवीं की परीक्षा उत्तीर्ण की है, उन सबको स्वाध्यायी-सेवा देने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

स्वाध्यायियों को इस बात का गर्व होना चाहिए कि वे स्वाध्याय के द्वारा जिनशासन की प्रभावना कर रहे हैं। यह प्रभावना अपना ज्ञान बढ़ाकर और भी उत्कृष्ट तरीके से की जा सकती है। इसके लिए स्वाध्यायियों को प्रतिदिन नियमपूर्वक शास्त्र अध्ययन करना

चाहिए। संघ को भी प्रतिवर्ष उनसे प्रगति रिपोर्ट मांगनी चाहिए कि उसने वर्ष भर में क्या नया सीखा है। ज्ञान देना और लेना दोनों ही ज्ञान को बढ़ाने का कार्य करते हैं। इस दृष्टि से वर्ष भर में बढ़ाया गया ज्ञान स्वाध्याय सेवा के दौरान विभिन्न क्षेत्रों में बांटा जा सकता है। इसके उपरान्त भी स्वाध्याय एक तप है, जिससे कर्मों की निर्जरा होती है। प्रत्येक वर्ष स्वाध्यायियों को या तो लक्ष्य देना चाहिए अथवा उनके स्वयं के द्वारा निर्धारित लक्ष्य की जानकारी प्राप्त करनी चाहिए, और प्रतिवर्ष पर्युषण सेवा देने से पूर्व उनसे पूछा जाना चाहिए कि उसने क्या लक्ष्य को पूरा किया है?

जिन-जिन क्षेत्रों में स्वाध्यायी पर्युषण-सेवा देने जाते हैं वहाँ के संघाध्यक्ष को प्रत्येक स्वाध्यायी की कार्य प्रणाली, ज्ञान तथा कार्य संपादन के बारे में वास्तविक टिप्पणी देनी चाहिए, ताकि उनकी गुणवत्ता में सुधार किया जा सके और जो स्वाध्यायी कमजोर हों तो, उनके ऊपर विशेष ध्यान दिया जा सके। यदि स्वाध्यायी इस सेवा कार्य को मजबूरी समझ कर करेगा तो यह सेवा भार रूप लगेगी। उसमें न तो आनन्द आएगा न ही कर्म-निर्जरा का हेतु बनेगा। इस प्रकार की सेवा शासन की प्रभावना के बजाय संघ का नुकसान ज्यादा करेगी। आज रत्नसंघ के स्वाध्यायियों का नाम आदर के साथ लिया जाता है। इस आदर को अक्षुण्ण बनाये रखना प्रत्येक स्वाध्यायी की जिम्मेदारी है और यह तभी संभव है जब स्वाध्यायी गुणवान हो, क्रियाशील हो तथा क्षेत्र में अपनी छाप छोड़ कर आये। यदि ऐसा होता है तो अगले वर्ष उस क्षेत्र से मांग निश्चित रूप से आएगी।

स्वाध्याय संघ की एक दुविधा जो विशेष रूप से चेन्नई क्षेत्र में देखने को मिली, वहाँ पर महिला स्वाध्यायियों की कई क्षेत्रों से विशेष मांग रखी जाती है, जिसको पूरा करना मुश्किल हो जाता है। इसका प्रमुख कारण है कि चेन्नई के स्वाध्यायी पर्युषण-सेवा हेतु अपनी सुविधा के अनुसार ही जाना चाहते हैं और यदि उनको इच्छा वाला क्षेत्र नहीं मिलता है तो वे स्वाध्यायी-सेवा में जाने से मना कर देते हैं। यही कारण है कि स्वाध्यायियों की अच्छी संख्या होते हुए भी स्वाध्यायियों की कमी रहती है। स्वाध्यायियों को यह सोचना चाहिए कि वे सेवा देने जा रहे हैं, न कि मनोरंजन करने। इसलिए उनको जिस क्षेत्र में भी भेजा जाये, जाना चाहिए। ऐसा भी सुनने में आया है कि स्वाध्यायी पास का क्षेत्र लेते हैं और प्रतिदिन देवसिय प्रतिक्रमण के बाद अपने घर आ जाते हैं। स्वाध्यायियों को ऐसा करना उचित नहीं है। स्वाध्यायी आठ दिन के लिए सेवा में जाते हैं और इन आठ दिनों में उन्हें वहीं रहना चाहिए।

स्वाध्यायी का आठ दिन का आवास जितना हो सके, एक साधु की तरह होना

चाहिए। समय का पाबंद रहते हुए दिन भर के धर्म-कार्य करने चाहिए। स्वाध्यायियों को चाहिए कि वे जब तक सामायिक पूरी नहीं हो तब तक विद्युत् का उपयोग नहीं करें तथा सामायिक पूर्ण होने पर ही सामायिक वेश त्यागकर ही परीक्षा तथा प्रश्नोत्तर का कार्यक्रम रखें, इससे क्रिया का दोष नहीं लगेगा। जहाँ तक सम्भव हो रात्रि में पौषध या संवर करें।

प्रायः यह देखा गया है कि संघ के उच्च पदाधिकारी संघ में पर्युषण सेवा नहीं देते हैं। मेरा उन सभी पदाधिकारियों से विनम्र निवेदन है कि वे स्वाध्याय सेवा दें, ताकि स्वाध्यायियों में यह संदेश जाये कि सभी पदाधिकारी भी सेवा देते हैं, जिससे सभी स्वाध्यायियों का हौंसला अफजाई हो।

स्वाध्याय संघों की संख्या में वृद्धि हो जाने से पर्युषण के लिए क्षेत्रों की संख्या में लगातार कमी होती जा रही है। नए क्षेत्रों की खोज बहुत ही आवश्यक हो गई है। इसके लिए स्वाध्याय संघ के सभी पदाधिकारियों को सामूहिक रूप से प्रयत्न करके क्षेत्रीय संयोजकों के सहयोग से नए-नए क्षेत्रों की पहचान करके वहाँ पर प्रचार-प्रसार करने का पूरा प्रयत्न करना चाहिए। पुराने क्षेत्रों को बनाये रखना तथा नए क्षेत्रों में सेवा देने में स्वाध्यायियों का ज्ञान-ध्यान और उसमें उत्तरोत्तर वृद्धि ही पर्युषण-सेवा में रत्नसंघीय स्वाध्याय संघ के गौरव में अभिवृद्धि करेगी।

-'सौभाग्य', 12-13, तिलक नगर, भदवासिया रोड, जोधपुर (राज.)

बाल-स्तम्भ [अक्टूबर-2014] का परिणाम

जिनवाणी के अक्टूबर-2014 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'बचें हम बारूद पटाखों से' रचना के प्रश्नों के उत्तर 28 बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए। पूर्णांक 30 हैं।

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-500/-	गुंजन चौपड़ा-जोधपुर (राज.)	22.5
द्वितीय पुरस्कार-300/-	अक्षय नाहर-बिजयनगर-अजमेर (राज.)	22
तृतीय पुरस्कार- 200/-	श्रेयांस खाबिया, पीसांगन-अजमेर (राज.)	21.5
सान्त्वना पुरस्कार- 150/-	अमीषा कोठारी-अजमेर (राज.)	20.5
	अंशुल जैन कचौलिया-बैंगलुरू (कर्नाटक)	18
	पूर्वांशी जैन-जोधपुर (राज.)	18
	विशाल सिंघवी-जोधपुर (राज.)	17.5
	चिन्तन जैन-जोधपुर (राज.)	17.5

बाल-स्तम्भ

बैटिंग करो धुँआधार..... रनों की बौछार

श्री राकेश कोचर

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित इस रचना को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 20 वर्ष की आयु तक के पाठक 15 जनवरी 2015 तक जिनवाणी संपादकीय कार्यालय, सामायिक-स्वाध्याय भवन, कुम्हार छात्रावास के सामने, प्लॉट नं. 2, नेहरु पार्क, जोधपुर-342003(राज.) के पते पर प्रेषित करें। **उत्तर के साथ अपनी आयु तथा पूर्ण पते का भी उल्लेख करें।** श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरुणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-500 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-300 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 200 रुपये तथा 150 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल,जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है।

बच्चों! क्रिकेट का खेल तुम्हें पसंद है ना? हमारा यह जीवन भी 20-20 क्रिकेट के खेल की तरह ही है.... जीवन की इस 'पिच' पर साँसों की 'गेदों' में हमें अधिक से अधिक कर्म-निर्जरा के 'रन' बनाकर न केवल यह 'जीवन' मैच जीतना है, बल्कि केवलियों की नज़रों में 'मैन ऑफ द मैच' भी बनना है। इसका अर्थ समझ गये ना? इससे पहले की 'मृत्यु' बॉलर हमारी 'जीवन पारी' का अंत कर दे, हमें इतना बढ़िया खेल खेलना है जो सर्वज्ञ, सर्वदर्शी जिनेश्वर की नज़रों में सचमुच आदर्श हो।

तो तुम्हें भी मैन ऑफ द मैच बनना है ना? तो सुनिये ध्यान से, ये हैं विनिंग टिप्स-

1. महावीर के गुणों को हम जीवन में लायेंगे।
   जिनशासन के सितारे बनकर हम भी महावीर सम बन जायेंगे।।
2. नहीं सबको मिलता जैन धर्म, नहीं सबका होता ऐसा लक।
   महावीर की जो राह चलेगा, वही पहुँचेगा महावीर तक।।
3. ऐसी मीठी वाणी कहना, जैसे घुली हो मुँह में शक्कर।
   सुसाधु को ही वंदन करना, व्यर्थ के तुम नहीं रखना चक्कर।।
4. निर्ग्रंथ गुरु हो स्थानक में, तो नित्य उनके दर्शन को आना।
   भले छोटे-छोटे नियम लेना, पर सच्चे दिल से उन्हें निभाना।।
5. नहीं किसी को क्रोध दिलाना, बार-बार नहीं ड्रेस सिलाना।

धोवन पानी पीना पिलाना, मित्रों को भी प्रवचन में लाना।।

6. जितना हो सके पैदल ही चलना, भाव जीव रक्षा का मन में लाना।
दुःखद होता फल हिंसा का, बात-बात में नहीं फोन लगाना।।

7. जैन धर्म के हीरे बनकर, तुम सबके दिलों को हरना।
धर्म-ध्यान के लिये होता स्थानक, यहाँ दौड़ाभागी मत करना।।

8. जीवों को नहीं मारने का, व्रत कहलाता है अभयदान।
यह सब दानों से श्रेष्ठ है, ऐसा फरमाते हैं भगवान।।

9. व्यर्थ की हिंसा से बचना है सबको, अहिंसा का ही हो मन में ध्यान।
पटाखे का त्याग करके बच्चों, जीवों को देना तुम अभयदान।।

10. अपने हर कार्य को बच्चों, पाप-पुण्य के तराजू में तौलना।
वाणी कहना सत्य और मीठी, बात-बात में नहीं झूठ बोलना।।

11. अठारह पापों के त्यागी, पंचमहाव्रतधारी गुरु हमारे तारक हैं।
प्रभु आज्ञा में वे रहते हैं, समिति-गुप्ति के धारक हैं।।

12. किसी जीव को जानबूझकर नहीं मारना, नहीं उसे तुम कभी सताना।
हिंसा का फल होता दुःखदायी, मित्रों को भी यह बात बताना।।

13. बुढ़ापे और बीमारी में तो व्यक्ति रहता है खूब परेशान।
उससे पहले ही कर लो खूब निर्जरा, ऐसा फरमाते हैं भगवान।।

14. शांत और मीठे स्वभाव से, तुम बहाना प्रेम का झरना।
झुककर माफी मांगकर बात सलटाना, लड़ाई-झगड़ा मत करना।।

15. क्रिकेटर या फिल्म स्टार जैसा बनने की, तुम्हें नहीं रखना तमन्ना है।
कहना महावीर हमारे आदर्श हैं, हमें उनके जैसा बनना है।।

16. देव अर्हंत, गुरु निर्ग्रंथ, केवली भाषित है दया धर्म हमारा।
इन बातों को समझकर ही तुम समझोगे मोक्ष मार्ग प्यारा-प्यारा।।

17. क्षमा गुण को जिसने अपनाया उसने अपनी आत्मा का कल्याण किया।
अपराधी थे संगम और गोशालक, पर प्रभु ने क्षमा का दान दिया।।

18. तुम भले बन जाओ डॉक्टर, सी.ए., चाहे दुनिया दे दे मान-सम्मान।
इनसे नहीं मिलता मोक्ष कभी, प्रभु से माँगना केवलज्ञान।।

19. निर्ग्रंथ गुरु के दर्शन से खुलता शुभ कर्मों का खाता।
भावपूर्वक उनको वंदना करना, और पूछना सुखसाता।।

20. मार्ग में दिखे जब पंचमहाव्रतधारी तो ध्यान रखना यह बात।

विनयपूर्वक झुककर 'मत्थएण वंदामि' कहना, बस इतना ही है पर्याप्त।।

21. तुम बिलकुल सूझते रहना, जब अवसर हो गोचरी के लिये संतों के आने का।।
सोचना मुझे निर्दोष आहार बहराना है, ये मौका है अनंत पुण्य कमाने का।।

22. रात्रि-भोजन पाप है, इससे आत्मा पर लगते कर्मों के दाग।
जब भी हो संभव उस दिन रात्रि भोजन का तुम करना त्याग।।

23. नहीं करना तुम निंदा चुगली, नहीं किसी को गाली देना।
मत छोड़ना थाली में जूठा, जितना लगे उतना ही लेना।।

24. हर जीव को सुख प्यारा है, सबको ही रहती सुख की चाहत।
अनाथ-अपंगों की सेवा करके तुम पहुँचाना उनको राहत।।

25. कर्म ऐसे सताते हमको, जैसे काटे, जहरीले नाग।
सप्त व्यसन को समझकर बच्चों, तुम कर देना उनका त्याग।।

26. प्रभु की बात जो माने, उसको ही मिलते हैं सुख सारे।
आगम में लिखी हैं वे सब बातें, बत्तीस आगम हैं हमारे।।

27. धर्म राहों पर चलकर बच्चों, तुम अपना सोया भाग्य जगाना।
व्यर्थ चर्चा में न शामिल होना, न कभी झगड़ा बढ़ाना।।

28. आगम की बातें ध्यान से पढ़ना, और अर्थ में भी दिलचस्पी लेना।
कूलर, पंखा, ए.सी., लाइट इनको व्यर्थ में मत चलने देना।।

29. नहीं समझें कोई बात धर्म की या मन में हो कोई शंका तुम्हारे।
निर्ग्रंथ गुरु की अनुकूलता देखकर सविनय पूछना अपने प्रश्न सारे।।

30. परफ्यूम और शेंपू बनाने में जीवों की होती है हिंसा।
इतना त्याग करना बच्चों, धर्म हमारा है अहिंसा।।

31. पूर्व जन्म के पुण्य से ही जीवन में मिलते सारे सुख।
आगे भी सुख पाना हो तो धर्म से नहीं होना विमुख।।

32. धर्मरुचि अणगार ने देखो जीव रक्षा के लिये दिये थे अपने प्राण।
हम जानबूझकर जीवों को नहीं मारेंगे, आज ही ले लो ये पच्चखाण।।

33. समकित यानी सुदेव, सुगुरु, सुधर्म और सुशास्त्र पर विश्वास।
होगा जीवन में समकित तो मोक्ष मंजिल भी होगी पास।।

34. भगवान की बातों को सदा ही रखना दिल में अंकित।
मिथ्यात्व से बचकर रहना तुम, मजबूत करना गुण समकित।।

35. श्रेष्ठ मानव वे कहलाते जो पापों से बहुत डरते हैं।

एक बूँद कच्चा पानी वापरने में भी जीव असंख्य मरते हैं।।

36. अति दुर्लभ है मानव भव, इसे देवता भी चाहते हैं पाना।
मोक्ष मार्ग पर चलकर तुम, इस मानव भव को सफल बनाना।।

37. नहीं पटकना, नहीं फेंकना कोई वस्तु, जीव उससे मर सकते हैं।
यतना से व्यवहार करने वाले ही रक्षा जीव की कर सकते हैं।।

38. सामायिक लेने से पहले जगह और वस्त्र की प्रतिलेखना का रखना ध्यान।
फिर विधि से सामायिक लेकर स्वाध्याय द्वारा करना आत्मकल्याण।।

39. सीखो सामायिक, प्रतिक्रमण तुम, और ये हमेशा करते रहना।
यह सच्चा पूंजी-धन है जीवन का, मित्रों से भी तुम यही कहना।।

40. ज्ञान-ध्यान सीखने का बच्चों, मानव-भव में मौका अनमोल।
सामायिक और प्रतिक्रमण के बाद सीखना, दशवैकालिक और पच्चीस बोल।।

41. नहीं बार-बार तुम सजना-संवरना, न आईना देखना बार-बार।
आत्मा का अहित होता इससे, हमें तो आत्मा का करना है उद्धार।।

42. चलने, बोलने, खाने, सोने में यतना जैनी की पहचान है।
मत भूलना ये बात कभी, यतना धर्म का प्राण है।।

43. कहीं भी बैठने या वस्तु रखने से पहले वह जगह देखना ध्यान से।
अयतना से ऐसा न हो कि किसी जीव को, आप वंचित कर दें प्राण से।।

44. नहीं हौंसला अपना खोना, हर मुश्किल को हिम्मत से सहना।
समभावों से होती कर्म-निर्जरा, बात यह आज तुमसे है कहना।।

45. गरबा और होली खेलना ये कर्मबंधन के ही कोर्स हैं।
कर्मबंधन से बचने वाले ही पाते मोक्ष का सोर्स हैं।।

प्रश्न:-

1. जीवन को मैच क्यों कहा गया है?
2. किसका फल दु:खद होता है?
3. कवि ने किन-किन कार्यों को करने के लिए मना किया है? किन्हीं पाँच का उल्लेख कीजिए।
4. आगम कितने हैं? किन्हीं दस के नाम लिखो।
5. मानव भव अतिदुर्लभ क्यों है?
6. कवि ने जीवन में किन-किन बातों को अपनाने के लिए कहा है?

-सरोज हाई स्कूल के पीछे, हिवरी नगर, नागपुर (महा.)

(बाल-स्तम्भ का अक्टूबर-2014 का परिणाम पृष्ठ संख्या 75 पर दिया जा रहा है।)

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

डॉ. श्वेता जैन

संस्कृत व्याकरण (भाग-2)- सम्पादक- श्री प्रकाशचन्द जैन, ***प्रकाशक***- सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.), फोनः 0141-2575997, ***पृष्ठ***-119+6, ***मूल्य***-10 रुपये, सन्-2014

पण्डित श्री लक्ष्मण वासुदेव माण्डवगणे की अध्यापन शैली के आधार पर निर्मित संस्कृत व्याकरण का यह द्वितीय भाग है। यह भाग तीन प्रकरणों में विभाजित है। प्रथम प्रकरण में कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य की वाक्य रचना, कृदन्त, निष्ठान्त और हेत्वर्थक प्रत्यय; द्वितीय प्रकरण में प्रयोजक कर्मणि प्रयोग, प्रयोजक कृदन्त तथा तृतीय प्रकरण में इच्छार्थक कृदन्त, प्रत्यय, घञ्, ल्युट्, क्तिन् प्रत्यय, सति सप्तमी, संख्यावाची शब्द निरूपित किए गए हैं। अन्त में परिशिष्ट के अन्तर्गत उत्तरमाला, उत्तराध्ययन सूत्र टीका और आचारांग सूत्र टीका को सम्मिलित किया गया है। संस्कृत-शैक्ष के लिए यह पुस्तक उपयोगी है।

कथा सागर में डुबकी - लेखक एवं सम्पादक- मुनि श्री जयानंद विजयजी, ***प्रकाशक***- श्री गुरु रामचन्द्र प्रकाशन समिति, भीनमाल, ***प्राप्ति स्थान***- (1) शा. देवीचन्द छगनलालजी, सुमति दर्शन, नेहरूपार्क के सामने, माघ कॉलोनी, भीनमाल (राज.), फोन नं. 02969-220387 (2) श्री सीमंधर जिन राजेन्द्र सूरि मंदिर, शंखेश्वर तीर्थ मंदिर के सामने, शंखेश्वर, जिला-पाटण (गुजरात) ***पृष्ठ***-435+12, ***मूल्य***-उल्लेख नहीं।

प्रस्तुत पुस्तक में चरित्र और कथाओं के रूप में 61 रचनाओं का समावेश किया गया है। चरित्र और कतिपय कथाएँ मुनि श्री द्वारा लिखित हैं तथा कतिपय कथाएँ नरेन्द्रसिंह जैन, काशीनाथ पण्डित, साध्वी मणिप्रभाजी आदि की हैं। इसमें अजितनाथ, भरत, मघवा चक्री, अरनाथ, जय चक्रवर्ती, अभयकुमार, स्थूलभद्र, चिलातीपुत्र आदि के चरित्रों तथा हिंसा-अहिंसा का फल, भाग्य, कयवन्ना सेठ, जिनमती कथा, महाशतक श्रावक, धनश्री आदि कथाओं का समावेश है।

युवक परिषद्

आओ स्वाध्याय करें

श्री ज्ञाताधर्मकथांग में सीख बड़ी
आगम अध्ययन की दूसरी कड़ी।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के तत्त्वावधान में ''आओ स्वाध्याय करें'' शीर्षक के अन्तर्गत ज्ञाताधर्मकथांग सूत्र विषयक ''द्विमासिक आगम-प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता'' का आयोजन किया जा रहा है। इसके कुछ अनिवार्य नियम इस प्रकार हैं:-

1. प्रस्तुत प्रतियोगिता में एक अकेला व्यक्ति भी भाग ले सकता है और पाँच व्यक्तियों तक का ग्रुप भी भाग ले सकता है।
2. ग्रुप में भाग लेने वालों को कम से कम सप्ताह में दो बार साथ-साथ स्वाध्याय करना चाहिए।
3. उत्तर भेजने वालों को अपनी उम्र का उल्लेख अवश्य करना है और ग्रुप में भेजने वालों को ग्रुप का नाम एवं प्रत्येक सदस्य की उम्र लिखना अनिवार्य है।
4. प्रस्तुत प्रतियोगिता में प्रश्न 'श्री ज्ञाताधर्मकथांग सूत्र' के प्रथम श्रुतस्कंध के अध्ययन 11 से 19 एवं द्वितीय श्रुतस्कंध के आधार पर दिये गये हैं।
5. उत्तर-पत्रक प्राप्त होने की अंतिम तिथि 10 फरवरी, 2015 है।

उत्तर भेजने का स्थान- श्री अनिल जी, कार्यालय प्रभारी, अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद्, घोड़ों का चौक, वर्द्धमान अस्पताल के पीछे, जोधपुर-342001 (राज.) मोबाइल नं. 094141-40373

प्रश्न-समाधान हेतु सम्पर्क-सूत्र- श्री राजीव जी नाहर, सूरत-093751-65765

विशेष- समाधान Whatsapp पर श्री राजीव जी नाहर से प्राप्त किया जा सकता है।

(अ) अन्त्याक्षरी:- जिस अक्षर से उत्तर का अंत हो उसी से अगले प्रश्न का उत्तर प्रारम्भ होगा।

विशेष:- निम्न प्रश्न द्वितीय श्रुतस्कंध से ही हैं एवं अध्ययन के नाम हिन्दी में ही लिखने हैं।

1. सप्तम वर्ग के चतुर्थ अध्ययन का नाम ?
2. चतुर्थ वर्ग के एक अध्ययन का नाम ?
3. नवम वर्ग के एक अध्ययन का नाम ?
4. दशम वर्ग के एक अध्ययन का नाम ?
5. चतुर्थ वर्ग के एक अध्ययन का नाम ?

6. नवम वर्ग के एक अध्ययन का नाम?
7. द्वितीय वर्ग के एक अध्ययन का नाम?
8. द्वितीय वर्ग के एक अध्ययन का नाम?
9. पंचम वर्ग के एक अध्ययन का नाम?
10. प्रथम वर्ग के एक अध्ययन का नाम?

(ब) प्रश्नों के उत्तर एक शब्द में दीजिए-

11. काली देवी की दिव्य ऋद्धि के समापन को कौनसी शाला के दृष्टान्त से समझाया गया?
12. नौकावणिकों ने कौनसे द्वीप पर अश्वों को देखा?
13. चन्द्रप्रभा देवी पूर्वभव में कहाँ की निवासिनी थी?
14. भगवान ने साधु-साध्वी की आराधना-विराधना के संबंध में किस वृक्ष की उपमा दी?
15. सुंसुमा अध्ययन में वर्णित चोरपल्ली का नाम क्या था?
16. काली देवी के सिंहासन का क्या नाम था?
17. उदक नामक अध्ययन में जितशत्रु ने स्वयं के पश्चात् किसको राजा नियुक्त किया?
18. तृतीय वर्ग के देवियों का आयुष्य कितने पल्योपम से कुछ अधिक था?
19. पोट्टिला किसकी पत्नी थी?
20. कनकध्वज को जन्म के समय किस स्त्री की पुत्री से परिवर्तित किया गया?
21. दर्दुर नामक देव की दिव्य-ऋद्धि को आगमकार ने किस देव के समान बताया?
22. दर्दुर देव की सभा का क्या नाम था?
23. सुकुमालिका ने किस गणिका/वेश्या को देखकर पाँच पाण्डवों के साथ सुखभोग का बंध किया?
24. धन्य सार्थवाह को मध्य रात्रि में कौनसे नगर में जाने का चिन्तन उत्पन्न हुआ?
25. कण्डरीक मुनि को रोगाक्रान्त देख किसने उनके उपचार के लिए प्रार्थना की?
26. नागश्री ब्राह्मणी मरकर कौनसी नरक में उत्पन्न हुई?
27. धन्य सार्थवाह ने किस वृक्ष की छाया में जाने तक से भी मना किया?
28. 19 वें अध्ययन के अनुसार किस मुनि ने उत्थान से पतन को प्राप्त किया?
29. सुकुमालिका का विवाह सर्वप्रथम किससे किया गया?
30. श्रीकृष्ण वासुदेव का शंख-ध्वनि द्वारा किस अन्य वासुदेव से मिलन हुआ?

(स) जोड़ी मिलाइये– साथी बनाइये:–

यथा:– **सही उत्तर**

(अ) ग्यारहवाँ अध्ययन	(1) उदक	(अ) दावद्रव
(ब) बारहवाँ अध्ययन	(2) दावद्रव	(ब) उदक

31. राजा जितशत्रु	(1) चम्पानगरी	....
32. नंद मणियार – नागश्री	(2) धर्मघोष अणगार	....
33. अमरकंका	(3) सुबुद्धि	....
34. बावड़ी में आसक्ति से	(4) सोलह रोगांतक	....
35. पाँच पाण्डवों के भ्राता	(5) चिलातदास	....
36. धर्मरुचि अणगार	(6) राजा पद्मनाभ	....
37. पतन से उत्थान	(7) बावड़ी का मेंढ़क	....
38. तेतलिपुत्र बोधित श्रावक	(8) पुण्डरीक	....
39. सुंसुमा	(9) वासुदेव श्री कृष्ण	....
40. धन्य सार्थवाह	(10) कनकध्वज	....

(द) प्रत्येक कथा में उपसंहार रूप शिक्षा दी गई है, उसके अनुसार निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिए:–

41. विषय भोगों में आसक्त न होकर संयमचर्या में निरत श्रमण अन्त में किसको प्राप्त कर ही लेता है?
42. श्रोत्रेन्द्रिय के दमन न कर पाने के दोष की तुलना पिंजरे में बंद किस पक्षी से की गई है?
43. किस अध्ययन के अनुसार शुभाशुभ पुद्गलों में परिवर्तन होता रहता है?
44. श्रमणों को शरीर के रूप–रस बढ़ाने के लिए नहीं, बल्कि संयम निर्वहन के लिए .... करना चाहिए। (18 वाँ अध्ययन)
45. सर्वत्र रूप से भयभीत पुरुष के लिए एकमात्र शरणभूत अवस्था कौनसी है?
46. तीर्थंकर अरिष्टनेमि ने कहाँ और कितने साधुओं के साथ निर्वाण प्राप्त किया?
47. किन अणगार ने कड़वे तूम्बे का आहार कर संयम में समभाव का परिचय दिया?
48. कथानुसार सम्यक्त्व पर्यायों की हीनता से किस पर्याय में वृद्धि होती है?
49. श्रमणों को किस राजा के समान कामभोगों में आसक्त हो उत्थान से पतन की ओर नहीं जाना चाहिये?
50. दावद्रव के सभी जीर्ण वृक्ष सरीखे श्रमणों को किसकी उपमा दी गई है?

श्री महावीराय नम:

जय गुरु हीरा | श्री कुशलरत्नगजेन्द्रगणिभ्यो नम: | जय गुरु मान

जैन भागवती दीक्षा महोत्सव

गंगापुर सिटी (जिला-सवाईमाधोपुर) राज.

मुमुक्षु ओमप्रकाश जी जैन

मुमुक्षु रवि जी जैन

जिनशासनगौरव आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, व्यसन मुक्ति के प्रबल प्रेरक, **परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा.** के मुखारविन्द से तथा आत्मार्थी शान्त-दान्त-गम्भीर प्रबल पुरूषार्थी **परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा.** की मंगल मनीषा से **मुमुक्षु श्री ओमप्रकाश जी जैन (ओशो)** सुपुत्र श्री महावीरप्रसाद जी जैन एवं **मुमुक्षु श्री रवि जी जैन** सुपुत्र श्री राजेश जी जैन की जैन **भागवती दीक्षा** विक्रम संवत् 2071 माघ शुक्ला 10, **गुरुवार, 29 जनवरी, 2015** को **गंगापुर सिटी (जिला-सवाईमाधोपुर)** में होने जा रही है। **दीक्षा-महोत्सव** कार्यक्रम में व्रत-नियमयुक्त श्रद्धा समर्पित कर दीक्षा की अनुमोदना का लाभ प्राप्त करें।

:: वीर परिवार सम्पर्क सूत्र ::

वीरपिता श्री महावीरप्रसाद जी जैन-8432123052 | वीरताऊ श्री लक्ष्मण जी जैन-9414754844
वीरभ्राता श्री मोहित जी जैन-9887694504 | वीरपिता श्री राजेश जी जैन-7798692806

:: आवागमन के साधन ::

गंगापुर सिटी, दिल्ली-मुम्बई एवं जयपुर-बयाना रेलवे लाइन पर स्थित है। जयपुर से गंगापुर सिटी 140 किमी. एवं सवाईमाधोपुर से 70 किमी. की दूरी पर स्थित है। जयपुर से राज्य पथ परिवहन निगम की बसें प्रत्येक आधे घंटे से उपलब्ध रहती है। सवाईमाधोपुर से गंगापुर के लिए प्रत्येक घंटे रेल सेवाएं उपलब्ध हैं।

विनीत

मोफतराज मुणोत	**ज्ञानेन्द्र बाफना**	**पी. शिखरमल सुराणा**	**आनंद चौपड़ा**	**राजेश जैन**
संयोजक-संरक्षक मण्डल	राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष	राष्ट्रीय महामंत्री	क्षेत्रीय प्रधान

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

आयोजक

राजीव जैन	**रेवतीप्रसाद जैन**
अध्यक्ष	मंत्री

श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, गंगापुर सिटी

निवेदक

महावीरप्रसाद, नरेन्द्रकुमार, गिर्राजप्रसाद, प्रशान्त, हिमांशु, मोहित जैन, मौजपुर-पीपाड़ शहर

लक्ष्मणप्रसाद, हेमराज, राजेशकुमार, शत्रुन्जयकुमार, यशकुमार जैन, हिण्डौन सिटी-जलगांव

श्री महावीराय नम:

जय गुरु हीरा | श्री कुशलरत्नगजेन्द्रगणिभ्यो नम: | जय गुरु मान

जैन भागवती दीक्षा महोत्सव

हुबली (कर्नाटक)

मुमुक्षु खुशबूजी बागरेचा

मुमुक्षु शिल्पाजी सुराणा

जिनशासनगौरव आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, व्यसन मुक्ति के प्रबल प्रेरक, **परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा.** की आज्ञा से, आत्मार्थी शान्त-दान्त-गम्भीर प्रबल पुरूषार्थी **परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा.** की मंगल मनीषा से एवम् **साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा.** के शुभाशीर्वाद से एवं **व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा.** के मुखारविन्द से **हुबली (कर्नाटक)** में **मुमुक्षु सुश्री खुशबूजी बागरेचा मेहता** सुपुत्री श्री दलीचन्दजी बागरेचा मेहता एवं **मुमुक्षु सुश्री शिल्पाजी सुराणा** सुपुत्री श्री अमृतलालजी सुराणा की जैन भागवती दीक्षा विक्रम संवत् 2071 माघ शुक्ला 6, **रविवार, 25 जनवरी, 2015** को अग्रांकित कार्यक्रमानुसार सम्पन्न होगी। **हुबली नगर** में आयोजित **दीक्षा–महोत्सव** कार्यक्रम में व्रत-नियमयुक्त श्रद्धा समर्पित कर दीक्षा की अनुमोदना का लाभ प्राप्त करें।

दीक्षा महोत्सव कार्यक्रम

शोभायात्रा एवं अभिनन्दन समारोह	जैन भागवती दीक्षा महोत्सव
विक्रम संवत् 2071 माघ शुक्ला 5	विक्रम संवत् 2071 माघ शुक्ला 6
शनिवार, 24 जनवरी, 2015	रविवार, 25 जनवरी, 2015

समारोह स्थल : श्री मुरूसाविरमठ हाई स्कूल प्रांगण, हुबली

:: वीर परिवार सम्पर्क सूत्र ::

वीरपिता श्री दलीचन्दजी बागरेचा-9480041222	वीरपिता श्री अमृतलालजी सुराणा-9448362030
वीरभ्राता श्री कमलेशजी बागरेचा-9886515113	वीरभ्राता श्री संदीपजी सुराणा-9844062524
वीरभ्राता श्री अनिलजी बागरेचा-9743497004	वीरभ्राता श्री विक्रमजी सुराणा-9035049661

आवागमन के साधन :- हुबली कर्नाटक प्रान्त का प्रमुख शहर है। हुबली पधारने हेतु पूरे भारतवर्ष से रेल, बस और वायुयान सेवा उपलब्ध है।

विनीत

मोफतराज मुणोत	ज्ञानेन्द्र बाफना	पी. शिखरमल सुराणा	आनंद चौपड़ा	राजेन्द्र चोरड़िया
संयोजक-संरक्षक मण्डल	राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष	राष्ट्रीय महामंत्री	क्षेत्रीय प्रधान

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

आयोजक

छगनलाल मूरट	जवाहरलाल बाफना	अशोककुमार कोठारी	हीराचन्द तातेड़	महेन्द्रकुमार सिंघी	गौतमचन्द गोलेच्छा
अध्यक्ष	कार्याध्यक्ष	मंत्री	गौरवाध्यक्ष	अध्यक्ष	मंत्री

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ (पं.),हुबली | दीक्षा समिति

निवेदक

मोहनलाल,दलीचन्द,मदनलाल,अमृतलाल,बेटा पोता राणमलजी छोगाजी बागरेचा हुबली-कल्याणपुर

सुमेरमल,अमृतलाल,गौतमचन्द,बेटा पोता जेठमलजी मुन्नीलालजी सुराणा, हुबली-खण्डप

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के 405 स्वाध्यायियों द्वारा 153 क्षेत्रों में पर्युषण पर्वाराधना सम्पन्न कराने का शेष विवरण

(जिनवाणी, नवम्बर 2014 से क्रमशः)

मध्यप्रदेश क्षेत्र

75	कालुखेडा	-	श्री मानमल जी लसोड-प्रतापगढ
			श्री अम्बालाल जी चंडालिया-प्रतापगढ
			श्री विनोद जी लसोड-प्रतापगढ
76	आकोदिया मण्डी	-	श्री रामप्रसाद जी जैन-चौथ का बरवाडा
			श्री नंदलाल जी जैन-उनियारा
77	बेरछा मण्डी	-	श्री विरेन्द्र जी झामड-जयपुर
			श्री त्रिलोक जी जैन-जयपुर
			श्री पुखराज जी जैन-जयपुर
78	उन्हैल	-	श्री गौरव जी जैन-जयपुर
			श्री आशीष जी जैन-कोटा
			श्री अक्षत जी जैन-जयपुर
79	बागली	-	श्री महावीर प्रसाद जी जैन-चौथ का बरवाडा
			श्री नरेश कुमार जी जैन- चौथ का बरवाडा
			श्री ज्योति प्रकाश जी जैन-चौरू
80	सिवनी माल्वा	-	श्री शुभम जी जैन-जयपुर
			श्री अनुज जी जैन-जयपुर
			श्री आशीष जी जैन-चौथ का बरवाडा
81	जबलपुर	-	श्री राजेन्द्र जी पटवा-जयपुर
			श्री विलास जी कोचर-फत्तेपुर
			श्री चेतन जी धाडीवाल-कजगांव
82	हातोद	-	श्री प्रेमबाबू जी जैन-सवाईमाधोपुर
			श्री धर्मेन्द्र जी जैन-सवाईमाधोपुर
83	छिंदवाडा	-	श्री मुकेश जी बुरड-शिरपुर
			श्री राकेश जी संकलेचा-शिरपुर

			श्री नवनीत जी चौरडिया-शिरपुर
84	बडवानी	-	श्री रितेश जी सुराणा-जलगांव
			श्री महावीर जी कोठारी-नादगांव
85	गरोठ	-	श्रीमती शकुंतला जी तातेड
			श्रीमती कमला जी गोठी
86	सिद्धिकगंज, मगरदा	-	श्री अमृतलाल जी भटेवरा-इंदौर
			श्री लोकेश जी खाबिया-इंदौर
			श्री पारस जी भटेवरा-इंदौर
87	संजीत	-	श्री पारसमल जी ओस्तवाल-नैनवा
			श्री माणकचंद जी जैन-देई
88	बालाघाट	-	श्री मोहन जी पीपाडा-इंदौर
			श्री प्रकाश जी कोठारी-इंदौर
			श्री पदमा जी जैन-इंदौर

मेवाड़ क्षेत्र

89	सुरपुर	-	श्री पारसचंद जी जैन-इन्द्रगढ
			श्री महावीर जी जैन-कोटा
			श्री शिवकुमार जी जैन-कोटा
90	चान्दरास	-	श्रीमती लाडदेवी जी हीरावत-जयपुर
			श्रीमती प्रमिला जी जैन-जयपुर
			श्री अक्षय जी जैन-जयपुर
91	आदित्यपुरम	-	श्री कुशलचंद जी गोटेवाला-सवाईमाधोपुर
			श्री मुकेश जी जैन-सवाईमाधोपुर
92	दरीबा माईन्स	-	श्री विपुल जी जैन-जयपुर
			श्री अभिषेक जी जैन-जयपुर
			श्री शशांक जी जैन-जयपुर
93	नवाणिया	-	श्री अशोक जी पितलिया-सिंगोली
			श्री यश जी जैन-जयपुर
94	धनोप	-	श्रीमती लाडदेवी जी खारेड-जयपुर
			श्रीमती युगराज जी मेहता-जयपुर
			श्री आदित्य जी जैन-जयपुर
			श्री दीपक जी जैन-जयपुर

95	अरनोदा	-	श्रीमती प्रियदर्शना जी जैन-सवाईमाधोपुर
			कु. निहारिका जी जैन-सवाईमाधोपुर
			कु. आयुषी जी जैन-सवाईमाधोपुर
96	आजाद नगर, भीलवाडा	-	श्री पुखराज जी जैन-भीलवाडा
97	पारसोली	-	श्रीमती सुजाता जी जैन-चौथ का बरवाडा
			कु. रानू जी जैन-चौथ का बरवाडा
			कु. सोनिया जी जैन-चौथ का बरवाडा
98	नीमच सिटी	-	श्रीमती सुशीला जी बोहरा-जोधपुर
			श्री लक्ष्मीचंद जी छाजेड-समदडी
			श्रीमती प्रसन्न जी गांग-मुम्बई
99	छोटा भटवाडा	-	श्री धर्मचंद जी जैन-कुश्तला
			श्री रतनलाल जी जैन-कुश्तला
100	सांवरिया मण्डपिया	-	श्रीमती रतन देवी जी कर्णावट-जयपुर
			श्रीमती पुष्पा जी जैन-जयपुर
			श्री अखिल जी जैन-जयपुर
101	बेगूं	-	श्री कमलेश जी जैन-चित्तौड
			श्री अरिहंत जी जैन-जयपुर
			श्री धर्मेन्द्र जी जैन-बेगूं

मारवाड़ क्षेत्र

102	मेड़ता सिटी	-	श्री विनोद जी जैन-चेन्नई
			श्री मोहित जी मुथा-पीपाड सिटी
			श्री श्लोक जी जैन-जयपुर
103	भोपालगढ	-	श्री सुभाष जी पावेचा-इन्दौर
			श्री विमल जी पोरवाल-इन्दौर
			श्री मयंक जी भटेवरा-इन्दौर
104	मजल	-	श्री कन्हैयालाल जी जैन-भीलवाडा
			श्री रितिक जी जैन-जयपुर
			श्री नितिन जी जैन-जयपुर
105	तिंवरी	-	श्रीमती सुनीता जी मेहता-जोधपुर
			श्रीमती सायरबाई जी मेहता-जोधपुर
			श्री प्रदीप जी जैन-जयपुर

106	आसोप	-	श्री शांतिलाल जी सिंघवी-आसोप
			श्री कनकराज जी सुराणा-आसोप
107	आगोलाई	-	श्रीमती पुष्पा जी मेहता-पीपाड सिटी
			कु. खुशबू जी पारख-पीपाड सिटी
			श्री अखिल जी लुणावत-पीपाड सिटी

उत्तरप्रदेश क्षेत्र

108	कानपुर	-	श्री शुभम जी जैन-जयपुर(प्रतिक्रमण सेवा)
			श्री सम्यक जी जैन-जयपुर (प्रतिक्रमण सेवा)
109	वाराणसी	-	श्रीमती रतन देवी जी नाहर-बेगूं
			श्री महावीर जी धोका-बीड
			श्री कुणाल जी जैन-जयपुर
			श्री रिषभ जी जैन-जयपुर
110	बलरामपुर	-	श्री राजेन्द्र जी चौरडिया-इंदौर
			श्री विमल जी खिंवसरा-इंदौर

अन्य क्षेत्र

111	सिलवासा	-	श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना-जोधपुर
			श्री कांतिलाल जी जैन- जोधपुर
			श्री विजय जी नाहर-सूरत
112	चलथान	-	श्री जम्बूकुमार जी जैन-जयपुर
			श्री अशोक जी जैन-जयपुर
113	कडोदरा	-	श्री चंचलमल जी चौरडिया-जोधपुर
			श्रीमती रतनदेवी जी चौरडिया-जोधपुर
			श्री सुनील जी चौपडा-जोधपुर
114	मांडवी	-	श्री अरिहंत जी जैन-जयपुर
			श्री दीपेश जी जैन-जयपुर
			श्री सम्यक जी जैन-जयपुर
115	वालोड	-	श्री रितेश जी जैन-जयपुर
			श्री कवेश जी जैन-जयपुर
			श्री अजय जी जैन-जयपुर
116	बुहारी	-	श्री पवन जी जैन-अलीगढ

			कु. रिंकी जी जैन-अलीगढ
			कु. पूजा जी जैन-अलीगढ
117	कोलकाता	-	श्री राजेन्द्र जी लुंकड-ईरोड
			श्री राकेश जी जैन-सुमेरगंज मण्डी
			श्री रवि जी जैन-कोटा
118	दूदू	-	श्रीमति इंद्रा जी पारख-जयपुर
			श्रीमती लक्ष्मी जी जैन-जयपुर
			श्री यशजी जैन-जयपुर
			श्री दीपेश जी जैन-जयपुर
			श्रीमती प्रमिला जी बोथरा-जयपुर
119	नारनौल	-	श्री त्रिलोक जी जैन-जयपुर
			श्री निखिल जी बाघमार-चेन्नई
			श्री अविनाश जी सालेचा-चेन्नई
120	चाकसू	-	श्री विनोद कुमार जी जैन-चाकसू
121	पाउंटा साहिब	-	श्री राजेश जी भण्डारी-जोधपुर
			श्रीमती सरला जी भण्डारी-जोधपुर

पोरवाल क्षेत्र

122	दूणी	-	श्रीमती मोहनी बाई जी जैन-आलनपुर
			कु. चित्रा जी जैन-सवाईमाधोपुर
			कु. निकी जी जैन-कुण्डेरा
			श्री अंकुर जी जैन-जयपुर
123	चौरू	-	स्थानीय
124	कुश्तला	-	श्री सुरेश जी जैन-खेरली
			श्री महेन्द्र जी जैन-खेरली
125	उनियारा	-	श्री सौभाग्यमल जी जैन-सवाईमाधोपुर
126	सुमेरगंज मण्डी	-	श्रीमती जया जी गोखरू-जयपुर
			श्री मुकुल जी जैन-गोखरू-जयपुर
			श्री सावन जी जैन-जयपुर
127	जरखोदा	-	श्री रामपाल जी जैन-देई
128	देवली	-	श्री महेन्द्र जी जैन-सवाईमाधोपुर
			श्री कमलेश जी जैन-देई

			श्री अमन जी जैन–सवाईमाधोपुर
129	पचाला	–	श्री अभिषेक जी नाहर–इन्दौर
			श्री वितराग जी नाहर–इन्दौर
130	इन्द्रगढ	–	श्री संजय जी देशलहरा–इन्दौर
			श्री अभिषेक जी नाहर–इन्दौर
131	कुण्डेरा	–	श्रीमती विमला देवी जी जैन–सवाईमाधोपुर
			श्रीमती राजेश बाई जी जैन–सवाईमाधोपुर
132	श्योपुर कलां	–	श्री हरकचंद जी जैन–बजरिया
			श्री नीरज कुमार जी जैन–चौथ का बरवाड़ा
133	बज़रिया	–	श्री शिखरचंद जी छाजेड–करही
			श्री विमल जी पोरवाल–इन्दौर
134	बाबई	–	स्थानीय

पल्लीवाल क्षेत्र

135	खेरली	–	श्री पारस जी गिडिया–जोधपुर
			श्री शांतिलाल जी चौपडा–जोधपुर
			श्री संदेश जी जैन–जोधपुर
136	खौह	–	श्री कपूरचंद जी जैन–हिण्डौन सिटी
			श्री राजेश कुमार जी जैन–हिण्डौन सिटी
137	हिण्डौन सिटी	–	श्री शांतिलाल जी गांधी – सिंगोली
			श्रीमति सौरभ बाई जी गांधी–सिंगोली
			श्री संतोष जी गांधी–सिंगोली
138	गंगापुर सिटी	–	श्रीमती अकलकंवर जी मोदी–जोधपुर
			श्रीमती उषा जी बोहरा–जोधपुर
			श्रीमती सरिता जी गांग–जोधपुर
139	भरतपुर	–	श्री पदमचंद जी गोटेवाला–सवाईमाधोपुर
			श्री अंकित जी जैन–बजरिया
140	गोपालगढ	–	डॉ विमलचंद जी जैन–हिण्डौन सिटी
			श्री प्रसून जी जैन–खौह
141	नदबई	–	श्री अनिकेत जी जैन–जयपुर
			श्री सौरभ जी जैन–जयपुर
142	पहरसर	–	श्री मगनचंद जी जैन–फाजिलाबाद

			श्री हुकमचंद जी जैन-हिण्डौन सिटी
143	बरगमा	-	श्री ज्ञानचंद जी जैन-नदबई
			श्रीमती सुशीला जी जैन-नदबइ
144	हरसाना	-	श्री इंद्रचंद जी कोठारी-भीलवाडा
			श्री दिलीप जी जैन-भीलवाडा
145	करौली	-	श्री संजय कुमार जी जैन-गंगापुर सिटी
			श्री शीतल प्रसाद जी जैन-गंगापुर सिटी
146	मलपुरा	-	श्री पारसचंद जी जैन-भरतपुर
			श्री महावीर प्रसाद जी जैन-गंगापुर सिटी
147	रसीद्पुर	-	स्थानीय
148	वर्धमान नगर, हिण्डौन सिटी	-	श्री बाबूलाल जी जैन-सवाईमाधोपुर
			श्री धर्मचंद जी जैन-खेरली
149	वैर	-	श्री सुरेशचंद जी जैन-वैर
150	बौंल	-	श्री धर्मचंद जी जैन-बौंल
151	सहाडी	-	स्थानीय

कुशलचंद गोटेवाला — संयोजक

राजेश भण्डारी — सचिव

भूल सुधार

गुडवांचरी में श्रीमती सुशीलाजी बोहरा के स्थान पर श्रीमती सुशीलाजी गुलेच्छा पढ़ा जाए।

स्वास्थ्य-आलेख प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता का परिणाम

जिनवाणी के अक्टूबर-2014 के अंक में 'स्वास्थ्य-विज्ञान स्तम्भ' के अंतर्गत **'क्या हम स्वस्थ रहना चाहते हैं?'** के प्रश्नों के उत्तर 14 प्रतियोगियों से प्राप्त हुए। सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले प्रतियोगियों के नाम इस प्रकार हैं-

पुरस्कार एवं राशि-	नाम	
प्रथम पुरस्कार (1000/-रु.)	श्रीमती नीता जैन-जयपुर(राज.)	(69.5/70)
द्वितीय पुरस्कार (750/-रु.)	श्री चन्दनमल पालरेचा-जोधपुर (राज.)	(67.5/70)
तृतीय पुरस्कार (500/-रु.)	श्री दिलीप गाँधी-चितौड़गढ़ (राज.)	(66.5/70)

अन्य प्रतियोगी अपने अंक मालूम करना चाहें तो चंचलमल जी चोरड़िया-94141-34606 (मो.) से सम्पर्क कर सकते हैं। प्रतियोगी अपना नाम व पूरा पता उत्तरपुस्तिका एवं लिफाफे पर अवश्य लिखें। पता नहीं लिखे जाने पर उसे प्रतियोगिता में शामिल नहीं किया जाएगा।

समाचार विविधा

विचरण-विहार एवं विहार दिशाएँ : एक नज़र में

(01 दिसम्बर, 2014)

- **जिनशासन-गौरव परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 7** का दो सिंघाड़ों में इन्द्रगढ़ होते हुए अलीगढ़-रामपुरा की ओर विहार चल रहा है।
- **परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पंडितरत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 5** सामायिक-स्वाध्याय भवन, पावटा, जोधपुर में विराज रहे हैं। जोधपुर में विचरण सम्भावित है।
- **तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. आदि ठाणा 5** जयपुर में विचरण करते हुए श्यामनगर, सोडाला पधारे हैं।
- **साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा.आदि ठाणा 11 एवं व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 8** सिद्धान्तशाला पावटा, जोधपुर में विराज रहे हैं।
- **विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 5** महावीरनगर, मण्डी रोड़, सवाईमाधोपुर विराज रहे हैं।
- **विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 5** श्यामनगर, सोडाला, जयपुर विराज रहे हैं।
- **व्याख्यात्री महासती श्री मनोहरकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 3** आदर्शनगर, अजमेर विराज रहे हैं।
- **व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 7** वृन्दावन कॉलोनी, जयपुर में विराज रहे हैं।
- **व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 3** अलीगढ़-रामपुरा विराज रहे हैं।
- **व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा 9** वस्त्रापुर, अहमदाबाद पधारे हैं।
- **व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा 9** बैंगलोर से हीरलूर पधारे हैं, हुबली की ओर विहार संभावित है।
- **व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलता जी म.सा. आदि ठाणा 4** हैदराबाद से विहार कर नारायणपेठ पधारे हैं। रायचूर की ओर विहार संभावित है।

- व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 5 सतारा से तासगांव पधारे हैं, माधव नगर की ओर विहार चल रहा है।
- व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 4 कानपुर से आगरा की ओर विहार कर रहे हैं।
- सेवाभावी महासती श्री विमलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 7 सिद्धान्तशाला, पावटा, जोधपुर विराज रहे हैं।
- व्याख्यात्री महासती श्री रुचिता जी म.सा. आदि ठाणा 5 भीलवाड़ा से जोधपुर होते हुए गोटन पधारे हैं।
- व्याख्यात्री महासती श्री निष्ठाप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 3 रायचूर विराज रहे हैं।

आचार्यश्री का कोटा में प्रभावकारी चातुर्मास पूर्ण, सुमेरगंजमण्डी पदार्पण, अलीगढ़ की ओर विहार

29 जनवरी 2015 की दीक्षा-स्वीकृति गंगापुर शहर को

जिनशासन गौरव, आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, सामायिक-स्वाध्याय, व्यसन-मुक्ति एवं रात्रिभोजन-त्याग के प्रबल प्रेरक आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी सरस व्याख्यानी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 7 के पावन सान्निध्य में कोटानगरी का चातुर्मास धर्मजागरणा एवं तप-त्याग की दृष्टि से सफल रहा। पर्युषण पर्व में ऐतिहासिक उपस्थिति, मासक्षपण की शृंखला में कोटा में कीर्तिमान, 47 आजीवन शीलव्रत के खंद, पर्याप्त संख्या में दया, एकाशन, उपवास एवं अनेकविध दीर्घ तपस्याओं के साथ संवर-पौषध का निरन्तर क्रम उल्लेखनीय रहा। रात्रिभोजन-त्याग के 800 से अधिक संकल्प-पत्रों का प्राप्त होना समाजोत्थान की दृष्टि से पूज्य गुरुदेव के पावन चातुर्मास का सुफल है। कोटा संघ पूज्य आचार्य भगवन्त के उपकार के प्रति कृतज्ञ है।

यहाँ पर 2 नवम्बर को मांडल निवासी श्री अशोक जी खींवसरा ने अपनी सुपुत्री सुश्री रुचिता जी का आज्ञा-पत्र पूज्य गुरुदेव के पावन श्रीचरणों में समर्पित किया। इसी दिन पाली संघ की कार्यकारिणी के सदस्य दर्शन-वंदन हेतु पादयुग्मों में उपस्थित हुए। गंगापुर शहर का संघ 29 जनवरी 2015 को आयोज्य जैन भागवती दीक्षा के प्रसंग की विनति लेकर पूज्य आचार्य गुरुदेव की सेवा में उपस्थित हुआ। 4 नवम्बर को हरसाना से वीरपिता श्री शिवदयाल जी जैन सपरिवार पूज्य गुरुदेव की सेवा-सन्निधि में उपस्थित हुए। 5 नवम्बर को कोटा संघ की ओर से मुमुक्षु श्री ओमप्रकाशजी-पीपाड़ एवं श्री रविजी-जलगांव तथा मुमुक्षु सुश्री खुशबू जी बागरेचा एवं मुमुक्षु सुश्री शिल्पा जी सुराणा-हुबली की शोभायात्रा गीता भवन से प्रारम्भ हुई, जो जयघोषों के साथ उत्साह एवं उमंग के माहौल में स्थानक

भवन पहुँची। यहाँ प्रवचन-श्रवण के पश्चात् संघ की ओर से मुमुक्षु आत्माओं, उनके माता-पिता एवं परिजनों का बहुमान किया गया।

6 नवम्बर को कार्तिक पूर्णिमा का पावन दिवस था। यह चौमासी एवं पक्खी की दृष्टि से धर्म-साधना का विशेष दिवस था, किन्तु साथ ही चातुर्मास का अंतिम दिवस भी था। अतः श्रावक-श्राविकाओं में चातुर्मास के समापन एवं पूज्य आचार्यप्रवर के विहार को लेकर एक रिक्तता का अनुभव हो रहा था। भक्तजनों ने प्रवचन सभा में अपने उद्‌गार प्रकट कर चातुर्मास से हुए लाभ का उल्लेख किया। संघ मंत्री श्री बुद्धिप्रकाश जी जैन ने भावनाशील सभी वक्ताओं को क्रम से आमंत्रित किया। सर्वप्रथम श्राविका मण्डल की बहनों ने विदाई गीत का संगान किया। फिर श्री पारसमल जी बड़क्त्या ने कहा कि आचार्यश्री के प्रवचन आत्मा को झकझोरने वाले हैं। आपकी वाणी हमें सन्मार्ग प्रदान करती रहेगी। श्री रामस्वरूप जी जैन-रोशनपुरा वाले ने कहा कि मैं आँखें बंद करूँ या खोलूँ, गुरुवर दर्शन दे देना। श्रीमती पद्‌मावतीजी, श्रीमती लूंकड़जी, श्रीमती इंदुजी जैन, श्रीमती साधना जी लुंकड़ आदि ने भी अपने भाव व्यक्त किए। श्री चंदन जी जैन, श्रीमती मंजूजी मेहता, श्रीमती शिल्पा जी कोठारी, श्री वर्धमान जी कोठारी, सुश्री विधि जी कोठारी आदि ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि पूज्य आचार्यप्रवर आप दया के सागर हैं, आपके दर्शन से शांति मिलती है, आपकी वाणी मधुर एवं प्रभावशाली है। आपकी शरण सबसे श्रेष्ठ है। श्रीमती मंजूजी लुंकड़ ने कहा कि चारित्र आत्माओं की कभी विदाई नहीं होती, वे हमारे रोम-रोम में बसे हुए हैं। श्री नाथूलाल जी जैन ने कहा कि आचार्य भगवन्त में शीतलता, निर्मलता आदि गुण समाविष्ट हैं। श्री सौभाग्यमल जी जैन-कुश्तला ने 'हीराचन्द्र गुरु सबको प्यारा लागे' भजन से अपने भाव व्यक्त किए। श्रीमती अनिता जी जैन ने कहा कि आपश्री ने हमें ज्ञान सिखा कर समर्थ बनाने का प्रयत्न किया है। किन्तु हम सागर से अपनी गागर में कितना भर पाये हैं। श्रीमती कुसुम जी जैन ने कहा कि हम भाग्यशाली हैं जो पंचम आरे में भी ऐसे महान् आचार्य के पावन चातुर्मास से लाभान्वित हुए हैं। श्री गौतमजी संकलेचा-कुम्भकोणम् ने कहा कि आपकी चिन्तन-धारा सागर से गहरी है। श्री महावीरचन्द जी जैन-जरखोदा ने कहा कि व्यसनमुक्ति एवं रात्रिभोजन-त्याग के क्षेत्र में पूज्य गुरुदेव की प्रेरणा सदैव याद रहेगी। श्री हुक्मीचन्द जी चण्डालिया ने अपनी काव्यमय प्रस्तुति में कहा कि श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी एक बात फरमाते रहे हैं 'पाटे पर बैठने का सौदा घाटे का नहीं है', यह सदा याद रहेगी। श्री नौरतनमल जी मेहता-जोधपुर ने कहा कि तप-त्याग करते हुए आप लोग रात्रिभोजन-त्याग का पालन करेंगे तो चातुर्मास की स्मृति लम्बे समय तक रहेगी। श्रीमती रेखा जी हींगड़ ने कहा कि आपने हमें जीवन की

वास्तविकता से अवगत कराया है। श्री उम्मेदमल जी जैन-जरखोदा ने कहा कि संत-भगवन्त तो बहुत देखे हैं, पर आपकी छटा निराली है। श्री विमल जी जैन-हिण्डौन ने अपनी भावाभिव्यक्ति में कहा कि हिण्डौन संघ चातुर्मास एवं दीक्षा प्रसंग हेतु निवेदन कर रहा है, स्वीकृति फरमायें। श्री सुधीर जी जैन, श्री अंकित जी लोढ़ा, श्री हनुमान जी दुगड़ आदि ने अपने वक्तव्य में कहा कि ये शान्तवीर संत हैं, सदैव धर्म-ध्यान एवं मौन-साधना में रमण करते हैं। श्री जगदीश जी जैन ने चातुर्मास की विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की। श्री राजेन्द्र जी चौधरी-आवासन मण्डल (सवाईमाधोपुर), श्री सुरेशजी जैन-महावीर नगर संघ, श्री कमलेश जी जैन-छावनी संघ, श्री बाबूलाल जी जैन-टीचर कॉलोनी संघ, श्री अशोक जी जैन-पोरवाल संघ, श्री प्रेमचन्द जी ढढ्ढा आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किए। श्री रमेश जी कनेरिया ने कहा कि विगत 33 वर्षों से जैन धर्म से जुड़ा हुआ हूँ, किन्तु इस वर्ष जैसा धर्म-ध्यान पूर्व में कभी नहीं हुआ। संघमंत्री श्री बुद्धिप्रकाश जी जैन ने अपने भाव व्यक्त करने के साथ सभी आगत संघों का स्वागत अभिनन्दन किया। संघ अध्यक्ष श्री राजेन्द्रसिंह जी मेहता ने सबसे क्षमायाचना की तथा आगत बन्धुओं का आभार प्रदर्शन किया।

श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. ने अपने भाव व्यक्त करते हुए काव्यमयी शैली में कहा- "लो हम तो करें विहार, सुनो नरनार यहाँ से जावें, बस माफी आज दिरावें।" **महान् अध्यवसायी** एवं **सरस व्याख्यानी श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.** ने प्रवचन में फरमाया कि आज धर्म क्रांति का बिगुल बजाने वाले, सिद्धान्तों का शंखनाद फूंकने वाले, आगम आज्ञा के अनुसार चलने की प्रेरणा करने वाले वीर लोकाशाह का जन्म दिन है। चातुर्मास का आज अंतिम दिवस है। आप इस दिवस का धर्म-ध्यान की दृष्टि से पूरा लाभ लें।

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए फरमाया- चार घण्टे किसी के संग रहें तो समीप में रहने वाले पर कुछ प्रभाव पड़े बिना नहीं रहता। यदि संग अच्छा है तो उसके प्रभाव की प्रवृत्ति भी अच्छी होगी। कुसंग में चन्द मिनट गुजारना भी त्याज्य है। चार महीने का समय जिस गति से गुजरा, उसका आभास मात्र हुआ। सब यही कह रहे हैं कि ऐसा लगता है कि महाराज साहब कुछ दिन पूर्व ही तो पधारे और कल प्रस्थान करने जा रहे हैं। भाइयों! हमने कोटा के श्रावक-श्राविकाओं को चार मास तक सुनाया है। वैसे टेप रिकार्डर भी सुनाता है। पर हमने चेतना के माध्यम से चेतन भाइयों को सुनाया है। इसके पीछे हमारी यह भावना रही कि यहाँ पर धर्म का बीज वटवृक्ष बने। आपने रात्रिभोजन-त्याग का जो संकल्प लिया है उसका आप दृढ़ता से पालन करें। माला फेरें, ध्यान करें, मौन साधना करें, सामायिक करें, स्वाध्याय करें, यह सब क्रियाएँ धर्मस्थान में आकर करें। घर में मनके के साथ मन भी फिरता रहेगा, अतः धर्मस्थान में पधार कर ही

साधना करने का लक्ष्य रखें। पूज्य आचार्यप्रवर ने चातुर्मास काल में किसी को भी कारण विशेष एवं प्रसंग विशेष से अप्रिय कहा हो तो मन, वचन, काय से क्षमायाचना की।

मार्गशीर्ष की एकम 7 नवम्बर को प्रातः 9 बजे पूज्य श्री का विहार प्रारम्भ हुआ। धवल हस्ती के सदृश पूज्य गुरुदेव एवं मुनिपुंगव अपने पादयुग्म आगे बढ़ाते हुए स्थानक परिसर से ज्योंही बाहर पधारे, स्थानक भवन के बाहर खड़े श्रावक-श्राविकाओं ने जय-जयकार का उद्घोष प्रारम्भ कर दिया। पूज्य आचार्यप्रवर विहार कर बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, रामपुरा तक पधार आए तब तक भक्तों की पंक्ति का छोर नज़र नहीं आया। लगभग 4000 से अधिक की जनमेदिनी विहार में साथ चल रही थी। जिसे देखकर सभी आश्चर्य चकित थे। स्थानक भवन से समता भवन तक भक्तों की शृंखला का अद्वितीय दृश्य सबको आकर्षित कर रहा था। समूचे मार्ग में भगवान महावीर, आचार्य हस्ती, आचार्य हीरा का जयघोष व्याप्त हो रहा था। समता भवन में पूज्यप्रवर के पदार्पण के पश्चात् श्रद्धालु भक्तों ने मांगलिक श्रवण किया। पोरवाल एवं पल्लीवाल क्षेत्रों से हजारों की संख्या में श्रद्धालु भक्तों ने इस विहार का लाभ लिया।

8 नवम्बर को समता भवन से कोटा स्टेशन, 9 को तीरथ, 10 को गुडली पधारे। यहाँ गांधीनगर दिल्ली के प्रमुख श्रावक चातुर्मास की विनति लेकर उपस्थित थे। 11 को केशोरायपाटन पधारे। यहाँ पर बजरिया संघ दीक्षा प्रसंग का लाभ लेने की भावना से उपस्थित हुआ। श्री बाबूलाल जी खण्डेलवाल की आतिथ्य भावना प्रमोदजनक रही। यहाँ से 12 नवम्बर को अरनेठा, 13 को अडीला एवं 14 को कापरेन पधारे। यहाँ अलीगढ़-रामपुरा संघ दीक्षा-प्रसंग के लाभ की भावना से पावन श्रीचरणों में पुनः उपस्थित हुआ एवं पुरजोर विनति प्रस्तुत की। 16 नवम्बर को बलदेवपुरा में गंगापुर संघ दीक्षा-प्रसंग का लाभ प्रदान करने की विनति लेकर पुनः उपस्थित हुआ। पूज्य आचार्यप्रवर घाट का बराना, देईखेड़ा, लबान होते हुए 21 को लाखेरी स्टेशन पधारे। यहाँ से पूज्य श्री 22 नवम्बर को प्रातः ए.सी.सी. कॉलोनी पधारे, जहाँ बजरिया का महिला मण्डल पूज्य श्री की सेवा में उपस्थित हुआ। अतिथि सेवा का लाभ श्री सागरमल जी मांडावत की ओर से लिया गया। फिर नयापुरा होते हुए 23 की प्रातः अन्घोरा पधारे। यहाँ भी अनेक स्थानों से गुरुभक्त उपस्थित हुए। श्री जगदीश जी जैन ने अतिथि सेवा का लाभ लिया।

24 नवम्बर को पूज्य गुरुदेव का मंगलमय पदार्पण सुमेरगंज मण्डी की धरा पर हुआ। विहार में अच्छी संख्या में भाई-बहिनों की उपस्थिति रही। कोटा से अडीला तक कोटा संघ के कार्यकर्ताओं की एवं कापरेन से सुमेरगंज मण्डी तक सुमेरगंजमण्डी संघ के कार्यकर्ताओं की सेवाएँ प्रमोदकारी रहीं। हिण्डौन संघ का कोई न कोई प्रतिनिधि कोटा से

सुमेरगंज मण्डी तक पद विहार में साथ रहा। 26 नवम्बर को सुमेरगंज मण्डी में मुमुक्षु श्री ओमप्रकाशजी एवं मुमुक्षु श्री रविजी की शोभायात्रा उत्साह के साथ आयोजित हुई। **पूज्य आचार्यप्रवर ने दीक्षा-स्थल के लिए चल रही विनतियों को ध्यान में रखकर सुखे समाधे गंगापुर सिटी के लिए स्वीकृति फरमाई।** दीक्षा-स्थल की घोषणा होते ही पल्लीवाल क्षेत्रवासी प्रमुदित हो उठे एवं जयनाद के स्वर गुंजित हो गये। इस दिन अनेक ग्रामनगरों के श्रावक-श्राविका एवं संघ उपस्थित हुए, यथा- उमरगांव, अमलनेर, धुलिया, पीपलनेर, जम्मू-कश्मीर, चालीसगांव, जलगांव,बून्दी, जोधपुर, पीपाड़, अहमदाबाद, सूरत, सिंधनूर, बैंगलोर, चेन्नई, निमाज, माण्डल, मुम्बई, पाली, गंगापुर, हरमाड़ा, सातारा, पटेलावत, रतलाम, शिवपुरी, उज्जैन, नलखेड़ा, हरसाना, हिण्डौन, खोह, ब्यावर, दौसा, देई, बीजापुर, दिल्ली, बजरिया, सवाई माधोपुर, महावीर नगर, आलनपुर, हाउसिंग बोर्ड, आदर्शनगर, अलीगढ़-रामपुरा, चौथ का बरवाड़ा, कुश्तला, जरखोदा, बाबई, इन्द्रगढ़, कोटा, नासिक, रायचूर, इलकल, भोपाल, साक्री आदि।

सुमेरगंज मण्डी के श्रावक-श्राविकाओं की श्रद्धा,समर्पणता, सामंजस्य भावना तथा साधर्मि-वात्सल्य भावना प्रमोदकारी रही। 29 नवम्बर को पूज्यप्रवर संतमण्डली के साथ इन्द्रगढ़ शहर पधारे। यहाँ बजरिया का श्राविका-मण्डल गुरुचरणों में पुनः उपस्थित हुआ। 30 नवम्बर तक यहाँ विराजने के पश्चात् 1 दिसम्बर को अलीगढ़-रामपुरा की ओर विहार की संभावना है। **सम्पर्क सूत्रः-** श्री राधेश्यामजी पदमचन्दजी जैन गोटेवाला, पुराना खण्डार रोड, सवाईमाधोपुर-322001 (राज.),फोन नं. 07462-233550, 233140, 094618-63233, 094604-41570

सदार आजीवन शीलव्रत-आराधक सूची

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी महाराज के सवाईमाधोपुर चातुर्मास पश्चात् से कोटा चातुर्मास पूर्णाहुति तक सदार आजीवन शीलव्रत धारकों की सूची

(पूज्य आचार्यप्रवर की भावना है कि जिस वर्ष में उनकी जितनी आयु हो, उतने आजीवन शीलव्रती बनें। इस संदर्भ में 75 वर्ष की आयु में 75 की अपेक्षा 106 आजीवन शीलव्रती हुए हैं। कुल 2000 शीलव्रती पूज्य आचार्यप्रवर के पावन मुखारविन्द से बन चुके हैं।)

1. श्री राधेश्याम जी जैन-हाउसिंग बोर्ड-सवाईमाधोपुर, 2. श्री पूनमचन्द जी कोली-हाउसिंग बोर्ड-सवाईमाधोपुर, 3. श्री चिरंजीलाल जी जैन-रावलगाँव, 4. श्री रामविलासजी गुप्ता-कुंडेरा, 5. श्री मोहनलाल जी जैन-कुंडेरा, 6. श्री हनुमानप्रसाद जी गुप्ता-कुंडेरा, 7. श्री रामजीलाल जी बंसल-कुंडेरा, 8. राधेश्यामजी शर्मा-कुंडेरा, 9. श्री श्यामसुन्दरजी शर्मा-कुंडेरा, 10. श्री हरफूलजी माली-विवेकानंदपुरम्, 11.

श्री मोतीलाल जी जैन-रवांजना, 12. श्री प्रेमशंकरजी पारीक-रवांजना, 13. श्री रामनिवासजी चोबदार-रवांजना, 14. श्री बाबूलालजी जैन-रवांजना, 15. श्री छीतरमल जी जैन-पीपलवाड़ा, 16. श्री रामसिंहजी राजावत-पीपलवाड़ा, 17. श्री सूरजमल जी पटेल-पीपलवाड़ा, 18. श्री चौथमल जी जैन-खिजूरी, 19. श्री इन्दर लालजी साहू-खिजूरी, 20. श्री राजकुमारजी गुजर-मोहम्मदपुरा, 21. श्री छोटूलाल जी गुजर-मोहम्मदपुरा, 22. श्री कालूलाल जी गुजर-मोहम्मदपुरा, 23. श्री केसरलाल जी मीणा-रोशनपुरा, 24. श्री शब्बीर खान-मोहम्मदपुरा, 25. श्री रामविलास जी मीणा-कोटड़ी, 26. श्री कन्हैयालाल जी गुजर-सैंदरी (गुजरात), 27. श्री गिरधारी लालजी प्रजापत-बाबई, 28. श्री महावीर प्रसाद जी जैन-बाबई, 29. श्री नारायण जी प्रजापत-बाबई, 30. श्री रामफूल जी प्रजापत-बाबई, 31. श्री हीरालाल जी कुमावत-बाबई, 32. श्री श्यामलालजी सेन-बाबई, 33. श्री मूलचन्द जी अग्रवाल-सुमेरगंज मण्डी, 34. श्री महेन्द्र जी जैन-सुमेरगंज मण्डी, 35. श्री पारस मल जी जैन-सुमेरगंज मण्डी, 36. श्री पारसमल जी जैन-इन्द्रगढ़, 37. श्री चौथमल जी जैन-करवर, 38. श्री लक्ष्मीनारायण जी कारीगर-केथूदा, 39. श्री विमलकुमार जी जैन-उणियारा, 40. श्री रमेशचन्द जी जैन-उणियारा, 41. श्री रतनलाल जी जैन-उणियारा, 42. श्री समीरमल जी जैन-उणियारा, 43. श्री महावीर प्रसाद जी जैन-उणियारा, 44. श्री गोविन्द जी धाकड़-नाहरगंज, 45. श्री उम्मेदचंद जी जैन-जरखोदा, 46. श्री देवकरण जी गूजर-जरखोदा, 47. श्री मोरपाल जी धाकड़-जरखोदा, 48. श्री महावीर प्रसाद जी जैन-सहण (नैनवा), 49. श्री नन्दकिशोरजी जैन-देई, 50. श्री महावीर प्रसाद जी जैन-देई, 51. श्री भवानी शंकरजी शर्मा-देई, 52. श्री देवीलाल जी लक्षकार-देई, 53. श्री गिर्राज जी जैन (सदार नहीं)-मौजपुर, 54. श्री राजकुमारजी सर्राफ-कानपुर, 55. श्री मांगीलाल जी बड़जात्या-अजनेरी, 56. श्री हीरालाल जी गूजर-रानीपुरा, 57. श्री किशोर कुमारजी लूंकड़-जलगांव, 58. श्री टीकमचन्द जी भड़कत्या-देवपुरा, 59. श्री नन्दकिशोर जी मीणा-जरखोदा, 60. श्री ज्ञानचंदजी लोढ़ा-वल्लभवाड़ी-कोटा, 61. श्री सुरेन्द्र कुमारजी लूंकड़-वल्लभवाड़ी-कोटा, 62. श्री प्रकाशचन्दजी सिसोदिया-तलवंडी-कोटा, 63. श्री रामविलास जी जैन-महावीर नगर द्वितीय-कोटा, 64. श्री कृष्ण कुमार जी कंजोलिया-आर.के.पुरम्-कोटा, 65. श्री महावीर प्रसाद जी जैन-श्रीनाथपुरं-कोटा, 66. श्री पारसचन्द जी भण्डारी-दादावाड़ी-कोटा, 67. श्री छीतरमल जी जैन-छावनी-कोटा, 68. श्री प्रदीपकुमारजी नानावटी-रामपुरा-कोटा, 69. श्री नेमीचन्द

जी नाहर-रामपुरा-कोटा, 70. श्री बद्रीलाल जी अग्रवाल-रामपुरा-कोटा, 71. श्री सुरेशकुमारजी जैन-गुलाबवाड़ी-कोटा, 72. श्री बिहारीलाल जी जैन-विज्ञाननगर-कोटा, 73. श्री देवीप्रसाद जी अग्रवाल-रामपुरा-कोटा, 74. श्री गौतमकुमार जी लोढ़ा-बजाजखाना-कोटा, 75. श्री महावीरचन्द जी छाजेड़-चेन्नई, 76. श्री कैलाशचंदजी मुणौत-बसंतविहार, 77. श्री बाबूलाल जी जैन-विज्ञाननगर-कोटा, 78. श्री भूपेन्द्र जी भण्डारी-वल्लभवाड़ी-कोटा, 79. श्री प्रसन्नचन्द जी कटारिया-भीलवाड़ा, 80. कल्याणचन्द जी मुणोत-लासूर स्टेशन, 81. श्री बाबूलाल जी जैन-महावीर नगर द्वितीय-कोटा, 82. श्री विनयचंद जी जैन-मेहरापाड़ा-कोटा, 83. श्री प्रसन्नचन्द जी गांग-मुम्बई, 84. श्री करोड़ीमल जी बनवट-आशापुरा-खंडवा, 85. श्री महावीरचन्द जी चौधरी-गुलाबवाड़ी-कोटा, 86. श्री मन्नूलाल जी मुणोत-चेन्नई, 87. श्री संजयकुमारजी सुराणा (38 वर्ष)-जयपुर, 88. श्री भीमसिंह जी-विक्रमजी दर्जी-रावतभाटा, 89. श्री टीकमचन्द जी कोटेचा-कोटा, 90. श्री जतनराज जी बागमार-चेन्नई, 91. श्री बाबूलाल जी जैन-छावनी-कोटा, 92. श्री बाबूलाल जी जैन-महावीरनगर द्वितीय-कोटा, 93. श्री रमणलाल जी चोरडिया-पिपलनेर, 94. श्री बाबूलाल जी जैन (चौरु वाले)-टीचर कॉलोनी-कोटा, 95. श्री रतनलाल जी जैन-घंटाघर-कोटा, 96. श्री शांतिलाल जी जैन-महावीर नगर तृतीय-कोटा, 97. श्री बाबूलाल जी जैन-लाडपुरा-कोटा, 98. श्री दयाल जी जैन-गुलाबवाड़ी-कोटा, 99. श्री नेमीचन्द जी भण्डारी-मेहरापाड़ा-कोटा, 100. श्री कांतिलाल जी जैन-मेहरापाड़ा-कोटा, 101. श्री बाबूलाल जी जैन-टीचर्स कॉलोनी-कोटा, 102. श्री धर्मचन्द जी जैन-गुमानपुरा-कोटा, 103. श्री मदनलाल जी जैन-महावीर नगर-कोटा, 104. श्री पृथ्वीराज जी जैन-टीचर कॉलोनी-कोटा, 105. श्री बाबूलाल जी जैन सर्राफ-महावीर नगर-कोटा, 106. श्री हिम्मत सिंह जी लोढ़ा-रामपुरा-कोटा।

उपाध्यायप्रवर का जोधपुर चातुर्मास सुसम्पन्न, लक्ष्मीनगर होते हुए पावटा पदार्पण

शान्त-दान्त-गम्भीर पूज्य **उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा.**, मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा 5 एवं **शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा.**, व्याख्यात्री महासती श्री रतनकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 9 के पावन सान्निध्य में यह चातुर्मास ज्ञान, दर्शन, चारित्र एवं तप की आराधना के साथ उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ। कार्तिक पूर्णिमा 6 नवम्बर को चौमासी एवं पक्खी का दिन था। इस दिन श्रीमती बबीताजी धर्मपत्नी श्री अशोक जी मेहता ने 9 के प्रत्याख्यान किए तथा

तेले की तपस्याएँ हुईं। श्रीमती मानकंवरजी एवं श्री धनराज जी कवाड़ (श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. के सांसारिक बहन-बहनोई) ने शीलव्रत के प्रत्याख्यान उपाध्यायप्रवर के मुखारविन्द से ग्रहण किए। मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा. ने प्रवचन में चौमासी के महत्त्व पर प्रकाश डाला। साथ ही पूज्य पुरुष श्री लोकाशाह के द्वारा कृत क्रियोद्धार की विवेचना कर स्थानकवासी परम्परा की महत्ता से अवगत कराया। चातुर्मास के अन्तिम दिन जोधपुर संघ के अध्यक्ष श्री धनपतचन्दजी सेठिया ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि यह चातुर्मास त्रिरत्न की आराधना एवं विशेषतः तपस्या की दृष्टि से श्रेष्ठ रहा है। उन्होंने तन-मन एवं धन से सहयोग देने वाले सभी महानुभावों का तथा विशेष रूप से शक्तिनगर क्षेत्र के सभी सहयोगियों का आभार प्रकट किया। स्थानीय युवक परिषद् के श्री गजेन्द्र चौपड़ा ने विदाई गीत प्रस्तुत किया।

7 नवम्बर को शक्तिनगर के सामायिक-स्वाध्याय भवन से विहार कर पूज्य उपाध्यायप्रवर संत मण्डली के साथ दाधीच नगर स्थित महावीर निवास पधारे। विहार के समय विशाल जनमेदिनी उपस्थित थी। विहार के पश्चात् मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा. ने श्रावक-श्राविकाओं को प्रेरणा करते हुए फरमाया कि इस चातुर्मास में आपने जो ज्ञान-ध्यान सीखा है उसे निरन्तर पल्लवित-पुष्पित करें।

शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा 9 शक्तिनगर से विहार कर पावटा बी रोड़ स्थित गौतमजी भण्डारी के पुराने कार्यालय भवन पर पधारे। वहाँ से दूसरे दिन विहार कर लक्ष्मीनगर स्थित कांकरिया स्थानक पधारे।

पूज्य उपाध्यायप्रवर 7 से 14 नवम्बर तक दाधीच नगर विराजे, जहाँ के सामुदायिक भवन में सात प्रवचन हुए। श्रीमती विमला जी चौपड़ा धर्मपत्नी श्री बुधमल जी चौपड़ा ने 14 नवम्बर को 11 की तपस्या पूर्ण की। शक्तिनगर क्षेत्र की पुरजोर विनति को ध्यान में रखते हुए पूज्य उपाध्यायप्रवर 15 नवम्बर को पुनः शक्तिनगर स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन पधारे। यहाँ मुमुक्षु बहन सुश्री शिल्पा जी सुराणा एवं मुमुक्षु सुश्री खुशबू जी बागरेचा ने तीन दिन रुककर सेवा का लाभ लिया तथा मार्गदर्शन प्राप्त किया। मुमुक्षु बन्धु श्री ओमप्रकाश जी जैन (ओशो) एवं श्री रवि जी जैन भी जोधपुर पधारे। 17 नवम्बर को मुमुक्षु भाई-बहनों की शोभायात्रा एवं स्वागत-अभिनन्दन का सुन्दर आयोजन हुआ। चार मुमुक्षुओं की एक साथ शोभायात्रा होने से श्रावक-श्राविकाओं में बड़ा उत्साह देखा गया। शक्तिनगर क्षेत्र ने इस आयोजन में विशेष रुचि ली। शोभायात्रा के पश्चात् भोजन की व्यवस्था श्री अम्बालाल जी (सुपुत्र स्व. श्री जसराज जी कर्णावट, अरटिया कला निवासी), चेन्नई की ओर से की गई।

व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 10 सरस्वती नगर से अपना

सफल चातुर्मास पूर्ण कर 17 नवम्बर को शक्तिनगर स्थित सामायिक स्वाध्याय भवन पधारे। उनसे पूर्व पाली का प्रभावी चातुर्मास पूर्ण कर व्याख्यात्री महासती श्री निरंजनाजी म.सा. आदि ठाणा 4 भी उपाध्यायप्रवर एवं शासनप्रभाविकाजी की सेवा में पधारे। 18 नवम्बर को व्याख्यात्री महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा सोजत रोड़ का सुखद चातुर्मास पूर्ण कर उपाध्यायप्रवर के दर्शन हेतु शक्तिनगर पधारे। व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा. आदि ठाणा भीलवाड़ा का भव्य चातुर्मास पूर्ण कर उपाध्यायप्रवर एवं शासनप्रभाविका जी की सेवा में पधारे। इस प्रकार शक्तिनगर में 31 महासतियों का सम्मेलन सबको आकर्षित कर रहा था। उपाध्यायप्रवर की सेवा में प्रवचन एवं दोपहर में वाचनी के समय महासतियों की संख्या से चतुर्विध संघ पुलकित था। उपाध्यायप्रवर आदि 5 संतों तथा महासती वर्ग को मिलाकर 36 की संख्या उत्तराध्ययन के 36 अध्ययनों एवं गौतम गणधर को दिये 36 बार अप्रमत्तता के संदेश को उजागर कर रही थी।

25 नवम्बर को उपाध्यायप्रवर शक्तिनगर से विहार कर लक्ष्मीनगर स्थित कांकरिया स्थानक पधारे। महासती मण्डल का विहार जालम विलास स्थित स्थानक की ओर हुआ।

धर्माराधन एवं प्रवचन श्रवण का लाभ श्रावक-श्राविकाओं द्वारा निरन्तर लिया जा रहा है। अतिथियों के भोजन की सुव्यवस्था शक्तिनगर स्थित भोजनशाला में चल रही है। व्याख्यात्री महासती श्री रुचिता जी म.सा., श्री विवेकप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 5 का विहार 26 नवम्बर को भोपालगढ़ की ओर हुआ है।

उपाध्यायप्रवर का विहार जालमविलास स्थानक होते हुए पावटा स्थानक की ओर हुआ है।

जोधपुर में मुमुक्षु भाई-बहनों का स्वागत अभिनन्दन

आगमज्ञ, प्रवचन प्रभाकर, व्यसनमुक्ति के प्रबल प्रेरक, परम आराध्य आचार्यप्रवर पूज्य गुरुदेव श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. द्वारा जिन चार मुमुक्षु बंधुओं एवं भगिनियों की भागवती दीक्षा की घोषणा की है, उनका स्वागत एवं अभिनन्दन शोभायात्रा के साथ 17 नवम्बर को जोधपुर में भव्यता के साथ किया गया। मुमुक्षु श्री ओमप्रकाशजी जैन एवं मुमुक्षु श्री रविजी जैन की भागवती दीक्षा 29 जनवरी 2015 को गंगापुर सिटी (राजस्थान) में तथा मुमुक्षु सुश्री शिल्पा जी सुराणा एवं मुमुक्षु सुश्री खुशबूजी बागरेचा की भागवती दीक्षा 25 जनवरी 2015 को हुबली (कर्नाटक)में सम्पन्न होने जा रही है।

आचार्यप्रवर ने विरक्त-विरक्ताओं को संत-सतीवृन्द के दर्शन-वन्दन हेतु संघ के निवेदन पर सहर्ष अनुमति प्रदान की। चातुर्मास में दर्शनार्थ जाने पर बैंगलोर, हैदराबाद, सतारा जैसे नगरों के साथ मुम्बई-चेन्नई जैसे महानगरों में मुमुक्षओं का स्वागत-सत्कार-

बहुमान संघ की गौरव-गरिमानुसार उमंग-उल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। मुमुक्षु बहिन सुश्री शिल्पाजी सुराणा के पैतृक गांव खण्डप में 3 नवम्बर 2014 को तथा मुमुक्षु बहिन सुश्री खुशबूजी बागरेचा के पैतृक गांव कल्याणपुर में 16 नवम्बर 2014 को भव्य शोभायात्रा के साथ स्वागत-अभिनन्दन कार्यक्रम सानन्द सम्पन्न हुआ। 17 नवम्बर को विरक्त-विरक्ताओं के उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा., मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनि जी म.सा., साध्वी प्रमुखा महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवरजी म.सा. आदि संत-सतियों के दर्शन वन्दन हेतु पधारने पर श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर द्वारा मुमुक्षु भाई-बहिनों की शोभायात्रा लक्ष्मीनगर से प्रारम्भ कर पावटा-बी रोड़ एवं पावटा-सी रोड़ होकर शक्तिनगर तक आयोजित की गई। चार बग्गियों में चारों मुमुक्षु भाई-बहिनों के साथ अन्य विरक्त-विरक्ताओं और वीर परिवार के सदस्यों को बैठाया गया। बैण्ड की सुमधुर धुन के साथ भजन-गायकों के मधुर एवं भक्तियुक्त गीत-भजन से शोभायात्रा की भव्यता जिसने भी देखी, वह अपलक देखता रहा।

शक्तिनगर क्षेत्र के युवकों ने शोभायात्रा में सम्मिलित अनेक बन्धुओं को साफा पहनाया, गले में जैन प्रतीक का दुपट्टा डाला, साथ-ही-साथ बहिनों द्वारा चूंदड़ी परिधान धारण के कारण शोभायात्रा की शोभा कई गुना बढ़ गई। स्थान-स्थान पर गुरुभ्राताओं ने चारों मुमुक्षुओं का माल्यार्पण से स्वागत किया, तिलक लगाकर खोल भरने के साथ शोभा यात्रा में सम्मिलित सैकड़ों भाई-बहिनों के आतिथ्य-सत्कार में शीतल पेय, मिठाई, आइसक्रीम, सूखे मेवे जैसी मनुहार कर आत्मीयता-अपनत्व का परिचय दिया। दो किलोमीटर की शोभायात्रा में एक दर्जन स्थानों पर स्वागत-अभिनन्दन का कार्यक्रम हर्षोल्लासपूर्वक हुआ।

शोभायात्रा करीब दो घंटे पश्चात् शक्तिनगर स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन पहुँची, जहाँ आत्मार्थी, प्रबल पुरुषार्थी, शान्त-दान्त-गंभीर परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा., मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. प्रभृति मुनि पुंगवों के दर्शन-वन्दन का लाभ लेकर श्रावक-श्राविकाओं ने प्रवचन-श्रवण तो किया ही, मुमुक्षु भाई-बहिनों के स्वागत-सत्कार और अभिनन्दन में अपनी भूमिका और भागीदारी का प्रदर्शन उत्साहपूर्वक किया।

श्रद्धेय श्री लोकचन्द्र जी म.सा. ने प्रवचन में संयम की महत्ता पर प्रकाश डाला। महासती श्री भक्ति प्रभा जी म.सा. ने उपस्थित जन समुदाय को सम्बोधित करते हुए कहा कि आप दीक्षा की अनुमोदना तो करें ही, कुछ-न-कुछ व्रत-प्रत्याख्यान अंगीकार करने का लक्ष्य रखें। महासती श्री विनीतप्रभाजी म.सा. ने ''जीने योग्य जीवन है संयम'' पर

विचार रखे। श्रद्धेय श्री दर्शनमुनिजी म.सा. ने ''दीक्षा में गुण हैं अपार, वीरजी बखाणियो रे'' भजन की सुन्दर प्रस्तुति दी। मुमुक्षु भाई-बहिनों का पारिवारिक परिचय श्री प्रकाश जी सालेचा ने दिया।

मुमुक्षु बहिन सुश्री खुशबू जी बागरेचा ने गुरु-गुरुणी के उपकारों के प्रति अपने अन्तर्मन की भावना व्यक्त की। मुमुक्षु सुश्री शिल्पाजी सुराणा ने संयम के प्रति दृढ़ भावना प्रस्तुत की।साथ-ही दोनों ने उपस्थित जन समुदाय से अनुरोध किया कि हमारी दीक्षा 25 जनवरी को हुबली में होने जा रही है। आप हुबली पधार कर हम दोनों बहिनों को अपना मंगल आशीर्वाद प्रदान करें।

मुमुक्षु श्री रविजी जैन ने साध्य की सिद्धि में सहायक संयम जीवन की महत्ता बताते हुए गुरुवर्य की कृपादृष्टि का उल्लेख किया है। मुमुक्षु श्री ओमप्रकाश जी ने चारित्र धर्म की साधना में एडमिशन को लेकर विचार रखे, साथ-ही-साथ उन्होंने आशा व्यक्त की कि गौरवशाली रत्नसंघ में और श्रमण-जीवन में हमें गुरुदेव एडमिशन दे रहे हैं। आप-सब 29 जनवरी को दीक्षा महोत्सव के पावन प्रसंग पर पधार कर हम दोनों दीक्षार्थियों को अपना आशीर्वाद प्रदान करें।

वीरपिता श्री अमृतलालजी सुराणा ने हुबली में दो बहिनों की दीक्षा पर जोधपुर श्रीसंघ को निमन्त्रित तो किया ही, दीक्षार्थी भाई-बहिनों के प्रति अपनी ओर से तथा सभी दीक्षार्थी परिवारजनों की ओर से स्वागत-सत्कार के लिए आभार प्रदर्शित किया।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड के रजिस्ट्रार श्री धर्मचन्द जी जैन ने मुमुक्षु भाई-बहिनों को संयम जीवन सार्थक करने की मंगल मनीषा व्यक्त की। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना ने रत्नसंघ के गौरवशाली अतीत के सम्बन्ध में दो शब्द रखने के पश्चात् आचार्यप्रवर पूज्य गुरुदेव श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा., प्रभृति संत-सतीवृन्द की प्रेरणा व पुरुषार्थ के संदर्भ में विचार रखे। उन्होंने मुमुक्षु भाई-बहनों के दीप्तिमान् संयम जीवन हेतु मंगल कामना की।

संघ की ओर से चारों विरक्त-विरक्ताओं का माल्यार्पण से स्वागत किया गया। विरक्त भाइयों को शॉल ओढ़ाकर तो विरक्त बहिनों को चूंदड़ी ओढ़ाकर उनका बहुमान किया गया। संघ की ओर से चारों मुमुक्षुओं की खोल भराई का कार्यक्रम अभिनन्दन के रूप में किया गया।

वीर माता-पिता एवं परिवारजनों का भी संघ की ओर से माल्यार्पण, शॉल, साफा चूंदड़ी से यथायोग्य बहुमान किया गया। उपाध्यायप्रवर के मंगल-पाठ के पश्चात् कार्यक्रम हर्ष-हर्ष, जय-जय के साथ सानन्द सम्पन्न हुआ। *-नौरतनमल मेहता*

तत्त्वचिन्तक मुनि श्री का कारागार में उद्‌बोधन

तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 5 के सान्निध्य में कार्तिक पूर्णिमा 6 नवम्बर 2014 को चौमासी एवं पक्खी पर्व के अवसर पर लाल भवन में उपवास, दया-व्रत, एकासन, संवर एवं लगभग 50-60 पौषध हुए। मार्गशीर्ष की प्रतिपदा, 7 नवम्बर को प्रातः लाल भवन से विहार कर मुनिवृन्द ढड्ढा मार्केट, जौहरी बाजार होते हुए बापू नगर पधारे। यहाँ से आठ नवम्बर को महारानी फार्म स्थित समता भवन पधारे जहाँ 9 नवम्बर से 18 नवम्बर तक संत-सतियों एवं मुमुक्षुओं के लिए ध्यान-शिविर आयोजित हुआ। शिविर के पश्चात् 18 नवम्बर को मुनिवृन्द आचार्य श्री हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान बजाज नगर पधारे। वहाँ से आदर्श नगर में दो दिन विराज कर 21 नवम्बर को जवाहर नगर स्थित स्थानक पधारे, जहाँ 27 नवम्बर तक विराजे। राजस्थान के गृहमंत्री श्री गुलाबचन्द जी कटारिया के निजी सहायक सुश्रावक श्री महेन्द्र जी पारख (आर.ए.एस.) के प्रयासों से केन्द्रीय कारागार में 25 नवम्बर को दिन में दो बजे श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. एवं विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा का पदार्पण हुआ। यहाँ पर तत्त्वचिंन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. का लगभग सवा घण्टे उद्‌बोधन हुआ, जिसमें मुनिश्री ने कैदियों को अपने विचारों एवं आचरण में शुद्धता एवं समता लाने की प्रेरणा दी। मुनिश्री ने कहा कि भूल करने के लिए कोई समय अच्छा नहीं होता और भूल सुधारने के लिए कोई समय बुरा नहीं होता। सद्‌भाव का प्रभाव पेड़-पौधों पर भी होता है, अतः आप जब भी सजा पूरी करके बाहर आएं तो जीवन में बुराई नहीं आने दें। जीवन को सदाचारी एवं सद्‌गुणों से युक्त बनाकर अपनी छवि को उज्ज्वल बनाएँ। जेल अधीक्षक डॉ. एम.के.नियाजी ने धन्यवाद ज्ञापन में बताया कि उन्होंने मुसलमान होते हुए जैन विश्वभारती संस्थान,लाडनूँ से जैन ग्रंथों पर पी-एच्.डी. उपाधि प्राप्त की है। अधीक्षक महोदय ने मुनिश्री से निवेदन किया कि आप महिला जेल में भी प्रवचन कर लाभान्वित करें, अतः 27 नवम्बर को मुनिश्री का प्रवचन महिला जेल में हुआ। इस बार विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. के साथ व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवजी म.सा. आदि ठाणा 7 भी महिला जेल में 15-20 श्राविकाओं के साथ पधारीं। मुनिश्री ने नारी में विद्यमान शक्ति, करुणा, वात्सल्य आदि का उल्लेख करते हुए उसके दायित्वों एवं कर्तव्यों पर प्रकाश डाला। नारी का जीवन अच्छा होने के क्या परिणाम आते हैं, इसे अनेक उदाहरणों से समझाया। मुनिश्री की वाणी में जो मार्मिक उद्‌बोधन था उसे सुनकर महिला जेल अधीक्षक श्रीमती मोनिका अग्रवाल सहित अनेक कैदी महिलाओं के आँसू टपक पड़े। वातावरण भावविह्वल हो गया।

यहाँ से मुनिश्री का 28 नवम्बर को तख्तेशाही रोड़ स्थित रत्न स्वाध्याय भवन पदार्पण

हुआ। यहाँ से सिविल लाइन्स होते हुए 30 नवम्बर को श्यामनगर स्थित आराधना भवन पधारे हैं। आगामी 7 से 14 दिसम्बर तक मौजी कॉलोनी, मालवीय नगर में पूर्व साधकों का ध्यान-शिविर संभावित है।

महासती मण्डल के सान्निध्य में धर्माराधना

चौथ का बरवाड़ा- विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 5 के सान्निध्य में यह चातुर्मास धर्माराधन एवं तपाराधन की दृष्टि से सफल रहा। यहाँ से महासती मण्डल का विहार बजरिया की ओर हुआ। मार्ग में 14 नवम्बर को गंभीरा पधारे। गजेन्द्र संदेश चातुर्मास सूची के सम्पादक श्री बाबूलाल जी जैन उज्ज्वल ने मुम्बई से आकर अपने ग्राम गंभीरा में महासती मण्डल के प्रति श्रद्धाभक्ति का लाभ लिया। गांव के अनेक लोगों ने बीड़ी, सिगरेट, गुटखा, जुआ आदि कुव्यसनों के त्याग का संकल्प ग्रहण किया।

अहमदाबाद- व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा., महासती श्री मुदित प्रभाजी आदि ठाणा 9 के सान्निध्य में शाहीबाग अहमदाबाद में प्रत्येक रविवार को युवकों के लिये विशेष कक्षा आयोजित हुईं, जिसमें युवकों ने उत्साहपूर्वक ज्ञानार्जन एवं मार्गदर्शन प्राप्त किया। 1 से 4 अक्टूबर तक श्राविका मण्डल का शिविर आयोजित हुआ, जिसमें 55 श्राविकाओं ने कर्मप्रकृति, संयम सुख, 10 आश्चर्य, 12 भावना, हम साथ में कैसे रहें, कहना, रहना और सहना सीखें आदि की जानकारी प्राप्त की। ध्यान साधना भी कराई गई। 8 अक्टूबर को शरद पूर्णिमा की रात्रि में लगभग 45 महिलाओं ने सामायिक साधना की। आश्विन की आयंबिल ओली 16 व्यक्तियों ने पूर्ण रूपेण सम्पन्न की। प्रतिदिन 20-25 आयंबिल होते रहे। 12 अक्टूबर 2014 को आयोजित रविवारीय कक्षा में महासती श्री मुदितप्रभाजी म.सा. ने उपस्थित सभी युवकों को 24 तीर्थंकरप्रभु की अर्थ सहित भावपूर्वक वन्दना करवाई। 19 अक्टूबर को युवकों के लिये एक संगोष्ठी **SAVE** आयोजित हुई, जिसमें लगभग 250 युवा उपस्थित हुए। **SAVE** शब्द का संदेश था- **S-** Sorry ends Sorrows (क्षमा दुःख का अंत करती है), **A-** Awake and Aware (जागो और सावधान रहो), **V-** Values of Vows (व्रतों का मूल्य), **E-** Extend Your Love (प्रेम का विस्तार करो)। महासतीजी ने प्रेरणा कि **SAVE** में आने पर आपको पाँच **S** मिलेंगे- **Security, Safety, Simplicity, Speciality and Supreme City**। इस संगोष्ठी में सम्मिलित युवाओं ने पटाखे न चलाने एवं सप्त कुव्यसनों के त्याग का संकल्प किया गया। भगवान महावीर निर्वाण कल्याणक के अवसर पर त्याग-तपपूर्वक अच्छी धर्माराधना हुई। वीर संवत् 2541 के प्रभातकालीन मांगलिक के अवसर पर लगभग 1000 व्यक्तियों की उपस्थिति रही। 29 अक्टूबर से 2 नवम्बर तक धार्मिक शिक्षण शिविर

आयोजित किया गया, जिसमें 130 बालकों ने पाँच कक्षाओं में ज्ञानार्जन किया। 29 अक्टूबर को ही पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के 52 वें दीक्षा-दिवस को तप-त्यागपूर्वक मनाया गया। एकाशन, उपवास एवं तेले की तपस्याएँ हुईं। श्री अरुण जी भण्डारी के नौ का उपवास चल रहा था। मुमुक्षु भाई श्री ओमप्रकाशजी एवं रविजी जैन का बहुमान कर श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं श्री राजस्थान स्थानकवासी संघ ने स्वयं को गौरवान्वित अनुभव किया। इस दिन श्रद्धा जी गांग सुपुत्री श्री सुरेशचन्दजी गांग ने बालकों को जमीकन्द, कोल्ड ड्रिंक्स एवं सचित्त पानी की हानियों के बारे में जानकारी दी, जिससे कई बच्चों ने कोल्ड ड्रिंक्स आदि के प्रत्याख्यान स्वीकार किए। शिविर समापन के दिन आयोजित एक प्रदर्शनी में बच्चों द्वारा जैनदर्शन से सम्बन्धित चित्रित चित्रों को प्रदर्शित किया गया। इसी दिन मोबाइल एवं कम्प्यूटर से होने वाली हानियों के सम्बन्ध में नाटक के माध्यम से जानकारी दी गई। इस अवसर पर श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के सभी परिवार उपस्थित हुए।

बेंगलुरु- व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. आदि ठाणा 6 के सान्निध्य में शूलै, अशोकनगर, जैन स्थानक में चल रहे चातुर्मास में तप-त्याग एवं ज्ञानाराधना की अद्भुत प्रभावना हुई। गत दिनों में प्राकृत पुच्छिंसु णं की वाचनी हुई एवं हिन्दी में सुन्दर ढंग से अर्थ समझाया गया। भगवान महावीर स्वामी के निर्वाण दिवस पर उत्तराध्ययन सूत्र की वाचनी एवं सामूहिक तेले का आयोजन हुआ। आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के 52 वें दीक्षा दिवस पर 51 घंटे तक लोगस्स के अखण्ड जाप के साथ एकाशन, नींवी, आयम्बिल, उपवास, संवर-पौषध की आराधना हुई। श्री गणेशीलाल जी म.सा. का 135 वा जन्मदिवस धर्म-आराधना के साथ मनाया गया। बारह व्रत की कक्षा में 130 श्रावक-श्राविकाओं ने नियम ग्रहण किए। मुमुक्षु श्री ओमप्रकाशजी एवं मुमुक्षु श्री रविजी जैन का अभिनन्दन कार्यक्रम रखा गया। कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा 6 नवम्बर को महासतीवृन्द के सान्निध्य में श्रावक-श्राविकाओं ने अपने भावों की अभिव्यक्ति प्रस्तुत की। संघ अध्यक्ष श्री यशवंतराजजी सांखला ने पूरे चातुर्मास की जानकारी दी। संघ मंत्री श्री निर्मल कुमारजी बम्ब ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि संत-सतियों की कभी विदाई नहीं होती। वे तो हमारे हृदय में विराजमान रहते हैं। पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवंत की महती कृपा से संघ को 6 महासतीवृन्द का चातुर्मास मिला। अब यहाँ से 9 सतीवृन्द का विहार हो रहा है। सिर्फ यहाँ ही नहीं पूरे कर्नाटक क्षेत्र में रत्न संघ का अनुपम आध्यात्मिक चातुर्मास रहा, इसके लिए हम पूज्य गुरुदेव के सदैव आभारी रहेंगे।

काचीगुड़ा (हैदराबाद)- व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. आदि ठाणा 7 के

पावन सान्निध्य में पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के 52 वें दीक्षा-दिवस एवं कर्नाटक केसरी श्री गणेशीलाल जी म.सा. के 135 वें जन्मदिवस पर सामूहिक तप-त्याग एवं सामायिक-साधना की आराधना की गई। चातुर्मास में विभिन्न कार्यक्रम सादगी पूर्ण ढंग से सम्पन्न हुए। महासती मण्डल की सरलता, संयमनिष्ठा, जिनाज्ञा के अनुसार आचरण, ज्ञान क्रिया का अनूठा संगम सभी के हृदय पर छाप छोड़ गया। यहाँ पर तप-जप की अनूठी साधना हुई तथा संघ ने साधर्मी सेवा का भावनापूर्वक लाभ लिया।

कानपुर- व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में शरद पूर्णिमा की रात्रि में कई बहनों ने 15-15 सामायिकें कर अन्त्याक्षरी, नवकार मंत्र का जाप, लक्की गेम, पूंजनी गेम आदि के माध्यम से रात्रि जागरण किया। हर रविवार को धार्मिक प्रतियोगिताएँ सम्पन्न हुईं। भगवान महावीर के निर्वाण कल्याणक के अवसर पर उत्तराध्ययन सूत्र का वाचन हुआ तथा आबालवृद्ध ने दीपावली पर पटाखे नहीं जलाने का संकल्प ग्रहण किया। पूज्य गुरुदेव आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के 52 वें दीक्षा दिवस पर एकाशन, आयंबिल, उपवास, तेला एवं नौ की तपस्याएँ सम्पन्न हुई। श्रद्धेया महासतीजी के मुखारविन्द से कार्तिक शुक्ला षष्ठी 2013 से कार्तिक शुक्ला षष्ठी 2014 तक 31 दम्पतियों ने आजीवन शीलव्रत का नियम ग्रहण किया-1. श्री दयाप्रसाद जी गर्ग-श्रीमती प्रयागदेवीजी-मथुरा, 2. श्रीमती मुन्नी देवीजी-श्री कपूरचन्दजी जैन-नदबई, 3. श्रीमती सुशीलादेवीजी-श्री मुरारीलालजी गर्ग-नदबई, 4. श्रीमती विमलाजी-सुमेदीलाल जी जैन-नदबई, 5. श्रीमती विमलाजी-श्री पदमचन्दजी जैन-नदबई, 6. श्रीमती सुमनजी-श्री विशनलाल जी बागपतिया-जयपुर, 7. श्रीमती कमलेशजी-शान्तीसिंहजी ठाकुर-सरैन्धी, 8. श्रीमती फाबुलीजी-श्री स्वरूपचन्द जी जैन-बहामली, 9. श्रीमती जैनमतीजी-श्री पूरनचन्दजी जैन-रूपवास, 10. श्रीमती सावित्रीजी-श्री सतीशजी जैन-नदबई, 11. श्रीमती मायादेवीजी-श्री शिवरामजी-आदर्शनगर, आगरा, 12. श्रीमती जयमालाजी-ओमप्रकाशजी जैन-खेड़ली, 13. श्रीमती रूपवतीजी-श्री निर्भयसिंहजी नाहर-आगरा, 14. श्रीमती कृष्णाजी-श्री देवेन्द्र जी जैन-जयपुर, 15. श्रीमती शकुन्तलाजी-श्री मोहनलालजी संचेती-आगरा, 16. श्री विद्यादेवीजी-जगन्नाथजी अग्रवाल-भरतपुर, 17. श्रीमती कृष्णाजी-श्री किशनजी जैन-नेहरूनगर,आगरा, 18. श्रीमती पदमाजी-श्री नवीनजी सुराणा, नेहरूनगर-आगरा, 19. श्रीमती प्रवीणजी-श्री नीलाशाह-बिराहना रोड़, कानपुर, 20. श्रीमती मायाजी-श्री शालीरामजी ब्राह्मण-फिरोजाबाद, 21. श्रीमती सावित्रीजी-श्री गंगारामजी-रायबरेली, 22. श्रीमती रामाजी-श्री राधाकृष्ण जी यादव-भारौल, 23. श्रीमती उषारानीजी-श्री रोशनलालजी जैन-लाल बंगला-कानपुर, 24.

श्रीमती श्यामाजी-श्री कमलेशजी गुर्जर-फिरोजाबाद, 25. श्रीमती हरविन्दर कौर-श्री ओंकारसिंहजी सिक्ख-कानपुर, 26. श्रीमती शकुन्तलाजी-श्री लक्ष्मण जी श्रीवास्तव-कानपुर, 27. श्रीमती विमलारानीजी-श्री केवल कृष्ण जी जैन-कानपुर, 28. श्रीमती प्रभाबेन-श्री अशोक भाई शाह-कानपुर, 29. श्रीमती नीलमजी-श्री विजयकुमारजी जैन-कानपुर, 30. श्रीमती चन्द्रिकाजी-श्री धीरेन्द्रजी शाह-कानपुर, 31. श्रीमती भारतीजी-श्री हिमांशुजी देसाई-कानपुर।

सोजत रोड- व्याख्यात्री महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 3 के सान्निध्य में श्री महावीर जी पावेचा ने 41 आयंबिल की तपस्या कर पूज्य आचार्यप्रवर के 52 वें दीक्षा दिवस पर अनूठी भेंट दी। श्रीमती निर्मला जी पावेचा ने 4 माह एकाशन की तपस्या सम्पन्न की।

भीलवाड़ा- व्याख्यात्री महासती श्री रुचिता जी म.सा. आदि ठाणा 5 के सान्निध्य में 29 सितम्बर को आध्यात्मिक वनडे मैच की फाइनल प्रतियोगिता सम्पन्न हुई, जिसमें 9-9 बहनों के ग्यारह ग्रुप बनाये गये। 6 अक्टूबर को बकरा ईद के अवसर पर हिंसा निरोध हेतु सामूहिक नवकार मंत्र का जाप अहिंसा भवन में कराया गया। 12 अक्टूबर को मेरी भावना प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता सम्पन्न हुई। भगवान महावीर निर्वाण कल्याणक महोत्सव के 15 दिन पूर्व से ही भगवान महावीर के जीवन संदर्भों पर मार्मिक प्रवचन प्रारम्भ हो गए। पुच्छिंसु णं का पाठ लगभग 108 बार किया गया। बच्चों ने पटाखे नहीं छोड़ने का नियम ग्रहण किया। निर्वाण महोत्सव पर त्रिदिवसीय कार्यक्रम के अन्तर्गत चौविहार तेले की तपस्या एवं पौषध किए गए। पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के 52 वें दीक्षा दिवस पर हीरा चालीसा प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता सम्पन्न हुई। 26 अक्टूबर को सामूहिक भक्तामर का पाठ, 27 अक्टूबर को सामूहिक नवकार मंत्र का जाप तथा 28 अक्टूबर को ध्यान-शिविर आयोजित हुआ। 29 अक्टूबर को दीक्षा-दिवस पर पाँच सामायिक एवं एकाशन की साधना की गई। संघ मंत्री श्री कानसिंह जी चौधरी ने पूज्य आचार्यप्रवर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर विचार प्रस्तुत किए। श्री फूलचन्द जी मेहता-उदयपुर ने प्रभावी उद्बोधन दिया। इस कार्यक्रम में चन्दनबाला महिला मण्डल की सुशीला छाजेड़, कैलाश चौधरी, निर्मला बलिया, वन्दना छाजेड़, दर्शना जैन, नीलम बापना, लक्ष्मी जैन आदि ने गद्य-पद्य के माध्यम से आचार्य श्री के प्रति संयम जीवन की मंगल कामना की। इस अवसर पर राजस्थान बार एसोशिएशन के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री सुरेशचन्द्र जी श्रीमाली, श्रीमती मंजूजी पोखरणा-पार्षद, श्री अनिल जी डांगी-जिला कांग्रेस अध्यक्ष भीलवाड़ा, श्री नवरतन जी बम्ब, श्री विजय जी सांड, श्री सुरेन्द्र जी कटारिया आदि गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे।

कार्यक्रम के अन्त में संघ अध्यक्ष श्री दिनेश कुमार जी बम्ब द्वारा गौतम प्रसादी का आयोजन किया गया। महासती जी की प्रेरणा से चन्दनबाला महिला मण्डल में एकता स्थापित हुई। यह चातुर्मास की बहुत बड़ी उपलब्धि मानी गयी। इस वर्षावास में श्री शान्तिलाल जी मेड़तवाल, श्री रविन्द्र जी जैन, श्री जसवन्त सिंह जी डागलिया, श्री चान्दमल जी मेहता, श्री हस्तीमल जी सोनी, श्री सम्पतजी जैन, श्री अनिल जी बम्ब एवं चन्दनबाला महिला मण्डल से श्रीमती जतन देवीजी बम्ब, श्रीमती अनुराधा जी रांका, श्रीमती मीनाक्षी जी गाँधी, श्रीमती मंजूजी बम्ब, श्रीमती कैलाश देवी जी चौधरी, श्रीमती रजनी देवी जी जैन आदि का सहयोग रहा। चातुर्मास समापन के अवसर पर अनेक वक्ताओं के द्वारा महासतीजी के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित की गई। चातुर्मास के पश्चात् 7 नवम्बर को मुमुक्षु श्री ओमप्रकाश जी जैन एवं श्री रविजी जैन का श्रीसंघ एवं चन्दनबाला महिला मण्डल, शास्त्रीनगर द्वारा स्वागत-अभिनन्दन किया गया। संघाध्यक्ष श्री दिनेश जी बम्ब एवं मंत्री श्री कानसिंह जी चौधरी आदि ने भावभीनी विदाई दी। महासती मण्डल के विहार में 600-700 श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही।

पाली- व्याख्यात्री महासती श्री निरंजनाजी म.सा. आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में चातुर्मास के अंतिम दिनों में पचरंगी तप की साधना की गई। चातुर्मास अत्यन्त उमंग, उत्साह एवं प्रसन्नतापूर्वक तप-त्याग की गतिशीलता के साथ सम्पन्न हुआ।

चेन्नई एवं जलगाँव में वीतराग ध्यान-साधना शिविरों का आयोजन

चेन्नई- जिनशासन गौरव पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की असीम अनुकम्पा से सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल एवं श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, चेन्नई के संयुक्त तत्त्वावधान में 7 से 17 जनवरी 2015 तक चेन्नई में वीतराग ध्यान-साधना शिविर आयोजित हो रहा है। ध्यान-साधना के इच्छुक साधक अपना आवेदन-पत्र भरकर 5 जनवरी 2015 तक निम्नांकित पते पर प्रेषित करें- (1) आशीष जी सुराणा सुपुत्र श्री सुधीर जी सुराणा, 42, राजेन्द्र प्रसाद रोड़, नेहरू नगर, क्रोमपेट, चेन्नई-600044, मोबाइल नं.-098413-22281, (2) श्रीमती शान्ता जी मोदी, संयोजक, वीतराग ध्यान-साधना केन्द्र, सी-26, देवनगर, टोंक रोड़, जयपुर (राज.), फोनः- 0141-2710077, मोबाइल नं.- 093144-70972

जलगाँव- जिनशासन गौरव पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की असीम अनुकम्पा से सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के द्वारा अहिंसा तीर्थ, कुसुम्बा रोड़, जलगांव में

15 से 25 फरवरी 2015 तक वीतराग ध्यान-साधना शिविर का आयोजन किया जा रहा है। ध्यान-साधना के इच्छुक साधक अपना आवेदन-पत्र भरकर 5 फरवरी 2015 तक निम्नांकित पते पर प्रेषित करें- (1) श्रीमती मंगलाजी चोरड़िया, वीर दर्शन, चिन्मय मिशन के सामने, नये बस स्टेण्ड के पास, जलगाँव (महा.), फोन नं. 094227-75692, (2) श्रीमती शान्ता जी मोदी, संयोजक, वीतराग ध्यान-साधना केन्द्र, सी-26, देवनगर, टोंक रोड़, जयपुर (राज.), फोनः- 0141-2710077, मोबाइल- 093144-70972

डॉ. बिमला भण्डारी जैन रत्न शोध सम्मान हेतु आवेदन आमन्त्रित

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की पूर्व महामंत्री डॉ. बिमला जी भण्डारी की पुण्य स्मृति में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के तत्त्वावधान में भण्डारी परिवार की ओर से जैन धर्म-दर्शन से सम्बद्ध विषय पर पी-एच्.डी एवं डी.लिट् उपाधि प्राप्त करने वाले शोधकर्त्ताओं को **'डॉ. बिमला भण्डारी जैन रत्न शोध सम्मान'** से सम्मानित किया जाएगा। इस सम्मान हेतु आवश्यक बिन्दु इस प्रकार हैं-

1. जिन शोधकर्त्ताओं ने 17 फरवरी 2014 के पश्चात् पी-एच्.डी/डी.लिट् उपाधि प्राप्त की है, उनमें से पाँच पी-एच्.डी. उपाधिधारकों तथा दो डी.लिट् उपाधिधारकों को क्रमशः 11 हजार रुपये एवं 15 हजार रुपये की प्रोत्साहन राशि से सम्मानित किया जाएगा।
2. 17 फरवरी 2014 से 31 जुलाई 2015 के मध्य जो भी पी-एच्.डी. एवं डी.लिट् उपाधि प्राप्तकर्त्ता हों, वे इस सम्मान हेतु आवेदन कर सकते हैं। आवेदन-पत्र के साथ पी-एच्.डी./डी.लिट् उपाधि के समुचित सर्टिफिकेट एवं शोधकार्य का सारांश संलग्न करना होगा।
3. प्राप्त आवेदन-पत्रों का निर्णायक समिति द्वारा मूल्यांकन कर सम्मान हेतु अनुशंसा की जाएगी।
4. सम्मान राशि 'श्री सरदारमल भण्डारी चेरिटेबल ट्रस्ट, जयपुर' के सौजन्य से प्रदान की जाएगी।
5. सभी आवेदन-पत्र निम्नांकित पते पर 31 जुलाई 2015 के पूर्व प्राप्त हो जाने चाहिए।- **महामंत्री**, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001 (राज.), फोन : 0291-2636763

-आनन्द चौपड़ा, महामंत्री, अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

जैनागम स्तोक (थोकड़ा) वारिधि परीक्षा

आगामी जैनागम स्तोक (थोकड़ा) वारिधि परीक्षा 11 जनवरी, 2015 को 12.30 बजे से आयोजित की जायेगी। तत्त्वज्ञान के इच्छुक भाई-बहिनों से निवेदन है कि स्वयं थोकड़ों की परीक्षा में भाग लें तथा अन्य को भी प्रेरित करें।

शिक्षण बोर्ड की कक्षा 1 से 12 तक की आगामी परीक्षा 12 जुलाई 2015 को आयोजित की जाएगी।

परीक्षा से सम्बन्धित आवेदन पत्र, पाठ्यपुस्तकें आदि अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें- **1. चेन्नई-** श्री गौतम जी कवाड़-094440-54522, श्री वीरेन्द्र जी कांकरिया-098401-49964, श्री अशोक जी बाफना-094442-70145, श्री विनोदकुमारजी जैन-094447-34394, श्री सुरेश कुमार जी हींगड़-088076-12330, **2. बैंगलोर-** श्री प्रसन्न जी बाघमार-98806-65551, **3. हैदराबाद-** श्री शान्तिलाल जी गुन्देचा-092471-99931, **4. पंजाब-** श्रीमती किरण जी जैन-094631-18600, **5. पल्लीवाल क्षेत्र-** श्री महावीर प्रसादजी जैन-087408-28435, **6. पोरवाल क्षेत्र-**श्री आनन्द जी जैन-081041-04285, **7. मुम्बई-** श्री बसंत जी जैन-098203-50814, **8. बालोतरा-** श्री धर्मेश जी चौपड़ा-094141-08191, **9. मेवाड़-** श्री कन्हैयालाल जी जैन- 087644-09328, **10. अमेरिका-** श्री सुभाष जी जैन- 001-9168476830, **शिक्षण बोर्ड कार्यालय**, जोधपुर (राज.) फोनः-0291-2630490, 2622623, फैक्स-2636763, **E-mail:**shikshanboardjodhpur@gmail.com,info@jainratnaboard.com, **Website:** www.jainratnaboard.com

-नवरतन गिडिया, सचिव

'बनें आगम अध्येता' (4)
नन्दीसूत्र प्रतियोगिता में भाग लें

श्रावक-श्राविकाएँ सुज्ञ और तत्त्वज्ञ बनें, इस हेतु आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. एवं संत-सतीमण्डल का उपदेशों के माध्यम से पुरजोर प्रयास रहता है। गुरुद्वय के दीक्षा अर्द्धशती वर्ष के शुभ प्रसंग पर अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा आगम अध्येता श्रावक-श्राविकाएँ तैयार करने हेतु प्रारम्भ 'बनें आगम अध्येता' अनुष्ठान के अन्तर्गत दशवैकालिकसूत्र, उपासकदशांगसूत्र, अन्तगडदसा सूत्र की परीक्षाएँ आयोजित हो चुकी हैं। इसमें श्रावक-श्राविका वर्ग भाग ले सकता है। स्वाध्याय हेतु साधु-साध्वी भी भाग ले सकते हैं। अब चतुर्थ आगम परीक्षा के

रूप में पाँच ज्ञान के परिचायक आगम 'नन्दीसूत्र' के स्वाध्याय को लिया गया है। इसके लिए आवश्यक जानकारी इस प्रकार है:-

1. सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा प्रकाशित पुस्तक नन्दीसूत्र व मूल्यांकन प्रश्न-पत्र को मंगवाकर उसे घर पर हल करके भिजवाने की अन्तिम तिथि 31 जनवरी 2015 रखी गई है।
2. नन्दीसूत्र की समापक परीक्षा 12 अप्रेल, 2015 को आपके स्थानीय स्थानकों में परीक्षकों की उपस्थिति में होगी जो कि 90 अंकों की होगी तथा इस परीक्षा में आप नन्दीसूत्र की पुस्तक भी साथ में रख सकते हैं।
3. मूल्यांकन उत्तरपुस्तिका को जाँचकर उसमें प्राप्त अंकों को 10 प्रतिशत करके उन अंकों को समापक परीक्षा में प्राप्त अंकों में जोड़कर परीक्षार्थी के कुल प्राप्तांक होंगे और कुल प्राप्तांक के आधार पर प्रथम तीन श्रावक-श्राविकाओं को **नन्दीसूत्र आगम अध्येता** की उपाधि से अलंकृत करने के साथ प्रथम विजेता को रुपये 31000/-, द्वितीय को 21000/- तथा तृतीय को रुपये 11000/- से पुरस्कृत किया जाएगा। परीक्षा में 80 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वाले सभी प्रतिभागियों को भी पुरस्कृत किया जायेगा।

आप सभी श्रावक-श्राविकाओं से निवेदन है कि आगमज्ञान अभिवर्धन की इस परीक्षा में भाग लें। मूल्यांकन प्रश्न-पत्र हल करके भिजवाने वाले ही परीक्षार्थी समापक परीक्षा में सम्मिलित हो सकते हैं। नन्दीसूत्र पुस्तक व मूल्यांकन प्रश्न-पत्र हेतु **सम्पर्क सूत्र-** सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.), फोन- 0141-2575997, 2571163, फैक्स-0141-2570753, श्रीमती पूर्णिमा लोढ़ा, अध्यक्ष, 098290-19396, श्रीमती बीना मेहता, मंत्री-097727-93625

शिक्षक-निर्माण शिविर का आयोजन

संघ व संघ की सहयोगी संस्थाओं द्वारा आयोजित शिक्षण शिविरों में अध्यापन हेतु शिक्षकों की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की प्रेरणा से अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल के तत्त्वावधान में 7 से 9 फरवरी, 2015 को जयपुर में शिक्षक निर्माण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। संघ में ज्ञान के क्षेत्र में सेवा देने वाले जिज्ञासु इस शिविर में अवश्य प्रतिभागी बनें। शिविर में पधारने वाले श्रावक-श्राविकाओं में निम्न योग्यताएँ अपेक्षित हैं- 1. सामायिक, प्रतिक्रमण व पच्चीस बोल की पूर्ण जानकारी हो। 2. आयु सीमा 30 से 55 वर्ष। 3. वर्ष में 10 दिन बाहर सेवा देने हेतु संघ-सेवा के लिए तत्पर हो।

शिविर के लिए निम्नांकित प्रपत्रानुसार आवेदन-पत्र इस पते पर भेजें- श्रीमती राजकंवर केवलमल लोढ़ा सामायिक-स्वाध्याय भवन, सेन्ट्रल बैंक की गली, महावीर नगर, टोंक रोड़, जयपुर-302018 (राज.), फोनः 0141-3101991, मो. नं. 098290-19396

शिविर आवेदन फार्म

नाम..............................पिता/पति का नाम.............................

आयु.............................. स्थान...

शैक्षणिक योग्यता...

धार्मिक योग्यता..

....

पता..

....

फोन नं. ....मोबाइल नं. ....

केन्द्रीय स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर दिसम्बर में

समस्त स्वाध्यायियों को सूचित करते हुए अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ द्वारा 25 से 27 दिसम्बर 2014 तक स्वाध्यायियों हेतु **'प्रतिक्रमण प्रशिक्षण शिविर'** जोधपुर (राज.) में परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में आयोजित किया जा रहा है। इस शिविर में निम्न योग्यताओं में से एक भी योग्यता प्राप्त स्वाध्यायी भाग ले सकेंगे-

1. श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर का स्वाध्यायी हो एवं पर्युषण सेवा देता हो।
2. अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की पंचम परीक्षा उत्तीर्ण हो।
3. सामायिक, प्रतिक्रमण, 25 बोल कण्ठस्थ हो।

शिविर में कुशल प्रशिक्षकों द्वारा प्रतिक्रमण सूत्र की उच्चारण शुद्धता, भावार्थ तथा उससे सम्बन्धित विशेष जानकारी का प्रशिक्षण दिया जायेगा। शिविर में भाग लेने वाले इच्छुक शिविरार्थी पत्र अथवा फोन के माध्यम से स्वाध्याय संघ कार्यालय जोधपुर से सम्पर्क कर स्वीकृति प्राप्त करें। शिविरार्थी सामायिक के उपकरणों एवं पर्युषण सम्बन्धित साहित्य सहित पधारें। शिविर सम्बन्धी जानकारी के लिए निम्नांकित महानुभावों से सम्पर्क कर सकते हैं- 1. राजेन्द्र जी लुंकड़, निदेशक-09360025001, 2. श्री कुशल जी गोटेवाला, संयोजक-09460441570, 3. श्री राजेशजी भण्डारी, सचिव-094610-

13878, 4. श्री कमलेश जी मेहता, जोधपुर-09414267824, 5. श्री धीरज जी डोसी-09462543360, **शिविर स्थलः-** सामायिक-स्वाध्याय भवन, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001 (राज.)

प्राकृत भाषा एवं साहित्य के अध्ययन हेतु स्वर्णावसर

बी.एल. इन्स्टीट्यूट द्वारा पिछले छब्बीस वर्षों से ग्रीष्मकालीन प्राकृत भाषा एवं साहित्य के गहन अध्ययन हेतु कार्यशालाओं का आयोजन किया जा रहा है। प्राकृत भाषा एवं साहित्य के शिक्षण की सत्ताईसवीं कार्यशाला 17 मई 2015 से 07 जून 2015 तक आयोजित होने जा रही है। इस कार्यशाला में संस्कृत, प्राकृत, पाली, हिन्दी, भाषाविज्ञान, प्राचीन भारतीय इतिहास एवं संस्कृति तथा इनसे सम्बन्धित प्राच्य विषयों में अच्छे अंकों में स्नातकोत्तर कक्षा उत्तीर्ण विद्यार्थियों, शोधार्थियों एवं अध्यापनरत प्राध्यापक आवेदन कर सकते हैं। संस्थान की वेबसाइट http://blinstitute.org से फार्म एवं जानकारियाँ प्राप्त की जा सकती हैं। आवेदन पत्र की अंतिम तिथि 15 मार्च 2015 है। **सम्पर्क सूत्रः-** (1) प्रो. गयाचरण त्रिपाठी-निदेशक, फोनः 011-27202065 (कार्यालय), 09958808787 (मोबाइल), (2) प्रो. फूलचन्द जैन 'प्रेमी'-निदेशक (शैक्षिक), मोबाइल : 09868883648

मांस-निर्यात तथा उस पर दी जाने वाली सब्सिडी बन्द कराने हेतु अपना विरोध दर्ज करायें

निवेदन है कि सन् 1991-92 से विदेशी मुद्रा अर्जित करने हेतु भारत सरकार की माँस-निर्यात नीति के अन्तर्गत हो रहे मांस निर्यात में अत्यधिक वृद्धि हो रही है। सबसे ज्यादा भैंस का मांस निर्यात किया जा रहा है। मांस निर्यात को प्रोत्साहन देने के लिए मांस ट्रांसपोर्ट इकाई हेतु 25 प्रतिशत अनुदान, प्री-कूलिंग सुविधा पर 25 प्रतिशत अनुदान, वाष्प-ताप ट्रीटमेंट हेतु 50 प्रतिशत अनुदान, कोल्ड स्टोरेज (समुद्री बंदरगाह व एअरपोर्ट) पर100 प्रतिशत अनुदान जैसी कई तरह की सब्सिडी दी जा रही है।

सन् 2011-12 से 2013-14 तक इन तीन वर्षों में 3543883.34 मैट्रिक टन भैंस का मांस निर्यात किया जा चुका है। इसके अलावा बकरी, भेड़ एवं अन्य मांस का भी निर्यात किया जा रहा है और इसको एक बड़े उद्योग के रूप में विकसित किया जा रहा है। जो कि भारतीय संस्कृति पर कलंक है। (ये आंकड़े Ministry of Commerce & Industry, Govt. of India की संस्था Agriculture & Processed food Products Export Development Authority (APEDA) की वेबसाइट http://agriexchange.

apeda.gov.in से लिए गये हैं।)

आँकड़े मेट्रिक टन में

विवरण	2011-12	2012-13	2013-14
भैंस मांस	986618.47	1107506.23	1449758.64
भेड़ एवं बकरी मांस	11181.03	16046.91	22608.94
अन्य मांस	318.34	194.14	255.25
प्रोसेस्ड मांस	575.94	796.93	488.78

जैनाचार्य श्री विजयरत्नसुन्दरसूरीश्वरजी महाराज द्वारा श्री एस.एस. आहलूवालिया, पूर्व सांसद के माध्यम से मांस-निर्यात नीति के पुनरवलोकन हेतु राज्यसभा में याचिका प्रस्तुत की गई, जिसकी सुनवाई राज्यसभा द्वारा गठित समिति के माननीय सदस्यगण द्वारा की गई है एवं उनकी रिपोर्ट संख्या 151 दिनांक 13.2.2014 को राज्यसभा के समक्ष प्रस्तुत की जा चुकी है। इस रिपोर्ट में मांस-निर्यातकों को दी जा रही आर्थिक रियायतों को तुरन्त समाप्त किए जाने की भी सिफारिश की गई अतः आप सभी अहिंसा प्रेमियों से अनुरोध है कि आप अधिक से अधिक संख्या में विरोध दर्ज करायें।

आदरणीय प्रधानमंत्रीजी तक अपना विरोध इस प्रकार दर्ज करा सकते हैं-

1. वेबसाइट www.pmindia.nic.in पर interact with PM पर क्लिक कर रजिस्टर करके ऑनलाइन दर्ज करा सकते हैं।
2. वेबसाइट www.mygov.nic.in पर साईन-अप करके।
3. पत्र व्यवहार द्वारा। पता- श्री नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री-भारत सरकार, साउथ ब्लॉक, राईसिना हिल, नई दिल्ली-110011
4. यदि आपका कोई व्यक्तिगत राजनीतिक सम्पर्क हो तो उसके माध्यम से भी आप अपना विरोध प्रधानमंत्री जी तक पहुँचा सकते हैं।

संक्षिप्त-समाचार

हैदराबाद- शहर के बाहरी इलाके फीसरा गुट्टा में की जा रही खुदाई के दौरान जैन तीर्थंकरों की चौथी या पाँचवीं सदी की 12 प्रतिमाओं का मिलना इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि राष्ट्रकूटों और चालुक्य वंशों के शासनकाल में आंध्र में जैन धर्म अपने चरमोत्कर्ष पर था। ये मूर्तियाँ पंच धातु से निर्मित विभिन्न आकार की हैं। जैन अनुसंधान केन्द्र, हैदराबाद से जुड़े बी.एस. कशाना का मानना है कि निश्चित तौर पर ये प्रतिमाएँ चौथी या पांचवीं शताब्दी की हो सकती हैं, क्योंकि उस समय जैन धर्म समस्त आंध्र में सर्वत्र फैला हुआ था। आंध्र में

उस काल की जैन गुफाएँ-कंदराएँ, मंदिर और मूर्तियाँ पाई जाती हैं। हैदराबाद के निकट पट्टनचेरू उस समय जैन धर्म का गढ़ था।

कोटा- श्री अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन विद्वत् परिषद् (रजि.) के तत्त्वावधान में जिन धर्म प्रभावना समिति, कोटा द्वारा 2-4 अक्टूबर 2014 को आचार्य कुन्दकुन्द का अध्यात्म विषयक मुनि सुधासागर जी के सान्निध्य में त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई। इस संगोष्ठी में कुल आठ सत्रों में आचार्य कुन्दकुन्द साहित्य के विभिन्न विषयों पर आधारित 56 शोधपत्र प्रस्तुत हुए। सत्रों की अध्यक्षता क्रमशः प्रो. रतनचन्द्र जैन, प्रो. फूलचन्द जैन, प्रो. धर्मचन्द जैन, डॉ.जयकुमार जैन, प्रो. शुभचंद्र जैन, प्रो. श्रीयांश सिंघई, डॉ. रमेशचंद जैन ने की। संगोष्ठी का संयोजन श्री अनेकान्तकुमार जैन, दिल्ली एवं श्री नरेन्द्रजी जैन, गाजियाबाद ने किया।

नाकोड़ा तीर्थ- आचार्यश्री पद्मसागरसूरीश्वरजी म.सा. की निश्रा में श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ में 1 दिसम्बर 2014 को 1. पंन्यास श्री देवेन्द्रसागरजी म.सा., 2. पंन्यास श्री हेमचन्द्र सागरजी म.सा., 3. पंन्यास श्री विवेक सागरजी म.सा., 4. पंन्यास श्री अजय सागरजी म.सा. एवं 5. मुनिश्री विमलसागरजी म.सा. आदि पाँच मुनिराजों को आचार्य पद से सुशोभित किया जा रहा है। इसी दिन सूरत शहर में आचार्य श्री योग तिलक सूरिजी के सान्निध्य में 45 मुमुक्षु आत्माओं का सामूहिक दीक्षोत्सव का अभूतपूर्व आयोजन होने जा रहा है।

जयपुर- आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, जयपुर में गत 29 अक्टूबर को आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के 52 वें दीक्षा दिवस पर संस्थान के अधिष्ठाता सहित 42 छात्रों ने सामूहिक एकाशन किये। साथ ही चातुर्मासिक पक्खी पर्व पर रात्रि में सामूहिक संवर भी किया। *-दीपेश जैन, जयपुर*

इन्दौर- भारतीय जैन संगठन के तत्त्वावधान में 15 फरवरी, 2015 को 'विधवा-विधुर, परित्यक्ता' परिचय सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। इस सम्मेलन में 30 वर्ष से अधिक उम्र के वे अविवाहित प्रत्याशी भी भाग ले सकते हैं जो विधवा, विधुर, परित्यक्ता से विवाह के इच्छुक हों। परिचय सम्मेलन के आवेदन पत्र बीजेएस, द्वारा- जैन्स काऊ यूरिन थेरेपी हेल्थ क्लिनिक, 165, आर.एन.टी.मार्ग, (चेतक सेन्टर के सामने), इन्दौर-452001 (मध्यप्रदेश), फोनः 0731-3069116 से प्राप्त किये जा सकते हैं। bjsi2015@gmail.com पर Email कर फार्म प्राप्त कर सकते हैं अथवा वेबसाइट- www.bjsindia.org से फार्म डाउनलोड किया जा सकता है। आवेदन फार्म भरकर प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि 20 जनवरी 2015 है। सम्मेलन में प्रत्याशी के साथ दो अभिभावक भाग ले सकेंगे।

-विनोद छाबड़ा, सचिव

बधाई

जोधपुर- सुश्री (डॉ.) श्वेता जैन सुपुत्री श्रीमती विमलाजी-सायरचन्दजी कोटड़िया को

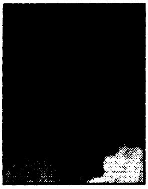

भारतीय दार्शनिक अनुसन्धान परिषद् (ICPR), दिल्ली का जनरल फैलोशिप अवार्ड 2014-16 प्राप्त हुआ है। इसके अन्तर्गत आप 'उपायहृदय का दार्शनिक अनुशीलन' विषय पर डॉ. धर्मचन्द जैन के निर्देशन में शोधकार्य कर रही हैं। आप जिनवाणी पत्रिका की सह-सम्पादक हैं।

जोधपुर- श्रीमती (डॉ.) हेमलता जैन (ललवाणी) धर्मपत्नी श्री विकास जी ललवाणी को

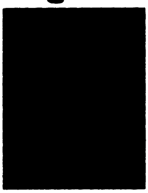

भारतीय दार्शनिक अनुसन्धान परिषद् (ICPR), दिल्ली का जनरल फैलोशिप अवार्ड 2014-16 प्राप्त हुआ है। इसके अन्तर्गत आप 'हरिभद्रसूरिकृत शास्त्रवार्ता समुच्चय और यशोविजय कृत स्याद्वाद कल्पलता टीका के आलोक में शब्दार्थ मीमांसा' विषय पर डॉ. धर्मचन्द जैन के निर्देशन में शोधकार्य कर रही हैं।

अहमदाबाद- श्री दुष्यन्त सुपुत्र श्रीमती अनिता-अशोक जी कुम्भट एवं सुपौत्र श्रीमती चाँदकँवरजी कनकराज जी कुम्भट (जोधपुर निवासी) ने S.V.NIT, सूरत से मैकेनिकल इंजीनियरिंग परीक्षा 9.3 परसेन्टाइल से उत्तीर्ण की है। वर्तमान में आप मारुति सुजुकी में रिसर्च एण्ड डवलपमेन्ट में कार्यरत हैं। आपका सम्पूर्ण परिवार रत्नसंघ के प्रति समर्पित है।

मेड़ता- श्री विक्रम सुपुत्र श्री गणपतराज जी बाघमार एवं सुपौत्र श्री मांगीलाल जी बाघमार ने अन्ना विश्वविद्यालय, चेन्नई से बी.ई. की परीक्षा में सर्वोच्च अंक प्राप्त किए। उन्हें विश्वविद्यालय द्वारा एक लाख रुपये की राशि का पारितोषिक दिया गया।

इन्दौर- सुश्री करिश्मा नरेन्द्र जी जैन ने सम्पूर्ण मध्यप्रदेश में सॉफ्टवेयर इंजीनियरिंग में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। इस उपलब्धि हेतु सुश्री जैन को 6 सितम्बर 2014 को भोपाल में राज्यपाल श्री रामनरेश जी यादव के द्वारा चांसलर स्कालरशिप के रूप में 20000/- रुपये की राशि प्रदान कर सम्मानित किया गया। आप तथा आपके भ्राता कपिल जैन बी.एम.इंजीनियरिंग कॉलेज, इन्दौर में प्रथम स्थान प्राप्तकर इम्पेटस कम्पनी में सॉफ्टवेयर इंजीनियर पद पर कार्यरत हैं।

श्रद्धांजलि

जोधपुर- संघ समर्पित सरलमना, कर्मठ सुश्रावक श्री राजेन्द्र जी कुम्भट का 22 नवम्बर

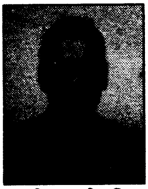
2014 को 61 वर्ष की वय में आकस्मिक देहावसान हो गया। आप उपायुक्त (कस्टम) पद से एक वर्ष पूर्व ही सेवानिवृत्त होकर संघ-सेवा में पूर्णतः समर्पित भाव से सन्नद्ध थे। आपका जीवन सरलता, मधुरता, उदारता आदि सद्गुणों से युक्त था। वे नियमित सामायिक-स्वाध्याय करने वाले चिन्तनशील श्रावक थे। उन्होंने अपने जीवन में अनेक त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण कर रखे थे। संघ की धार्मिक एवं सामाजिक गतिविधियों में वे सदैव सक्रिय रहे। केन्द्रीय सेवा में उच्च पद पर आसीन रहते हुए उन्होंने प्रामाणिकता एवं कर्मठता के उच्च कीर्तिमान स्थापित किए। पूज्य गुरुदेव से प्रेरणा प्राप्त कर उन्होंने सामायिक-स्वाध्याय की आराधना करने के साथ वर्षों तक स्वाध्याय संघ, जोधपुर के माध्यम से पर्युषण सेवाएँ प्रदान कीं। वे श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के सह-संयोजक पद के दायित्व का कुशलतापूर्वक निर्वहन कर रहे थे। सामायिक-स्वाध्याय के प्रचार-प्रसार में भी उनका महत्त्वपूर्ण योगदान प्राप्त हो रहा था। वे सामायिक-स्वाध्याय भवन पावटा में नियमित रूप से पधार कर धर्माराधना में तत्पर रहते थे। सरलता एव समर्पणता के कारण वे सबके प्रिय थे। संत-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में भी वे सदैव तत्पर रहते थे। स्वधर्मी वात्सल्य एवं आतिथ्य-सत्कार में भी कुम्भट परिवार सदैव समर्पित रहा है।

जयपुर- सुश्रावक श्री प्रसन्नमल जी लोढ़ा सुपुत्र स्व. श्री कीरतमल जी लोढ़ा (जोधपुर

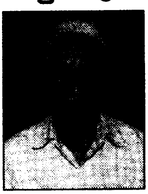
निवासी) का 86 वर्ष की आयु में 10 नवम्बर 2014 को देवलोकगमन हो गया। उन्होंने 35 वर्ष तक ए.जी.ऑफिस जयपुर में कार्यालय अधीक्षक के पद पर कार्य किया। तत्पश्चात् वर्ष 1986 से 2006 तक 20 वर्ष जिनवाणी कार्यालय, जयपुर में कार्यालय प्रबन्धक रूप में अपनी महनीय सेवाएँ दीं। आपके मधुर व्यवहार और सहयोग की भावना से सभी प्रभावित थे। आप प्रतिदिन सामायिक-स्वाध्याय करते थे। आपकी आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी म.सा. के प्रति अनन्य श्रद्धा भक्ति रही तथा वही अटूट श्रद्धा भक्ति आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि संत-सती मण्डल के प्रति रही। आप संत-सती मण्डल की सेवा में सदैव तत्पर रहते थे। मृत्यूपरान्त आपके नेत्र दान किए गए। आप अपने पीछे सुपुत्र अनिल जी लोढ़ा आदि का भरापूरा परिवार छोड़कर गये हैं।

सवाईमाधोपुर- श्रद्धानिष्ठ सुश्राविका श्रीमती अनोखी देवी धर्मपत्नी श्री हरकचन्दजी जैन एण्डवा वाले, आदर्शनगर का 21 सितम्बर 2014 को स्वर्गगमन हो गया। आप नित्य सामायिक एवं स्वाध्याय करती थीं। एकासन, आयम्बिल, उपवास आदि तपस्याएँ आप करती रहती थीं।

सवाईमाधोपुर- सुश्रावक श्री उत्तमचन्दजी जैन,प्रधानाध्यापक का 15 सितम्बर 2014 को

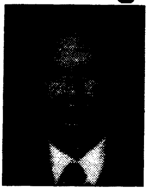

स्वर्गवास हो गया। आप प्रतिदिन परिवार के साथ प्रार्थना व स्वाध्याय करते थे। नवकारसी एवं चौविहार आपके जीवन के अंग थे। आप मधुरभाषी, सरल स्वभावी और सकारात्मक सोच के धनी थे। आप संत-सतियों की सेवा में तथा धार्मिक व सामाजिक कार्यों में हमेशा अग्रसर रहे।

दिल्ली- संघसेवी, संघ-समर्पित श्रावकरत्न श्री पदमचन्द जी जैन (चौरड़िया) का 6 नवम्बर 2014 को समाधिमरण हो गया। अध्यापक होने के नाते आपने अपने सरलता, मधुरता, उदारता आदि गुणों से बालकों के जीवन को सुवासित किया। आप संत-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति व पठन-पाठन में सदैव तत्पर रहते थे। आप नियमित सामायिक, स्वाध्याय एवं रात्रि चौविहार-त्याग का पालन करते थे। आप कई धार्मिक एवं सामाजिक गतिविधियों से जुड़े हुए थे।

टोंक- सरल स्वभावी, सुश्राविका श्रीमती सरोजबाई जी दासोत धर्मपत्नी श्री रतनचन्द जी

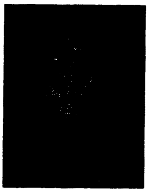

दासोत का 12 अक्टूबर 2014 को देवलोकगमन हो गया। उपवास, आयम्बिल, एकासन आदि तप के द्वारा आप अपने जीवन में धार्मिक संस्कारों को पुष्ट करती रहती थीं। आप अपने पीछे धर्मनिष्ठ परिवार छोड़कर गई हैं। आपके सुपुत्र श्री राजीव जी दासोत भारतीय पुलिस सेवा में उच्च पद पर शोभित हैं।

चौरू- तपसाधिका सुश्राविका श्रीमती रतनबाई जी धर्मपत्नी श्री नेमीचन्द जी जैन का 75

वर्ष की आयु में 3 नवम्बर 2014 को समाधिपूर्वक मरण हो गया। आपने पूरा जीवन जप, तप, त्याग व संयमपूर्वक व्यतीत किया। आपने आयम्बिल, उपवास, तेला, बेला, आठ, नौ, ग्यारस उपवास व ओलीजी की तपस्या अनेक बार सम्पन्न की। आपके विगत 20 वर्षों से शीलव्रत के प्रत्याख्यान थे। आप संत-सतियों के दर्शन, सेवा एवं प्रवचन-श्रवण आदि कार्यों में सदैव तत्पर रहती थीं।

जयपुर- संतसेवी श्रद्धानिष्ठ सुश्राविका श्रीमती रतनदेवीजी धर्मसहायिका स्व. श्री नौरतनमलजी जैन का स्वर्गवास 3 नवम्बर 2014 को हो गया। आपका जीवन सहज, सरल एवं सादगी जैसे अनेक गुणों से ओतप्रोत था। आप देव, गुरु व धर्म के प्रति पूर्णतः समर्पित थीं। संत-सतियों की सेवा में भी आप सदैव अग्रणी रहती थीं। आपके जीवन पर रत्नसंघ के सभी संत-सती वर्ग का विशेष प्रभाव था।

चिखली (गुजरात)- युवारत्न सुश्रावक श्री श्रेयांसकुमार जी समदड़िया का 21 वर्ष की

अल्पायु में आकस्मिक देहावसान हो गया। आप नियमित साधना-आराधना करने का लक्ष्य रखते थे। नवकार मंत्र का जाप आपका नित्यक्रम था। आपका पूरा परिवार संघ-सेवा में अग्रणी रहा है। आपके पूज्य पिताजी राकेश जी समदड़िया स्वाध्याय संघ के वरिष्ठ स्वाध्यायी होने के साथ गुजरात शाखा के प्रभारी भी हैं। रत्नसंघ द्वारा संचालित सभी संस्थाओं की गतिविधियों में भी आपकी सक्रिय सेवाएँ प्राप्त होती रहती हैं।

जोधपुर- श्रीमती सिरेकंवरजी मेहता धर्मपत्नी स्व. श्री भभूतराज जी मेहता का 90 वर्ष की वय में 15 अक्टूबर 2014 को स्वर्गवास हो गया। आपका जीवन सहज, सरल एवं सादगी जैसे अनेक गुणों से ओतप्रोत था। संत-सतियों की सेवा में भी आप सदैव अग्रणी रहती थीं।

पीपाड़ सिटी- धर्मानुरागी सुश्राविका श्रीमती इचरजदेवीजी धर्मपत्नी श्री प्यारेलाल जी गुन्देचा का 84 वर्ष की वय में 22 अक्टूबर 2014 को मुम्बई में स्वर्गवास हो गया। आपका जीवन सहज, सरल एवं धर्म के प्रति पूर्णतः श्रद्धानिष्ठ था।

मोडक (कोटा)- सेवाभावी सुश्रावक श्री कन्हैयालाल जी जैन सुपुत्र स्व. श्री चौथमल जी जैन (मोडक वालों) का 64 वर्ष की वय में स्वर्गवास हो गया। आप देव, गुरु एवं धर्म के प्रति श्रद्धावान् एवं समर्पित थे। आप प्रतिदिन सामायिक एवं स्वाध्याय करते थे। आपने रात्रिभोजन-त्याग एवं आजीवन शीलव्रत के नियम ले रखे थे।

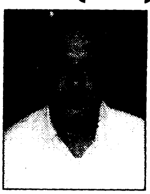

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी-परिवार तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

जिनवाणी के रात्रिभोजन-विरति (1) अंक पर विद्वत्प्रतिक्रिया

जिनवाणी पत्रिका मैं कई वर्षों से नियमित रूप से पढ़ रहा हूँ। सभी लेखों को रुचिपूर्वक पढ़ता हूँ। इसमें विभिन्न स्तम्भ एवं शोधालेख रहते हैं तथा अंग्रेजी में भी आलेख प्रकाशित होते हैं। समाज के हर वर्ग के लिए यह पत्रिका उपयोगी है। अहिंसा एवं जैनधर्म के प्रचार के लिए यह पत्रिका सर्वोत्कृष्ट माध्यम है। अभी जिनवाणी, नवम्बर 2014 का अंक पढ़ा। रात्रिभोजन-त्याग पर इतनी विशद चर्चा मुझे पहले कहीं देखने को नहीं मिली। यह पत्रिका जैन धर्म की पहचान के लिए सर्वोत्कृष्ट साधन है एवं उत्तम कार्य कर रही है। हार्दिक बधाई। *-प्रोफेसर कमलचन्द सोगाणी, जयपुर (11.11.2014)*

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

4000/- सत्साहित्य की आजीवन-सदस्यता (अधिकतम 20 वर्ष) हेतु प्रत्येक

771 श्री रिखबचन्दजी सोनी, गंजखेरली-अलवर (राजस्थान)

1000/-जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता(अधिकतम 20 वर्ष)

क्रम संख्या 15350 से 15368 तक 19 सदस्य बने।

'जिनवाणी' मासिक पत्रिका हेतु साभार प्राप्त

3521/- श्रीमती आस्थाजी, श्रीमती अल्फाजी एवं श्रीमती आकांक्षाजी, जोधपुर, अपने माता-पिता श्रीमती मंजूश्रीजी एवं श्री गणपतजी सुराणा (सुपुत्र स्व.श्रीमती लाडकंवरजी एवं स्व. श्री उम्मेदमलजी सुराणा), जोधपुर के विवाह की 35 वीं वर्षगांठ 24 नवम्बर 2014 के प्रसंग पर।

2100/- श्रीमती कंचनजी कुम्भट, जोधपुर, श्री राजेन्द्र जी कुम्भट (सह-संयोजक स्वाध्याय संघ) का 22 नवम्बर, 2014 को स्वर्गवास होने पर उनकी पावन स्मृति में।

2100/- श्रीमती सोहनी बाईजी समदड़िया, बैल्लेचरी-चेन्नई।

2100/- श्री धनरूपचन्दजी, अमितजी मेहता, बेंगलुरू।

2100/- श्री कुशलचन्दजी खिंवसरा, जयपुर, अपने पौत्र चि. मोहितजी सुपुत्र श्री महेन्द्रजी खिंवसरा के शुभविवाह के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

2100/- श्री हुक्मीचन्दजी, संतोष कुमारजी, विपुलजी डोसी, बेंगलुरू, स्व. श्री विनोद कुमारजी सुपुत्र श्रीमती मदनकँवरजी-हुक्मीचन्दजी डोसी की तृतीय पुण्य स्मृति 16 नवम्बर 2014 के उपलक्ष्य में।

2100/- श्री राजीवजी दासोत, टोंक, स्व. श्रीमती सरोजबाईजी धर्मपत्नी स्व. श्री रत्नचन्दजी दासोत की पुण्यस्मृति में।

1665/- श्री महेन्द्रमलजी सुपुत्र श्री मनमोहनमलजी गांग, सूरत (जोधपुर वाले) स्वयं के एवं श्रीमती स्वातिजी धर्मपत्नी श्री अनुपमजी गांग (यू.एस.ए.), श्रीमती प्रियदर्शिनीजी धर्मपत्नी श्री अभिषेक जी गांग (मुम्बई) के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में।

1121/- श्रीमती उम्मेदकुँवरजी मेहता, माहारानी फॉर्म-जयपुर, पूज्य श्री नरपतराजजी मेहता की 14वीं पुण्यतिथि पर स्मरणाञ्जलि स्वरूप।

1111/- श्री उच्छबराजजी एवं श्रीमती विजयाजी मेहता, जोधपुर, माताश्री श्रीमती सिरेकंवरजी मेहता धर्मपत्नी स्व. श्री भभूतराजजी मेहता का 15 अक्टूबर 2014 को स्वर्गवास होने पर उनकी पुण्यस्मृति में।

1101/- डॉ. चन्दनबालाजी, जोधपुर, पिताश्री जौहरीमल जी संखलेचा के जन्मदिवस (30

नवम्बर) के अवसर पर स्मरणांजलि स्वरूप।

1101/- श्री महावीर कुमारजी, पदम कुमारजी पोरवाल, नैनवा-बूंदी, पूज्य पिताश्री बड़ीलालजी पोरवाल का स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्यस्मृति में।

1101/- श्री फूलचन्दजी, मिलापचन्दजी जैन, चौथ का बरवाड़ा, चि. उपेशजी के शुभविवाह के उपलक्ष्य में।

1101/- श्री महावीर प्रसादजी, योगेन्द्र कुमारजी जैन (देवली वाले), सवाईमाधोपुर, चि. धर्मेन्द्र के शुभविवाह के उपलक्ष्य में।

1101/- श्री डिग्गी प्रसादजी, महावीर प्रसादजी जैन (करेला वाले), सवाईमाधोपुर, चि. पवनजी जैन के शुभविवाह के उपलक्ष्य में।

1101/- श्री महेन्द्र कुमारजी जैन (रामपुरा वाले), सवाईमाधोपुर के पंचायत प्रसार अधिकारी के पद पर पदोन्नति एवं सेवानिवृत्ति के उपलक्ष्य में।

1100/- श्रीमती विमलाजी-श्री सायरचन्दजी, श्रीमती शर्मिलाजी-श्री सतीशजी, करुणेशजी, जिनांशजी कोटड़िया, जोधपुर, सुश्री डॉ. श्वेताजी जैन, सह सम्पादक, जिनवाणी को **I.C.P.R.**, दिल्ली की जनरल फैलोशिप प्राप्त होने के शुभ प्रसंग पर।

1100/- वैद्य श्री ऋषभचन्दजी श्रीमती मिथलेशजी जैन, भरतपुर, आजीवन शीलव्रत ग्रहण करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री महावीर प्रसादजी, योगेन्द्र कुमारजी (देवली वाले), श्रीमती रत्नप्रभाजी की पुण्य स्मृति के प्रसंग पर।

1100/- श्री रूपचन्दजी, प्रेमचन्दजी जैन, कोटा, पूज्य पिताश्री श्री दुलीचन्दजी जैन की पुण्यस्मृति में।

1100/- श्री अनिल कुमारजी लोढ़ा (जोधपुर वाले), मालवीय नगर-जयपुर, पूज्य पिताश्री श्री प्रसन्नमलजी लोढ़ा सुपुत्र स्व. श्री कीरतमलजी लोढ़ा का 10 नवम्बर 2014 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्यस्मृति में।

1100/- श्री हरकचन्दजी जैन (एण्डवा वाले), सवाईमाधोपुर, श्रीमती अनोखीदेवीजी जैन का 21 सितम्बर 2014 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्यस्मृति में।

अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर को साभार प्राप्त

1121/- श्रीमती प्रेमलताजी सोहनलालजी जीरावला, जोधपुर, चातुर्मासावधि में 121 एकाशन करने के उपलक्ष्य में जीवदया हेतु।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर हेतु साभार प्राप्त

2100/- अमृतकंवर कल्याणमल चोरडिया ट्रस्ट, चेन्नई।

2100/- श्रीमती कंचनजी कुम्भट, जोधपुर, श्री राजेन्द्र जी कुम्भट (सह-संयोजक स्वाध्याय संघ) का 22 नवम्बर, 2014 को स्वर्गवास होने पर उनकी पावन स्मृति में।

2000/- वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, पारसोली।

1100/- श्रीमती धर्मवती जी मुणोत, जयपुर, प्रदौहित्र के जन्मोत्सव प्रसंग पर।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के सत्साहित्य के लिए अर्थसहयोग

40000/- श्रीमती विमलाजी चोरड़िया, चेन्नई, सुश्रावक स्व. श्री सायरमलजी एवं सुश्राविका श्रीमती वल्लभकँवरजी चोरड़िया की पुण्यस्मृति में पुस्तक "महान् अध्यात्म योगी आचार्य श्री हस्ती" के मुद्रण हेतु अर्थसहयोग।

श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जयपुर हेतु साभार

41000/- श्रीमती राजदुलारी जी सेठ धर्मपत्नी श्री भागचन्द जी सेठ, जयपुर, सुपौत्री अलिशा (सुपुत्री श्रीमती सीमाजी-श्री हेमेशजी सेठ) संग श्री सुकुन जी बोथरा के 3 नवम्बर 2014 को सम्पन्न विवाह के उपलक्ष्य में।

11000/- श्रीमती कमलाजी लोढ़ा धर्मपत्नी डॉ. पी.एस. लोढ़ा, जयपुर, अपने सुपुत्र श्री अर्पितजी-श्रीमती निधिजी के पुत्र जन्म के उपलक्ष्य पर।

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना
(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित)
दानदाता एवं दान एकत्रित करने वालों की सूची

500000/- श्री हरीश जी कवाड़, चेन्नई।

12000/- श्रीमती प्रेमलताजी, सोहनलालजी, महावीरचन्दजी, अनिल जी बोथरा, जलगांव-(भोपालगढ़ निवासी)।

11000/- श्री सुभाषजी, विमलकुमारजी, गौरव जी जैन, भरतपुर।

छात्रवृत्ति-योजना में इच्छुक दानदाता एक छात्र के लिए 12000/- रु. अथवा उनके गुणक में जितनी छात्रवृत्तियाँ देना चाहें तदनुसार दानराशि 'गजेन्द्र निधि आचार्य श्री हस्ती स्कॉलर शिप फण्ड' योजना के नाम चैक या ड्राफ्ट(Donations to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of IncomeTax Act 1961) से निम्नांकित पते पर भेजने का कष्ट करें- ***Sh. B. Budhmal Bohra**, Poojaa Foundation, W-570, Park Road, Annanagar West Extn., Chennai-600101 (Mob. 9543068382)*

आगामी पर्व

पौष कृष्ण 8 रविवार	**14.12.2014**	**अष्टमी**
पौष कृष्ण 8 सोमवार	**15.12.2014**	**अष्टमी**
पौष कृष्ण 10 बुधवार	**17.12.2014**	**भगवान पार्श्वनाथ जन्म-कल्याणक**
पौष कृष्ण 14 रविवार	**21.12.2014**	**चतुर्दशी, पक्खी**
पौष शुक्ला 8 सोमवार	**29.12.2014**	**अष्टमी**
पौष शुक्ला 14 रविवार	**04.01.2015**	**चतुर्दशी, पक्खी, आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी म.सा. का 105 वाँ जन्मदिवस।**
माघ कृष्ण 4 शुक्रवार	**09.01.2015**	**उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. का 81 वाँ जन्मदिवस।**
माघ कृष्ण 8 मंगलवार	**13.01.2015**	**अष्टमी**
माघ कृष्ण 14 सोमवार	**19.01.2015**	**चतुर्दशी, पक्खी**
माघ शुक्ल 2 गुरुवार	**22.01.2015**	**आचार्य भगवन्त हस्तीमल जी म.सा. का 95 वाँ दीक्षा दिवस।**

अलविदा बाईपास सर्जरी

अब बाईपास सर्जरी के बारे में कभी ना सोचियें

काउन्टर पलसेशन थैरेपी

(ई.ई.सी.पी.)

द्वारा प्राकृतिक बाईपास करवायें

काउन्टर पलसेशन थैरेपी (ई.ई.सी.पी.) में क्या होता हैं :-

हृदय रोगी को साधारणतया 35 दिन तक प्रतिदिन एक घंटे की थैरेपी ई.ई.सी.पी. मशीन जो कि एफ.डी.ए., अमेरिका द्वारा मान्यता प्राप्त है, पर दी जाती है । यह थैरेपी ई.ई.सी.पी. मशीन के विशेष प्रकार के बिस्तर पर रोगी को लिटाकर दी जाती है। तीन बड़े हवा से फूलने वाले कफ पैड जो ब्लड प्रेशर उपकरण के कफ पैड की तरह के होते हैं, उन्हें रोगी की पिंडलियों, जांघ एवं कमर के निचले हिस्से पर बाँधा जाता है एवम् इन कफ पैड के इनफ्लेशन एवम् डिफ्लेशन की क्रिया को मशीन से जुड़े कम्प्यूटर द्वारा निर्देशित किया जाता है। इस सारी प्रक्रिया का इलेक्ट्रोकार्डियोग्राफ मशीन के पर्दे पर अवलोकन किया जाता है। मशीन पर उपचार के दौरान कफ पैड के फैलने पर रक्त पूर्ण दबाव से हृदय की ओर जाता है एवं इस दबाव के कारण हृदय के पास सुप्त पड़ी धमनियों में रक्त तीव्र गति से प्रवाहित होकर इन धमनियों को क्रियाशील कर देता है व हृदय को प्रयाप्त मात्रा में रक्त मिलने से व्यक्ति को एन्जिना दर्द (छाती दर्द) नहीं होता हैं। 35 दिन तक यह थैरेपी लेने से हृदय के पास सुप्त पड़ी धमनियाँ स्थायी रूप से खुल जाती है और छोटी-छोटी धमनियां आपस में जुड़कर नई धमनियों का निर्माण करती हैं।

श्रीमती गुलाब कुम्भट मेमोरियल चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित

समर्पण हार्ट एण्ड हैल्थ केयर सेन्टर

ए – 12, इण्डस्ट्रीयल एस्टेट, उद्योग भवन के पास, न्यू पावर हाऊस रोड, जोधपुर (राज.)
Email : samarpanjodhpur@gmail.com

फोन : 2432525
सम्पर्क : धिरेन्द्र कुम्भट
93147 14030

卐 चारित्र आत्माओं के लिए ट्रस्ट द्वारा निःशुल्क उपचार 卐

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

क्रोध पर विजय प्राप्त करनी हो तो क्षमा धारण करें।

– आचार्यश्री हस्ती

जोधपुर में प्लॉट, मकान, जमीन, फार्म हाउस खरीदने व बेचने हेतु सम्पर्क करें।

पद्‌मावती

डेवलपर्स एण्ड प्रोपर्टीज

महावीर बोथरा
09828582391

नरेश बोथरा
09414100257

292, सनसिटी हॉस्पिटल के पीछे, पावटा, जोधपुर 342001 (राज.)
फोन नं. : 0291-2556767

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

अंतर में सच्चाई चाहिए और व्यवहार में सफाई चाहिए, वही प्राणी संसार में अपना आत्म हित कर जगत के सामने आदर्श रख सकता है ।

- आचार्य श्री हीरा

C/o CHANANMUL UMEDRAJ
BAGHMAR MOTOR FINANCE
S. SAMPATRAJ FINANCIERS
S. RAJAN FINANCIERS

218, Ashoka Road, Lashkar Mohalla,
Mysore-570001 (Karanataka)

With Best Compliments from :

C. Sohanlal Budhraj Sampathraj Rajan
Abhishek, Rohith, Saurav, Akhilesh Baghmar

Tel. : 821-4265431, 2446407 (O)
Mo. : 9845126407 (B), 9845580407 (S), 9845113334 (R)

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

सामायिक वह महती साधना है, जिसके द्वारा जन्म-जन्मान्तरों के संचित कर्म-मल को नष्ट किया जा सकता है।

BALAJI AUTOS

(Mahindra & Mahindra Dealers)
618, 619, Old No. 224, C.T.H. Road
Padi, Mannurpet, Chennai - 600050
Phone : 044-26245855/56

BALAJI HONDA

(Honda Two Wheelers Dealers)
570, T.H. Road, Old Washermenpet, Chennai - 600021
Phone : 044-45985577/88
Mobile : 9940051841, 9444068666

BALAJI MOTORS

(Royal Enfield Dealers)
138, T.H. Road, Tondiarpet, Chennai - 600081
Maturachaiya Shelters,
Annanagar
Mobile : 9884219949

BHAGWAN CARS

Chennai - 600053
Phone : 044-26243455/66

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

With Best Compliments from :

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

Parasmal Suresh Kumar Kothari

Dhapi Nivas, 23, Vadamalai Street,
Sowcarpet, Chennai - 600079
Phone : 044-25294466/25292727

Gurudev

SURANA™

yes, the best TMT RE-BARS

DRI Plant

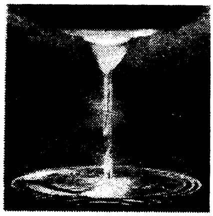
Electric Arc Furnace

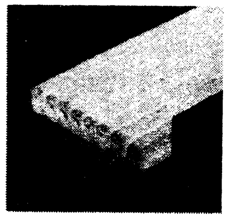
Billets

Rolling Mill

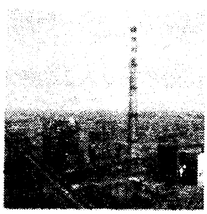
Captive Power Plant

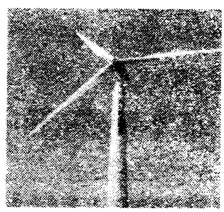
Windmill

With best wishes from

ISO 9001-2008

SURANA INDUSTRIES LIMITED

INTEGRATED STEEL PLANT

MANUFACTURE OF TMT BARS AND ALL KIND OF ALLOY STEEL

29, Whites Road, II Floor, Royapettah, Chennai 600 014/ Ph : 044-28525127 (3 lines) 28525596. Fax: 044-28521143

Email: steelmktg@suranaind.com / www.surana.org.in

STEEL I POWER I MINING

।। श्री महावीराय नमः ।।

हस्ती-हीरा जय जय ! हीरा-मान जय जय !

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का।।

अखण्ड बाल ब्रह्मचारी चारित्र चूड़ामणि, भक्तों के भगवान् 1008
श्री हस्तीमल जी म.सा. के चरणों में हृदय की असीम आस्था से समर्पण
उनके अनमोल खजाने के हीरे-मोती जन-जन के तारणहार
पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.,
पण्डित रत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा.
एवं समस्त

रत्नाधिक साधु साध्वी मण्डल

के चरण कमलों में भावभरा कोटिशः वन्दन एवं समर्पण...

OUR HUMBLE SALUTATIONS TO THE MOST NOBLE SOULS

PRITHIVIRAJ PREM KUMAR KAVAD
690, Trunk Road, Poonamallee, Chennai - 600 056
Ph. 044-26272196 Mob. : 93810-07273

MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD
GURU HASTI THANGA MAALIGAI
(JEWELLERS & BANKERS)
5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. : 044-26272609 Mob. : 95-00-11-44-55

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

प्यास बुझाये, कर्म कटाये
फिर क्यों न अपनायें
धोवन पानी

Narendra Hirawat & Co.

Flat No. 1, Building No. 2, Navjeevan Society,
Senapati Bapat Marg, Matunga (West), MUMBAI-400 016

Trin-Trin

Matunga Office : 022-24370713, 24380713, 66669707
Opera House Office : 022-23669818
Mobile : 09821040899

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्

।। पूण्यार्जन का सुनहरा अवसर ।।

सदस्यता अभियान से जुड़िये, गुरु भाईयों की शिक्षा में सहयोग करिये।

आदरणीय रत्नबंधुवर,

छात्रवृत्ति योजना संघ की महत्त्वपूर्ण योजनाओं में से एक योजना है, अब इस योजना की निरन्तरता के लिए समिति पदाधिकारियों ने निर्णय लिया है कि छात्रवृत्ति योजना में अर्थसहयोग के लिए सदस्यता अभियान प्रारम्भ किया जायेगा, जिसमें सदस्यों द्वारा प्रतिवर्ष अर्थसहयोग किया जायेगा। सदस्यता अभियान का प्रारूप इस प्रकार है –

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

सदस्यता अभियान

हीरक स्तम्भ सदस्य	स्वर्ण स्तम्भ सदस्य	रजत स्तम्भ सदस्य
(5 लाख रुपये प्रति वर्ष)	(1 लाख रुपये प्रति वर्ष)	(50 हजार रुपये प्रति वर्ष)

नोट–सदस्यता को ग्रहण करने वाले सभी सदस्यों का नाम जिनवाणी पत्रिका में प्रति माह प्रकाशित किया जायेगा।

जो भी अनन्य गुरुभक्त योजना में अर्थ सहयोग करके सदस्यता ग्रहण करना चाहते हैं एवं एक छात्र के लिए 12000/- रुपये अथवा उनके गुणक में छात्रवृत्ति राशि का सहयोग करने के लिए चैक, ड्राफ्ट या नकद राशि द्वारा जमा या भेज सकते हैं। कोष का खाता विवरण इस प्रकार है –

A/c Name- Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund
A/c No. 168010100120722
Bank Name & Address – AXIS BANK LTD. Anna Salai,Chennai(TN) IFSC Code – UTIB0000168
PAN No. – AAATG1995J
Note- Donation to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of Income Tax Act 1961.

छात्रवृत्ति योजना में सदस्यता अभियान के सदस्य बनकर योजना की निरन्तरता को बनायें रखने में अपना अमूल्य योगदान कर पूण्यार्जन किया, ऐसे संघनिष्ठ, श्रेष्ठीवर्यों के नामों की सूची –

हीरक स्तम्भ सदस्य (5 लाख रुपये प्रति वर्ष)	स्वर्ण स्तम्भ सदस्य (1 लाख रुपये प्रति वर्ष)	रजत स्तम्भ सदस्य (50 हजार रुपये प्रति वर्ष)
श्रीमान् मोफतराज जी मुणोत, मुम्बई।	श्रीमान् राजीव जी डागा, ह्यूस्टन।	श्रीमान् गणपतजी हेमन्तजी बाघमार, चैन्नई।
युवारत्न श्री हरीशजी कवाड़, चैन्नई।	श्रीमती नीता जी डागा, ह्यूस्टन।	
	श्रीमान् दूलीचंद बाघमार एण्ड संस,चैन्नई।	
	श्रीमान् लक्ष्मीमल जी लोढ़ा,जोधपुर।	
	श्रीमान् दलीचंद जी सुरेशजी कवाड़, पून्नामल्लई।	
	गुप्त सहयोगी, चैन्नई।	
	श्रीमान् प्रेम जी कवाड़, चैन्नई।	
	श्रीमान् राजेशजी विमलजी पवनजी बोहरा, चैन्नई।	

सहयोग के लिए चैक या ड्राफ्ट कार्यालय के इस पते पर भेजें–

B.Budhmal Bohra - Poojaa Foundation, W-570, Park Road,Annanagar West Extn.,**CHENNAI-600101** (TN)

छात्रवृत्ति योजना से संबंधित जानकारी के लिए सम्पर्क करें– मनीष जैन, चैन्नई **(Mob.095430 68382)**

जय गुरु हस्ती

जय गुरु हीरा जय गुरु मान

अगर व्यक्ति प्रभु के मार्ग पर चले तो कहीं भी अशान्ति नहीं हो सकती।
- आचार्य श्री हीरा

सांखला परिवार की ओर से निवेदन

हम :

चौबीसों तीर्थंकरों के चरण
कमलों पर मस्तक रखते हैं
और
विनम्रता तथा गौरव के साथ
जाहिर करते हैं कि
"जिनवाणी" के
उत्कर्षदायी तथा पुण्यात्मक कार्यों में
हमारा सहर्ष
सदैव सहकार रहेगा।

मदन मोहन सांखला,
सौ. हेमलता मदन सांखला
मेहुल मदन सांखला
सौ. प्रणिता मेहुल सांखला और
बेबी बुणम मेहुल सांखला

MAXHEAL Group of Companies

Jai Guru Heera Jai Guru Hasti Jai Guru Maan

शाश्वत सुख के लिए प्रतिपल प्रयत्न करने वाले जीव मुमुक्षु कहलाते हैं। ये जीव साधक भी हो सकते है और श्रावक भी ।

- आचार्य श्री हीरा

BHANSALI GROUP

Dhanpatraj V. Bhansali

BHANSALI DEVELOPERS

Sharda Bhawan, 2nd Floor, Nandapatkar Road,
Vile Parle (E), Mumbai - 400 057
Tel. : (O) 26185801 / 32940462
E-MAIL : bhansalidevelopers@yahoo.com

धर्म मानव-जीवन के लिए उतना
ही आवश्यक है, जितना वायु सेवन।

- आचार्य हस्ती

समाज व राष्ट्र में मांसाहार के
विरोध में प्रबल आवाज उठाएँ।
मरने वाले जानवरों को अपनी अर्जित
कमाई से बचाने के लिए सक्रिय बनें।

- आचार्य हीरा

आत्मा में स्वभाव से ज्ञान रहा हुआ है।
उसे प्रकट करने वाला स्वाध्यायी है।
स्वाध्यायी ही साधना करता है।

- उपाध्याय मान

विज्ञापन सौजन्य गुप्तदानी

आर.एन.आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-21/2012-14
मुद्रण तिथि दिनांक 5 से 8 दिसम्बर, 2014
वर्ष : 72 ★ अंक : 12 ★ मूल्य : 10 रु.
डाक प्रेषण तिथि 10 दिसम्बर, 2014 ★ पौष, 2071

Kalpataru
AURA

• Awarded Best Architecture (Multiple Units) at Asia Pacific Property Awards 2010 • A complex of multi-storeyed buildings • Luxurious 2 BHK & E3 homes • Two clubhouses with gymnasium, squash, half-basketball and tennis courts • Mini-theatre • Yoga room • Swimming pool • Multi-functional room • Spa • Landscaped garden and children's play area • Safety and security features

KALPA-TARU®

Site Address: LBS Marg, Ghatkopar (West), Mumbai - 400 086.
Head Office: 101, Kalpataru Synergy, Opp. Grand Hyatt, Santacruz (East), Mumbai - 400 055.
Tel.: 022-3064 3065 • **Fax:** 022-3064 3131
Email: sales@kalpataru.com • **Visit:** www.kalpataru.com

All specifications, designs, facilities, dimensions, etc. are subject to the approval of the respective authorities and the developers reserve the right to change the specifications or features without any notice or obligation. Images are for representative purposes only. All project elevations are an artistic design. Conditions apply.

Kalpataru Limited is proposing, subject to market conditions and other considerations, to make a public issue of securities and has filed a Draft Red Herring Prospectus ("DRHP") with the Securities and Exchange Board of India (SEBI). The DRHP is available on the website of SEBI at www.sebi.gov.in and the respective websites of the Book Running Lead Managers at www.morganstanley.com/indiaofferdocuments, www.online.citibank.co.in/rhtm/citigroupglobalscreen1.htm, www.csinga.com, www.icicisecurities.com, www.nomura.com/asia/services/capital_raising/equity.shtml, www.idfccapital.com. Investors should note that investment in equity shares involves a high degree of risk and for details relating to the same, see 'Risk Factors' in the aforementioned offer documents. This communication is not for publication or distribution to persons in the United States, and is not an offer for sale within the United States of any equity shares or any other security of Kalpataru Limited. Securities of Kalpataru Limited, including its equity shares, may not be offered or sold in the United States absent registration under U.S. securities laws or unless exempt from registration under such laws.

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक - विनय चन्द डागा द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित व सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.) से प्रकाशित। सम्पादक-डॉ. धर्मचन्द जैन